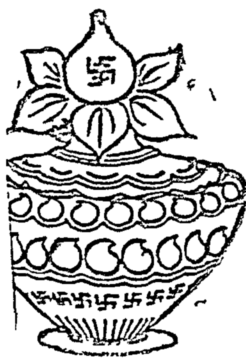
के आवश्यक उपकरण



2 आसन, 4 घा
2 गरम काबलो,
1 ग्लास पूंछने का
1 गरम मोटा कबल

एव फालना, जालोर, नाकोडा, बालोत



तइय पुप्फ

णमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ णायपुत्त-महावीरस्स

चरिमतित्थयरणायपुत्तमहावीरस्स पंचमगणहर-
सुहम्मायरियविरइय

सुत्तागमे

तत्थ णं

सूयगडे

२

संवायग

णायपुत्त-महावीरजइणसंघाणुआई-लद्धयम-पुप्फ भिक्खु

पकाशिका

श्रीसूत्रागमप्रकाशकसमिति, जैनस्थानक, रेल्वेरोड,
गुडगाँव-छावणी (पूर्वपंजाब)

वीरसंवत् २४७८ } विक्रमाब्द २००७ { क्राइष्ट सन् १९५१

बाबू रामलाल जैन, मंत्री.

निर्णयसागर प्रेस, मुंबई नं. २

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnayasagar Press, 26-28, Kolbhat street, Bombay

सूयणा

सूयगडमेयमम्हमायरियाणमकुव्व सुयणंसुरहबोहणअण्णाणमोहतिमिरभरहरणध-म्मुज्जोयकरणेक्कतिच्छाणऽसंतावकराणममिव्व उग्गतवतेयदित्ताणऽसव्वभक्खीण ससहरुव्व विबुहजणमणचओराणममदाणददायगभव्वहियकेरवविकासगाणं नियसि-यजसजुण्हाधवलियदियतराणमण्णउत्थियचक्कविहडणपयडमहप्पाणं पावकलंककला-णाविमुक्काण मयरहरुव्व गंभीरिमामेराणाणचरणाइनिम्मलगुणरयणागरियाणं, किंतु पयइखारत्तपरिचत्ताण मरालुव्व परगुणखीरगहणदोसंबुविवज्जणवियक्खणाणं अहिव्व धीरिमापडिहत्थाणमजडमडेण व्व व अणप्पकुवियप्पसंकप्पसुण्णाणं अमरसमणुप-त्ताणं सिरि १०८ अज्जपरमपुज्जवदणिज्जाण ४ फकीरचंदमहापुरिसाणं धार-णाववहाराणुसारं विज्जइ, जइ दिट्ठिमुद्दणदोसत्तो वा कत्थ वि कावि असुद्धी हुज्ज सोहिज्जउ पेसिज्जउ अस्सोवरिससम्मई इमस्स मज्झायं कहु बुहा गिरावाइं सुद्ध पाउणतु त्ति बेइ। गुरुचलणसयवत्तरसाऊ, पुप्फभिक्खु

णायसाहिच्चविसारयस्स मुणिपुक्खरस्स सम्मई

सुहरूवेण दिट्ठ मए पुत्थय, भिक्खुणा पुप्फनामेण सवाइयं, भवजलहितरणिं गयकुम्भइलयसूरणे, वजडडुव्वैपरवाडधरचूरणे, कूवअण्णाणपडियाणहत्थावलं-वणं पाववणडहणडहणुव्व ज १ कम्मरिउहिं भिडत्ताण मण्णाहमिव, सुत्तपासायचडणत्थ-सोवाणमिव, मोक्खमग्गे पयट्टाणपाहेज्जमिव, णाणतिसियाण ण उहरपेज्जमिव २ भिंडं दव चवल्मणकरेणिरोहे अल, ण जयव्वाहिलुग्गाण महुरोसहं, वाइमयमेह-पडिसेहणे वाऊ ण, दाही साहेज्जमित्त व अब्भासिणं ३ दुहजलणउल्हवणमेहु सत्थोहु ण, दीहससारक्तारनित्थारणे, गिम्भदिनमणिण तत्तहं विडविसीयच्छायऽज्जत्तखुहि-यहं सुभोज्जं व हरिही अवाय ॥४॥ हिययकुमुयवोसट्टिही मइसिंधुपरिवड्ढिही, पुण्णि-मससिपुंरत्थयमिण, जो निच्चलमणुपढिही ॥ ५ ॥ णायसाहिच्चतित्थाइपयवीधरें, पेसिया सम्मई इय मुणीपुक्खरें, सादडीनामधेज्जाओ णयरा इमा, भैयगयणवोमणेत्तम्मि सवच्छरे ॥ माहसियपक्खबीयाए दियहे बुहे सक्कया पाइए मइ समणुवाइया ॥ ७ ॥

सूचना

यह प्रकाशन मेरे धर्म्माचार्य, साधुकुलशिरोमणि, श्री १०८ श्री श्री श्री फकीर-चन्द्रजी महाराज (स्वर्गीय) के धारणा व्यवहारके अनुसार है। यदि कोई दृष्टिदोष रह गया है तो सुधारकर पढें। ३२ आगम इसी प्रकार एक पुस्तकाकारमें प्रकाशित हो रहे हैं। मुनिगण अपनी सम्मति 'समिति' को भेज दें। पुप्फ भिक्खु

श्रीसूत्रागम प्रकाशक समितिके द्वितीय-संरक्षक,



श्रीमान मोहनलाल वनराज कर्णावट, भवानी पेठ पूना नं. २.

णमो त्थु णं समणस्स भगवओ णायपुत्त महावीरस्स

सूयगडं

पढमे सुयक्खंधे

समयज्झयणे पढमे

बुज्झिज्ज त्ति तिउट्टिज्जा बन्धणं परिजाणिया । किमाह बन्धणं वीरे किं वा जाणं तिउट्टइ ॥ १ ॥ १ ॥ चित्तमन्तमचित्तं वा परिगिज्झ किसामवि । अन्नं वा अणुजाणाइ एवं दुक्खा न मुच्चई ॥ २ ॥ २ ॥ सयं तिवायए पाणे अदुवऽन्नेहिं घायए । हणन्तं वाऽणुजाणाइ वेरं वड्ढेइ अप्पणो ॥ ३ ॥ ३ ॥ जस्सिं कुले समुप्पन्ने जेहिं वा संवसे नरे । ममाइ लुप्पई बाले अन्ने अन्नेहिं मुच्छिए ॥ ४ ॥ ४ ॥ वित्तं सोयरिया चेव सव्वमेयं न ताणइ । संखाएँ जीवियं चेव कम्मुणा उ तिउट्टइ ॥ ५ ॥ ५ ॥ एए गन्थे विउक्कम्म एगे समणमाहणा । अयाणन्ता विउस्सित्ता सत्ता कामेहिं माणवा ॥ ६ ॥ ६ ॥ सन्ति पञ्च महब्भूया इहमेगेसिमाहिया । पुढवी आउ तेऊ वा वाउ आगासपञ्चमा ॥ ७ ॥ ७ ॥ एए पञ्च महब्भूया तेब्भो एगो त्ति आहिया । अह तेसिं विणासेणं विणासो होइ देहिणो ॥ ८ ॥ ८ ॥ जहा य पुढवीथूमे एगे नाणाहि दीसइ । एवं भो कसिणे लोए विन्नू नाणाहि दीसइ ॥ ९ ॥ ९ ॥ एवमेगे त्ति जम्पन्ति मन्दा आरम्भनिस्सिया । एगे किच्चा सयं पावं तिव्वं दुक्खं नियच्छइ ॥१०॥१०॥ पत्तेयं कसिणे आया जे बाला जे य पण्डिया । सन्ति पिच्चा न ते सन्ति नत्थि सत्तोववाइया ॥ ११ ॥ ११ ॥ नत्थि पुण्णे व पावे वा नत्थि लोए इओवरे । सरीरस्स विणासेण विणासो होइ देहिणो ॥ १२ ॥ १२ ॥ कुव्वं च कारयं चेव सव्वं कुव्वं न विज्जई । एवं अकारओ अप्पा एवं ते उ पगब्भिया ॥ १३ ॥ १३ ॥ जे ते उ वाइणो एवं लोए तेसिं कओ सिया । तमाओ ते तमं जन्ति मन्दा आरम्भनिस्सिया ॥ १४ ॥ १४ ॥ सन्ति पञ्च महब्भूया इहमेगेसिमाहिया । आयछट्ठा पुणो आहु आया लोगे य सासए ॥ १५ ॥ १५ ॥ दुहओ न विणस्सन्ति नो य उप्पज्जए असं । सव्वे वि सव्वहा भावा नियत्तीभावमागया ॥ १६ ॥ १६ ॥ पञ्च खन्धे वयन्तेगे बाला उ खणजोइणो । अन्नो अणन्नो नेवाहु हेउयं च अहेउयं ॥१७॥१७॥ पुढवी आउ तेऊ य तहा वाऊ य एगओ । चत्तारि धाउणो रूवं एवमाहंसु आवरे ॥ १८ ॥ १८ ॥ अगारमावसन्ता वि अरण्णा वा वि पव्वया । इमं दरिसणमावन्ना सव्वदुक्खा विमुच्चई ॥१९॥१९॥ ते नावि संधिं नच्चा णं न ते धम्मविऊ जणा ।

जे ते उ वाइणो एव न ते ओहतराऽऽहिया ॥ २० ॥ २० ॥ ते नावि सधिं नच्चा ण न ते धम्मविऊ जणा । जे ते उ वाइणो एव न ते ससारपारगा ॥ २१ ॥ २१ ॥ ते नावि सधिं नच्चा ण न ते धम्मविऊ जणा । जे ते उ वाइणो एव न ते गब्भस्स पारगा ॥ २२ ॥ २२ ॥ ते नावि सधिं नच्चा ण न ते धम्मविऊ जणा । जे ते उ वाइणो एव न ते जम्मस्स पारगा ॥ २३ ॥ २३ ॥ ते नावि सधिं नच्चा ण न ते धम्मविऊ जणा । जे ते उ वाइणो एव न ते दुक्खस्स पारगा ॥ २४ ॥ २४ ॥ ते नावि सधिं नच्चा ण न ते धम्मविऊ जणा । जे ते उ वाइणो एवं न ते मारस्स पारगा ॥ २५ ॥ २५ ॥ नाणाविहाइ दुक्खाइ अणुहोन्ति पुणो पुणो । ससारचक्कवालम्मि मच्चुवाहिजराकुले ॥ २६ ॥ २६ ॥ उच्चावयाणि गच्छन्ता गब्भमेस्सन्ति णन्तसो । **नायपुत्ते महावीरे** एवमाह जिणुत्तमे ॥ २७ ॥ २७ ॥ त्ति बेमि ॥

समयज्झयणे पढमुद्देसो ॥

आघाय पुण एगेसिं उववन्ना पुढो जिया । वेदयन्ति सुह दुक्ख अदु वा लुप्पन्ति ठाणओ ॥ १ ॥ २८ ॥ न त सय कड दुक्ख कओ अन्नकड च ण । सुह वा जइ वा दुक्ख सेहिय वा असेहिय ॥ २ ॥ २९ ॥ सय कड न अन्नेहिं वेदयन्ति पुढो जिया । सगइय त तहा तेसिं इहमेगेसिमाहिय ॥ ३ ॥ ३० ॥ एवमेयाणि जम्पन्ता वाला पण्डियमाणिणो । नियमानियय सन्त अयाणन्ता अवुद्धिया ॥ ४ ॥ ३१ ॥ एवमेगे उ पासत्था ते भुज्जो विप्पगब्भिया । एवं उवट्ठिया सन्ता न ते दुक्खविमोक्खगा ॥ ५ ॥ ३२ ॥ जविणो मिगा जहा सन्ता परियाणेण वज्जिया । असङ्कियाइ सङ्कन्ति सङ्कियाइँ असङ्किणो ॥ ६ ॥ ३३ ॥ परियाणियाणि सङ्कन्ता पासियाणि असङ्किणो । अन्नाणभयसंविग्गा सपलिन्ति तहिं तहिं ॥ ७ ॥ ३४ ॥ अह त पवेज्ज वज्झ अहे वज्झस्स वा वए । मुच्चेज्ज पयपासाओ त तु मन्दे न देहई ॥ ८ ॥ ३५ ॥ अहियप्पाहियपन्नाणे विसमन्तेणुवागए । स बद्धे पयपासेण तत्थ घाय नियच्छइ ॥ ९ ॥ ३६ ॥ एव तु समणा एगे मिच्छदिट्ठी अणारिया । असङ्कियाइ सङ्कन्ति सङ्कियाइँ असङ्किणो ॥ १० ॥ ३७ ॥ धम्मपन्नवणा जा सा त तु सङ्कन्ति मूढगा । आरम्भाइ न सङ्कन्ति अवियत्ता अकोविया ॥ ११ ॥ ३८ ॥ सव्वप्पग विउक्कस्स सव्व नूमं विहूणिया । अप्पत्तिय अकम्मसे एयमट्ठ मिगे चुए ॥ १२ ॥ ३९ ॥ जे एय नाभिजाणन्ति मिच्छदिट्ठी अणारिया । मिगा वा पासबद्धा ते घायमेस्सन्ति णन्तसो ॥ १३ ॥ ४० ॥ माहणा समणा एगे सव्वे नाण सय वए । सव्वलोगे वि जे पाणा न ते जाणन्ति किंचण ॥ १४ ॥ ४१ ॥ मिलक्खू अमिलक्खुस्स जहा वुत्ताणुभासए । न हेउ से वियाणाइ भासिय तऽणुभासए ॥ १५ ॥

॥ ४२ ॥ एवमन्नाणिया नाण वयन्ता वि सयं सय । निच्छयत्थ ण जाणन्ति मिलक्खु व्व अबोहिया ॥ १६ ॥ ४३ ॥ अन्नाणियाण वीमसा अन्नाणे न नियच्छइ। अप्पणो य पर नाल कुतो अन्नाणुसासिउ ॥ १७ ॥ ४४ ॥ वणे मूढे जहा जन्तू मूढे नेयाणुगामिए। दो वि एए अकोविया तिव्वं सोय नियच्छई ॥ १८ ॥ ४५ ॥ अन्धो अन्ध पह नेन्तो दूरमद्धाणुगच्छइ। आवज्जे उप्पह जन्तू अदु वा पन्थाणुगामिए ॥ १९ ॥ ४६ ॥ एवमेगे नियागट्ठी धम्ममाराहगा वय। अदु वा अहम्ममावज्जे न ते सव्वज्जुय वए ॥ २० ॥ ४७ ॥ एवमेगे वियक्काहिं नो अन्न पज्जुवासिया। अप्पणो य वियक्काहि अयमञ्जू हि दुम्मई ॥ २१ ॥ ४८ ॥ एव तक्काइ साहेन्ता धम्माधम्मे अकोविया। दुक्खं ते नाइतुट्टेन्ति सउणी पञ्जर जहा॥ २२ ॥ ॥ ४९ ॥ सय सय पससन्ता गरहन्ता पर वय। जे उ तत्थ विउस्सन्ति ससार ते विउस्सिया ॥ २३ ॥ ५० ॥ अहावर पुरक्खाय किरियावाइदरिसणं। कम्मचिन्तापणट्ठाण ससारस्स पवड्ढण ॥ २४ ॥ ५१ ॥ जाण काएणऽणाउट्टी अबुहो ज च हिंसइ। पुट्ठो सवेयइ पर अवियत्त खु सावज्ज ॥ २५ ॥ ५२ ॥ सन्तिमे तउ आयाणा जेहि कीरइ पावग। अभिकम्मा य पेसा य मणसा अणुजाणिया ॥ २६ ॥ ५३ ॥ एए उ तउ आयाणा जेहिं कीरइ पावग। एव भावविसोहीए निव्वाणमभिगच्छई ॥ २७ ॥ ५४ ॥ पुत्त पिया समारब्भ आहारेज्ज असजए। भुञ्जमाणो य मेहावी कम्मुणा नोवलिप्पई ॥ २८ ॥ ५५ ॥ मणसा जे पउस्सन्ति चित्तं तेसिं न विज्जइ। अणवज्जमतह तेसिं न ते सवुडचारिणो ॥२९॥ ॥ ५६ ॥ इच्चेयाहि य दिट्ठीहिं सायागारवनिस्सिया। सरणं ति मन्नमाणा सेवन्ती पावग जणा ॥ ३० ॥ ५७ ॥ जहा अस्साविणिं नाव जाइअन्धो दुरूहिया। इच्छई पारमागन्तु अन्तरा य विसीयई ॥ ३१ ॥ ५८ ॥ एवं तु समणा एगे मिच्छदिट्ठी अणारिया। ससारपारकखी ते ससार अणुपरियट्टन्ति ॥ ३२ ॥ ५९ ॥ त्ति बेमि ॥

समयज्झयणे बिइयुद्देसो ॥

ज किंचि उ पूइकड सड्ढीमागन्तुमीहिय। सहस्सन्तरिय भुञ्जे दुपक्ख चेव सेवई ॥ १ ॥ ६० ॥ तमेव अवियाणन्ता विसमसि अकोविया। मच्छा वेसालिया चेव उदगस्सभियागमे ॥ २ ॥ ६१ ॥ उदगस्स पहावेणं सुक्क सिग्धं तमेन्ति उ। ढङ्केहि य कङ्केहि य आमिसत्थेहि ते दुही ॥ ३ ॥ ६२ ॥ एव तु समणा एगे वट्टमाणसुहेसिणो। मच्छा वेसालिया चेव घायमेस्सन्ति णन्तसो ॥ ४ ॥ ६३ ॥ इणमन्न तु अन्नाण इहमेगेसिमाहिय। देवउत्ते अय लोए बम्भउत्ते इ आवरे ॥ ५ ॥ ॥ ६४ ॥ ईसरेण कडे लोए पहाणाइ तहावरे। जीवाजीवसमाउत्ते सुहदुक्खसम-

सिए ॥ ६ ॥ ६५ ॥ सयंभुणा कडे लोए इइ वुत्तं महेसिणा । मारेण संथुया माया तेण लोए असासए ॥ ७ ॥ ६६ ॥ माहणा समणा एगे आह अंडकडे जए । असो तत्तमकासी य अयाणन्ता मुसं वए ॥ ८ ॥ ६७ ॥ सएहिं परियाएहिं लोगं बूया कडे त्ति य । तत्तं ते न वियाणन्ति न विणासी कयाइ वि ॥ ९ ॥ ६८ ॥ अमणुन्नसमुप्पायं दुक्खमेव वियाणिया । समुप्पायमयाणन्ता कह नायन्ति संवरं ॥ १० ॥ ६९ ॥ सुद्धे अपावए आया इहमेगेसिमाहियं । पुणो किड्डापदोसेणं सो तत्थ अवरज्झई ॥ ११ ॥ ७० ॥ इह संवुडे मुणी जाए पच्छा होइ अपावए । वियडम्बु जहा भुज्जो नीरयं सरयं तहा ॥ १२ ॥ ७१ ॥ एयाणुवीइ मेहावी बम्भचेरेण ते वसे । पुढो पावाउया सव्वे अक्खायारो सयं सयं ॥ १३ ॥ ७२ ॥ सए सए उवट्ठाणे सिद्धिमेव न अन्नहा । अहो इहेव वसवत्ती सव्वकामसमप्पिए ॥ १४ ॥ ॥ ७३ ॥ सिद्धा य ते अरोगा य इहमेगेसिमाहियं । सिद्धिमेव पुरो काउं सासए गढिया नरा ॥ १५ ॥ ७४ ॥ असंवुडा अणाईयं भमिहिन्ति पुणो पुणो । कप्पकालमुवज्जन्ति ठाणा आसुरकिब्बिसिय ॥ १६ ॥ ७५ ॥ त्ति बेमि ॥ **समयज्झयणे तइयुद्देसो ॥**

एए जिया भो न सरणं बाला पण्डियमाणिणो । हिच्चा णं पुव्वसंजोगं सिया किच्चोवएसगा ॥ १ ॥ ७६ ॥ तं च भिक्खू परिन्नाय वियं तेसु न मुच्छए । अणुक्कस्से अप्पलीणे मज्झेण मुणि जावए ॥ २ ॥ ७७ ॥ सपरिग्गहा य सारम्भा इहमेगेसिमाहियं । अपरिग्गहा अणारम्भा भिक्खू ताणं परिव्वए ॥ ३ ॥ ७८ ॥ कडेसु घासमेसेज्जा विऊ दत्तेसणं चरे । अगिद्धो विप्पमुक्को य ओमाणं परिवज्जए ॥ ४ ॥ ७९ ॥ लोगवायं निसामेज्जा इहमेगेसिमाहियं । विवरीयपन्नसंभूयं अन्नउत्तं तयाणुयं ॥ ५ ॥ ८० ॥ अणन्ते निइए लोए सासए न विणस्सई । अन्तवं निइए लोए इइ धीरोऽतिपासई ॥ ६ ॥ ८१ ॥ अपरिमाणं वियाणाइ इहमेगेसिमाहियं । सव्वत्थ सपरिमाणं इइ धीरोऽतिपासई ॥ ७ ॥ ८२ ॥ जे केइ तसा पाणा चिट्ठन्ति अदु थावरा । परियाए अत्थि से अंजू जेण ते तसथावरा ॥ ८ ॥ ८३ ॥ उरालं जगओ जोगं विवज्जासं पलेन्ति य । सव्वे अक्कन्तदुक्खा य अओ सव्वे अहिंसिया ॥ ९ ॥ ८४ ॥ एयं खु नाणिणो सारं जं न हिंसइ किंचण । अहिंसासमयं चेव एयावन्तं वियाणिया ॥ १० ॥ ८५ ॥ वुसिए य विगयगेही आयाणं सम्म रक्खए । चरियासणसेज्जासु भत्तपाणे य अन्तसो ॥ ११ ॥ ८६ ॥ एएहिं तिहिं ठाणेहिं संजए सययं मुणी । उक्कसं जलणं नूमं मज्झत्थं च विगिंचए ॥ १२ ॥ ८७ ॥ समिए उ सया साहू पंचसंवरसंवुडे । सिएहिं असिए भिक्खू आमोक्खाए परिव्वएज्जासि ॥ १३ ॥ ८८ ॥ त्ति बेमि ॥ **समयज्झयणं पढमं ॥**

वेयालियज्झयणे बिइए

सबुज्झह कि न बुज्झह सबोही खलु पेच दुल्लहा । नो हूवणमन्ति राइयो नो सुलभ पुणरावि जीविय ॥ १ ॥ ८९ ॥ डहरा वुड्ढा य पासह गब्भत्था वि चयन्ति माणवा । सेणे जह वट्टय हरे एव आउखयम्मि तुट्टई ॥ २ ॥ ९० ॥ मायाहि पियाहिं लुप्पई नो सुलहा सुगई य पेचओ । एयाइ भयाइ पेहिया आरम्भा विरमेज्ज सुव्वए ॥ ३ ॥ ९१ ॥ जमिण जगई पुढो जगा कम्मेहिं लुप्पन्ति पाणिणो । सयमेव कडेहि गाहई नो तस्स मुच्चेज्जऽपुट्ठय ॥ ४ ॥ ९२ ॥ देवा गन्धव्वरक्खसा असुरा भूमिचरा सरीसिवा । राया नरसेट्ठिमाहणा ठाणा ते वि चयन्ति दुक्खिया ॥ ५ ॥ ९३ ॥ कामेहि य सथवेहि गिद्धा कम्मसहा कालेण जन्तवो । ताले जह बन्धणच्चुए एव आउखयम्मि तुट्टई ॥ ६ ॥ ९४ ॥ जे यावि बहुस्सुए सिया धम्मिय माहण भिक्खुए सिया । अभिनूमकडेहि मुच्छिए तिव्व ते कम्मेहि किच्चई ॥ ७ ॥ ९५ ॥ अह पास विवेगमुट्ठिए अवितिण्णे इह भासई धुव । नाहिसि आर कओ पर वेहासे कम्मेहि किच्चई ॥ ८ ॥ ९६ ॥ जइ वि य नगिणे किसे चरे जइ वि य भुञ्जिय मासमन्तसो । जे इह मायाहि मिज्जई आगन्ता गब्भाय णन्तसो ॥ ९ ॥ ९७ ॥ पुरिसोरम पावकम्मुणा पलियन्त मणुयाण जीविय । सन्ना इह काममुच्छिया मोह जन्ति नरा असवुडा ॥ १० ॥ ९८ ॥ जयय विहराहि जोगव अणुपाणा पन्था दुरुत्तरा । अणुसासणमेव पक्कमे वीरेहिं सम्म पवेइय ॥ ११ ॥ ९९ ॥ विरया वीरा समुट्ठिया कोहकायरियाइपीसणा । पाणे न हणन्ति सव्वसो पावाओ विरया-ऽभिनिव्वुडा ॥ १२ ॥ १०० ॥ न वि ता अहमेव लुप्पए लुप्पन्ती लोगसि पाणिणो । एव सहिएहि पासए अणिहे से पुट्ठेऽहियासए ॥ १३ ॥ १०१ ॥ धुणिया कुलिय व लेववं किसए देहमणासणाइहिं । अविहिंसामेव पव्वए अणुधम्मो मुणिणा पवेइयो ॥ १४ ॥ १०२ ॥ सउणी जह पसुगुण्डिया विहुणिय धसयई सिय रय । एवं दविओवहाणव कम्म खवइ तवस्सि माहणे ॥ १५ ॥ १०३ ॥ उट्ठियमणगारमेसण समण ठाणठिय तवस्सिण । डहरा वुड्ढा य पत्थए अवि सुस्से न य त लमेज्ज नो ॥ १६ ॥ १०४ ॥ जइ कालुणियाणि कासिया जइ रोयन्ति य पुत्तकारणा । दविय भिक्खु समुट्ठियं नो लब्भन्ति न सठवित्तए ॥ १७ ॥ १०५ ॥ जइ वि य कामेहि लाविया जइ नेज्जाहि ण बन्धिउ घर । जइ जीविय नावकङ्खए नो लब्भन्ति न सठवित्तए ॥ १८ ॥ १०६ ॥ सेहन्ति य ण ममाइणो माय पिया य सुया य भारिया । पोसाहि ण पासओ तुम लोग पर पि जहासि पोसणो ॥ १९ ॥ १०७ ॥ अन्ने अन्नेहि मुच्छिया मोह जन्ति नरा असवुडा । विसम विसमेहि गाहिया ते

असमाही उ तहागयस्स वि ॥ १८ ॥ १२८ ॥ अहिगरणकडस्स भिक्खुणो वयमाणस्स पसज्झ दारुणं । अट्ठे परिहायई बहू अहिगरण न करेज्ज पण्डिए ॥ १९ ॥ १२९ ॥ सीओदग पडि दुगुछिणो अपडिन्नस्स लवावसप्पिणो । सामाइयमाहु तस्स ज जो गिहिमत्तेऽसण न भुञ्जई ॥ २० ॥ १३० ॥ न य सखयमाहु जीविय तह वि य बालजणो पगब्भई । बाले पावेहि मिज्जई इइ सखाय मुणी न मज्जई ॥ २१ ॥ १३१ ॥ छदेण पले इमा पया बहुमाया मोहेण पावुडा । वियडेण पलेन्ति माहणे सीउण्ह वयसा हियासए ॥ २२ ॥ १३२ ॥ कुजए अपराजिए जहा अक्खेहिं कुसलेहिं दीवय । कडमेव गहाय नो कलिं नो तीय नो चेव दावर ॥ २३ ॥ १३३ ॥ एव लोगम्मि ताइणा वुइए जे धम्मे अणुत्तरे । त गिण्ह हिय ति उत्तम कडमिव सेसऽवहाय पण्डिए ॥ २४ ॥ १३४ ॥ उत्तर मणुयाण आहिया गामधम्म इइ मे अणुस्सुयं । जसी विरया समुट्ठिया कासवस्स अणुधम्मचारिणो ॥ २५ ॥ १३५ ॥ जे एय चरन्ति आहिय नाएण महया महेसिणा । ते उट्ठिय ते समुट्ठिया अन्नोन्न सारेन्ति धम्मओ ॥ २६ ॥ १३६ ॥ मा पेह पुरा पणामए अभिकखे उवहिं धुणित्तए । जे दूमण तेहि नो नया ते जाणन्ति समाहिमाहिय ॥ २७ ॥ १३७ ॥ नो काहिएँ होज्ज सजए पासणिए न य सपसारए । नच्चा धम्म अणुत्तर कयकिरिए न यावि मामए ॥ २८ ॥ १३८ ॥ छन्न च पसस नो करे न य उक्कोस पगास माहणे । तेसिं सुविवेगमाहिए पणया जेहि सुजोसिय धुय ॥२९॥ ॥ १३९ ॥ अनिहे सहिए सुसवुडे धम्मट्ठी उवहाणवीरिए । विहरेज्ज समाहिइदिए अत्तहिय खु दुहेण लब्भइ ॥ ३० ॥ १४० ॥ न हि नूण पुरा अणुस्सुय अदु वा त तह नो समुट्ठिय । मुणिणा सामाइ आहिय नाएण जगसव्वदसिणा ॥३१॥१४१॥ एव मत्ता महन्तर धम्ममिण सहिया बहू जणा । गुरुणो छदाणुवत्तगा विरया तिण्ण महोघमाहिय ॥३२॥१४२॥ ति बेमि ॥ **वेयालियज्झयणम्मि बिइयुद्देसो ॥**

सवुडकम्मस्स भिक्खुणो ज दुक्ख पुट्ठ अवोहिए । त सजमओऽवचिज्जई मरण हेच्च वयन्ति पण्डिया ॥१॥१४३॥ जे विन्नवणाहिजोसिया सतिण्णेहि सम वियाहिया । तम्हा उड्ढ ति पासहा अदक्खु कामाई रोगव ॥ २ ॥ १४४ ॥ अग्ग वणिएहिं आहिय धारेन्ती राइणिया इह । एव परमा महव्वया अक्खाया उ सराइभोयणा ॥ ३ ॥ १४५ ॥ जे इह सायाणुगा नरा अज्झोववन्ना कामेहि मुच्छिया । किवणेण सम पगब्भिया न वि जाणन्ति समाहिमाहिय ॥ ४ ॥ १४६ ॥ वाहेण जहा व विच्छए अवले होइ गव पचोइए । से अन्तसो अप्पथामए नाइवहे अवले विसीयइ ॥ ५ ॥ १४७ ॥ एव कामेसण विऊ अज्ज सुए पयहेज्ज सथव । कामी कामे न

कामए लद्धे वा वि अलद्ध कण्हुई ॥ ६ ॥ १४८ ॥ मा पच्छ असाहुया भवे अच्चेही अणुसास अप्पगं । अहियं च असाहु सोयई से थणई परिदेवई बहु ॥ ७ ॥ १४९ ॥ इह जीवियमेव पासहा तरुणे वाससयस्स तुट्टई । इत्तरवासे य बुज्झह गिद्ध नरा कामेसु मुच्छिया ॥ ८ ॥ १५० ॥ जे इह आरम्भनिस्सिया आयदण्ड एगन्तलूसगा । गन्ता ते पावलोगयं चिररायं आसुरियं दिसं ॥ ९ ॥ १५१ ॥ न य संखयमाहु जीवियं तह वि य बालजणो पगब्भई ॥ पच्चुप्पन्नेण कारियं को दट्ठु परलोयमागए ॥ १० ॥ १५२ ॥ अदक्खुव दक्खुवाहियं सद्दहसु अदक्खुदंसणा । हंदि हु सुनिरुद्धदंसणे मोहणिज्जेण कडेण कम्मुणा ॥ ११ ॥ १५३ ॥ दुक्खी मोहे पुणो पुणो निव्विन्देज्ज सिलोगपूयणं । एवं सहिए ऽहिपासए आयतुलं पाणेहिं संजए ॥ १२ ॥ १५४ ॥ गारं पि य आवसे नरे अणुपुव्वं पाणेहि संजए । समया सव्वत्थ सुव्वए देवाणं गच्छे सलोगयं ॥ १३ ॥ १५५ ॥ सोच्चा भगवाणुसासणं सच्चे तत्थ करेज्जुवक्कमं । सव्वत्थ विणीयमच्छरे उञ्छं भिक्खु विसुद्धमाहरे ॥ १४ ॥ १५६ ॥ सव्वं नच्चा अहिट्ठए धम्मट्ठी उवहाणवीरिए । गुत्ते जुत्ते सया जए आयपरे परमायतट्ठिए ॥ १५ ॥ १५७ ॥ वित्तं पसवो य नाइओ तं बाले सरणं ति मन्नई । एए मम तेसु वी अहं नो ताणं सरणं न विज्जई ॥ १६ ॥ १५८ ॥ अब्भागमियम्मि वा दुहे अहवा उक्कमिए भवन्तिए । एगस्स गई य आगई विदुमन्ता सरणं न मन्नई ॥ १७ ॥ १५९ ॥ सव्वे सयकम्मकप्पिया अवियत्तेण दुहेण पाणिणो । हिण्डन्ति भयाउला सढा जाइजरामरणेहिऽभिद्दुया ॥ १८ ॥ १६० ॥ इणमेव खणं वियाणिया नो सुलभं बोहिं च आहियं । एवं सहिए ऽहिपासए आह जिणे इणमेव सेसगा ॥ १९ ॥ १६१ ॥ अभविंसु पुरा वि भिक्खवो आएसा वि भवन्ति सुव्वया । एयाइं गुणाइं आहु ते कासवस्स अणुधम्मचारिणो ॥ २० ॥ १६२ ॥ तिविहेण वि पाण मा हणे आयहिए अणियाण संवुडे । एवं सिद्धा अणन्तसो संपइ जे य अणागयावरे ॥ २१ ॥ १६३ ॥ एवं से उदाहु अणुत्तरनाणी अणुत्तरदंसी अणुत्तर-नाणदंसणधरे । अरहा नायपुत्ते भगवं वेसालिए वियाहिए ॥ २२ ॥ १६४ ॥ त्ति बेमि ॥ वेयालियज्झयणं बिइयं ॥

उवसग्गज्झयणे तइए

सूरं मन्नइ अप्पाणं जाव जेयं न पस्सई । जुज्झन्तं दढधम्माणं सिसुपालो व महारहं ॥ १ ॥ १६५ ॥ पयाया सूरा रणसीसे संगामम्मि उवट्ठिए । माया पुत्तं

न जाणाइ जेएण परीविच्छए ॥ २ ॥ १६६ ॥ एव सेहे वि अप्पुट्ठे भिक्खायरिया-अकोविए । सूर मन्नइ अप्पाण जाव लूह न सेवए ॥ ३ ॥ १६७ ॥ जया हेमन्त-मासम्मि सीय फुसइ सव्वग । तत्थ मन्दा विसीयन्ति रज्जहीणा व खत्तिया ॥ ४ ॥ ॥ १६८ ॥ पुट्ठे गिम्हाहितावेणं विमणे सुपिवासिए । तत्थ मन्दा विसीयन्ति मच्छा अप्पोदए जहा ॥ ५ ॥ १६९ ॥ सया दत्तेसणा दुक्खा जायणा दुप्पणोल्लिया । कम्मत्ता दुब्भगा चेव इच्चाहसु पुढोजणा ॥ ६ ॥ १७० ॥ एए सद्दे अचायन्ता गामेसु नगरेसु वा । तत्थ मन्दा विसीयन्ति सगामम्मि व भीरुया ॥ ७ ॥ १७१ ॥ अप्पेगे खुहिय भिक्खुं सुणी डसइ लूसए । तत्थ मन्दा विसीयन्ति तेउपुट्ठा व पाणिणो ॥ ८ ॥ १७२ ॥ अप्पेगे पडिभासन्ति पडिपन्थियमागया । पडियारगया एए जे एए एवजीविणो ॥ ९ ॥ १७३ ॥ अप्पेगे वइ जुञ्जन्ति नगिणा पिण्डोलगाहमा । मुण्डा कण्डूविणट्ठङ्गा उज्जल्ला असमाहिया ॥ १० ॥ १७४ ॥ एवं विप्पडिवन्नेगे अप्पणा उ अजाणया । तमाओ ते तम जन्ति मन्दा मोहेण पाउडा ॥ ११ ॥ १७५ ॥ पुट्ठो य दसमसगेहिं तणफासमचाइया । न मे दिट्ठे परे लोए जइ पर मरणं सिया ॥ १२ ॥ १७६ ॥ सतत्ता केसलोएण बम्भचेरपराइया । तत्थ मन्दा विसीयन्ति मच्छा विट्ठा व केयणे ॥ १३ ॥ १७७ ॥ आयदण्डसमायारे मिच्छासठियभावणा । हरिसप्पओसमावन्ना केई लूसन्तिऽनारिया ॥ १४ ॥ १७८ ॥ अप्पेगे पलियन्तेसिं चारो चोरो त्ति सुव्वय । बन्धन्ति भिक्खुय बाला कसायवयणेहि य ॥ १५ ॥ १७९ ॥ तत्थ दण्डेण सवीते मुट्ठिणा अदु फलेण वा । नाईणं सरई बाले इत्थी वा कुद्धगा-मिणी ॥ १६ ॥ १८० ॥ एए भो कसिणा फासा फरुसा दुरहियासया । हत्थी वा सरसवित्ता कीवावस गया गिह ॥ १७ ॥ १८१ ॥ ति बेमि ॥ **उवसग्गज्झयणे पढमुद्देसे** ॥

अहिमे सुहुमा सगा भिक्खूण जे दुरुत्तरा । जत्थ एगे विसीयन्ति न चयन्ति जवित्तए ॥ १ ॥ १८२ ॥ अप्पेगे नायओ दिस्स रोयन्ति परिवारिया । पोस णे ताय पुट्ठो सि कस्स ताय जहासि णे ॥ २ ॥ १८३ ॥ पिया ते थेरओ ताय ससा ते खुड्डिया इमा । भायरो ते सगा ताय सोयरा किं जहासि णे ॥ ३ ॥ १८४ ॥ मायर पियर पोस एव लोगो भविस्सइ । एवं खु लोइय ताय जे पालेन्ति य मायर ॥ ४ ॥ १८५ ॥ उत्तरा महुरल्लावा पुत्ता ते ताय खुड्डया । भारिया ते नवा ताय मा सा अन्न जण गमे ॥ ५ ॥ १८६ ॥ एहि ताय घर जामो मा य कम्मे सहा वयं । बिइय पि ताय पासामो जामु ताव सय गिह ॥६॥१८७॥ गन्तुं ताय पुणो गच्छे न तेणा समणो सिया । अकामग परिक्कम्म को ते वारिउमरिहइ ॥७॥१८८॥

ज किंचि अणग तात त पि सव्व समीकय । हिरण्ण ववहाराइ त पि दाहामु ते वयं ॥८॥१८९॥ इच्चेव ण सुसेहन्ति कालुणीयसमुट्ठिया । विबद्धो नाइसगेहिं तओऽगारं पहावइ ॥ ९ ॥ १९० ॥ जहा रुक्ख वणे जाय मालुया पडिबन्धइ । एवं ण पडिबन्धन्ति णाइओ असमाहिणा ॥ १० ॥ १९१ ॥ विबद्धो नाइसगेहिं हत्थी वा वि नवग्गहे । पिट्ठओ परिसप्पन्ति सुय गो व्व अदूरए ॥ ११ ॥ १९२ ॥ एए सगा मणूसाण पायाला व अतारिमा । कीवा जत्थ य किस्सन्ति नाइसगेहिं मुच्छिया ॥ १२ ॥ १९३ ॥ त च भिक्खू परिण्णाय सव्वे सगा महासवा । जीविय नावकंखिज्जा सोच्चा धम्ममणुत्तर ॥ १३ ॥ १९४ ॥ अहिमे सन्ति आवट्टा कासवेण पवेइया । बुद्धा जत्थावसप्पन्ति सीयन्ति अबुहा जहिं ॥ १४ ॥ १९५ ॥ रायाणो रायऽमच्चा य माहणा अदु व खत्तिया । निमन्तयन्ति भोगेहिं भिक्खुयं साहुजीविणं ॥ १५ ॥ १९६ ॥ हत्थस्सरहजाणेहिं विहारगमणेहि य । भुज भोगे इमे सग्घे महरिसी पूजयामु त ॥ १६ ॥ १९७ ॥ वत्थगन्धमलकार इत्थीओ सयणाणि य । भुजाहिमाइं भोगाइं आउसो पूजयामु त ॥ १७ ॥ १९८ ॥ जो तुमे नियमो चिण्णो भिक्खुभावम्मि सुव्वया । अगारमावसन्तस्स सव्वो सविज्जए तहा ॥ १८॥१९९॥ चिर दूइज्जमाणस्स दोसो दाणिं कुओ तव । इच्चेव ण निमन्तेन्ति नीवारेण व सूयर ॥ १९ ॥ २०० ॥ चोइया भिक्खचरियाए अचयन्ता जवित्तए । तत्थ मन्दा विसीयन्ति उज्जाणसि व दुब्बला ॥ २० ॥ २०१ ॥ अचयन्ता व लूहेण उवहाणेण तज्जिया । तत्थ मन्दा विसीयन्ति उज्जाणसि जरग्गवा ॥ २१ ॥ २०२ ॥ एव निमन्तण लद्धु मुच्छिया गिद्ध इत्थिसु । अज्झोववन्ना कामेहिं चोइज्जन्ता गया गिह ॥ २२ ॥ २०३ ॥ ति बेमि ॥ **उवसग्गज्झयणे बिइयुद्देसे** ॥

जहा सगामकालम्मि पिट्ठओ भीरु वेहइ । वलय गहण नूम को जाणइ पराजय ॥ १ ॥ २०४ ॥ मुहुत्ताण मुहुत्तस्स मुहुत्तो होइ तारिसो । पराजियाऽवसप्पामो इइ भीरू उवेहई ॥ २ ॥ २०५ ॥ एव उ समणा एगे अबल नच्चाण अप्पग । अणागय भय दिस्स अवकप्पन्तिम सुय ॥ ३ ॥ २०६ ॥ को जाणइ विऊवाय इत्थीओ उदगाउ वा । चोइज्जन्ता पवक्खामो न णो अत्थि पकप्पिय ॥ ४ ॥ २०७ ॥ इच्चेव पडिलेहन्ति वलया पडिलेहिणो । वितिगिन्छसमावन्ना पन्थाण च अकोविया ॥ ५ ॥ २०८ ॥ जे उ सगामकालम्मि नाया सूरपुरगमा । नो ते पिट्ठमुवेहिन्ति किं पर मरण सिया ॥ ६ ॥ २०९ ॥ एव समुट्ठिए भिक्खू वोसिज्जा गारबन्धण । आरम्भ तिरिय कट्टु अत्तत्ताए परिव्वए ॥ ७ ॥ २१० ॥ तमेगे परिभासन्ति भिक्खुयं साहुजीविणं । जे एव परिभासन्ति अन्तए ते समाहिए ॥ ८ ॥ २११ ॥

सबद्धसमकप्पा उ अन्नमन्नेसु मुच्छिया । पिण्डवाय गिलाणस्स ज सारेह दलाह य ॥ ९ ॥ २१२ ॥ एव तुब्भे सरागत्था अन्नमन्नमणुव्वसा । नट्ठसप्पहसब्भावा ससारस्स अपारगा ॥ १० ॥ २१३ ॥ अह ते परिभासेज्जा भिक्खु मोक्ख-विसारए । एवं तुब्भे पभासन्ता दुपक्ख चेव सेवह ॥ ११ ॥ २१४ ॥ तुब्भे भुञ्जह पाएसु गिलाणो अभिहडम्मि य । त च बीओदग भोच्चा तमुद्दिस्सादि ज कड ॥ १२ ॥ २१५ ॥ लित्ता तिव्वाभितावेण उज्झिया असमाहिया । नाइकण्डूइय सेय अरुयस्सावरज्झई ॥ १३ ॥ २१६ ॥ तत्तेण अणुसिट्ठा ते अपडिन्नेण जाणया । न एस नियए मग्गे असमिक्खा वई किई ॥ १४ ॥ २१७ ॥ एरिसा जा वई एसा अग्गवेणु व्व करिसिया । गिहिणो अभिहडं सेय भुञ्जिउ न उ भिक्खुणं ॥ १५ ॥ २१८ ॥ धम्मपन्नवणा जा सा सारम्भा न विसोहिया । न उ एयाहि दिट्ठीहिं पुव्वमासिं पगप्पिय ॥ १६ ॥ २१९ ॥ सव्वाहिं अणुजुत्तीहि अचयन्ता जवित्तए । तओ वाय निराकिच्चा ते भुज्जो वि पगब्भिया ॥ १७ ॥ २२० ॥ राग-दोसाभिभूयप्पा मिच्छत्तेण अभिद्दुया । आउस्से सरण जन्ति टकणा इव पव्वय ॥ १८ ॥ २२१ ॥ बहुगुणप्पगप्पाइ कुज्जा अत्तसमाहिए । जेणन्ने न विरुज्झेज्जा तेण त त समायरे ॥ १९ ॥ २२२ ॥ इम च धम्ममायाय कासवेण पवेइय । कुज्जा भिक्खू गिलाणस्स अगिलाए समाहिए ॥ २० ॥ २२३ ॥ सखाय पेसल धम्म दिट्ठिम परिनिव्वुडे । उवसग्गे नियामित्ता आमोक्खाए परिव्वएज्जासि ॥२१॥२२४॥ त्ति बेमि ॥ **उवसग्गज्झयणे तइयुद्देसे** ॥

आहसु महापुरिसा पुव्विं तत्ततवोधणा । उदएण सिद्धिमावन्ना तत्थ मन्दो विसीयइ ॥ १ ॥ २२५ ॥ अभुञ्जिया नमी विदेही रामगुत्ते य भुञ्जिया । बाहुए उदग भोच्चा तहा नारायणे रिसी ॥ २ ॥ २२६ ॥ आसिले देविले चेव दीवायण महारिसी । पारासरे दग भोच्चा बीयाणि हरियाणि य ॥ ३ ॥ २२७ ॥ एए पुव्व महापुरिसा आहिया इह समया । भोच्चा बीयोदग सिद्धा इइ मेयमणुस्सुय ॥ ४ ॥ २२८ ॥ तत्थ मन्दा विसीयन्ति वाहच्छिन्ना व गद्दभा । पिट्ठओ परिसप्पन्ति पिट्ठसप्पी य सभमे ॥ ५ ॥ २२९ ॥ इहमेगे उ भासन्ति साय साएण विज्जई । जे तत्थ आरिय मग्गं परम च समाहिय ॥ ६ ॥ २३० ॥ मा एयं अवमन्नन्ता अप्पेण लुम्पहा बहु । एयस्स उ अमोक्खाए अयोहारि व्व जूरह ॥ ७ ॥ २३१ ॥ पाणाइवाए वट्टन्ता मुसावाए असजया । अदिन्नादाणे वट्टन्ता मेहुणे य परिग्गहे ॥ ८ ॥ २३२ ॥ एवमेगे उ पासत्था पन्नवन्ति अणारिया । इत्थीवस गया बाला जिणसासणपरम्मुहा ॥ ९ ॥ २३३ ॥ जहा गण्ड पिलाग वा परिपीलेज्ज मुहुत्तगं । एव विन्नवणित्थीसु

दोसो तत्थ कओ सिया ॥ १० ॥ २३४ ॥ जहा मन्धादणे नाम थिमियं भुञ्जई
दग । एव विन्नवणित्थीसु दोसो तत्थ कओ सिया ॥ ११ ॥ २३५ ॥ जहा विहंगमा
पिंगा थिमियं भुञ्जई दग । एव विन्नवणित्थीसु दोसो तत्थ कओ सिया ॥ १२ ॥ २३६ ॥
एवमेगे उ पासत्था मिच्छदिट्ठी अणारिया । अज्झोववन्ना कामेहिं पूयणा इव तरुणए
॥ १३ ॥ २३७ ॥ अणागयमपस्सन्ता पच्चुप्पन्नगवेसगा । ते पच्छा परितप्पन्ति
खीणे आउम्मि जोव्वणे ॥ १४ ॥ २३८ ॥ जेहिं काले परिक्कन्तं न पच्छा परित
प्पए । ते धीरा बन्धणुम्मुक्का नावकङ्खन्ति जीवियं ॥ १५ ॥ २३९ ॥ जहा नई
वेयरणी दुत्तरा इह संमया । एवं लोगंसि नारीओ दुत्तरा अमईमया ॥१६॥२४०॥
जेहिं नारीण संजोगा पूयणा पिट्ठओ कया । सव्वमेयं निराकिच्चा ते ठिया सुसमा
हिए ॥ १७ ॥ २४१ ॥ एए ओघं तरिस्सन्ति समुद्दं ववहारिणो । जत्थ पाणा विस
न्नासि किच्चन्ती सयकम्मुणा ॥ १८ ॥ २४२ ॥ तं च भिक्खू परिन्नाय सुव्वए
समिए चरे । मुसावायं च वज्जिज्जा अदिन्नादाणं च वोसिरे ॥ १९ ॥ २४३ ॥
उड्ढमहे तिरियं वा जे केई तसथावरा । सव्वत्थ विरइं कुज्जा सन्ति निव्वाणमाहियं
॥ २० ॥ २४४ ॥ इमं च धम्ममायाय कासवेण पवेइयं । कुज्जा भिक्खू गिलाणस्स
अगिलाए समाहिए ॥ २१ ॥ २४५ ॥ संखाय पेसलं धम्मं दिट्ठिमं परिनिव्वुडे ।
उवसग्गे नियामित्ता आमोक्खाए परिव्वएज्जासि ॥ २२ ॥ २४६ ॥ त्ति बेमि ॥
उवसग्गज्झयणं तइयं ॥

इत्थिपरिन्नज्झयणे चउत्थे

जे मायरं च पियरं च विप्पजहाय पुव्वसंजोगं । एगे सहिए चरिस्सामि आर
यमेहुणो विवित्तेसु ॥ १ ॥ २४७ ॥ सुहुमेण तं परिक्कम्म छन्नपएण इत्थिओ मन्दा
उव्वाय पि ताउ जाणसु जहा लिस्सन्ति भिक्खुणो एगे ॥ २ ॥ २४८ ॥ पासे भिसं
निसीयन्ति अभिक्खणं पोसवत्थं परिहिन्ति । कायं अहे वि दंसन्ति बाहू उद्धट्टु
कक्खमणुव्वए ॥ ३ ॥ २४९ ॥ सयणासणेहिं जोगेहिं इत्थियो एगया निमन्तेन्ति
एयाणि चेव से जाणे पासाणि विरूवरूवाणि ॥ ४ ॥ २५० ॥ नो तासु चक्खु संधेज्जा
नो वि य साहसं समभिजाणे । नो सहियं पि विहरेज्जा एवमप्पा सुरक्खिओ होइ
॥ ५ ॥ २५१ ॥ आमन्तिय उस्सविया भिक्खु आयसा निमन्तेन्ति । एयाणि चेव
से जाणे सद्दाणि विरूवरूवाणि ॥ ६ ॥ २५२ ॥ मणबन्धणेहिं णेगेहिं कलुणविणीय
मुवगसित्ताणं । अदु मञ्जुलाइं भासन्ति आणवयन्ति भिन्नकहाहिं ॥ ७ ॥ २५३ ॥

सीह जहा व कुणिमेग निब्भयमेगचर ति पासेग। एवित्थियाउ बन्धन्ति सवुड एगइयमणगार ॥ ८ ॥ २५४ ॥ अह तत्थ पुणो नमयन्ती रहकारो व नेमि आणुपुव्वीए। बद्धो मिए व पासेण फन्दन्ते वि न मुचए ताहे ॥ ९ ॥ २५५ ॥ अह सेऽणुतप्पई पच्छा भोच्चा पायस व विसमिस्स। एव विवेगमायाय सवासो न वि कप्पए दविए ॥ १० ॥ २५६ ॥ तम्हा उ वज्जए इत्थी विसलित्त व कण्टग नच्चा। ओए कुलाणि वसवत्ती आघाए न से वि निग्गन्थे ॥ ११ ॥ २५७ ॥ जे एय उञ्छ अणुगिद्धा अन्नयरा होन्ति कुसीलाण। सुतवस्सिए वि से भिक्खू नो विहरे सह णमित्थीसु ॥ १२॥ २५८ ॥ अवि धूयराहि सुण्हाहि धाईहिं अदुव दासीहिं। महईहि वा कुमारीहिं सथव से न कुज्जा अणगारे ॥ १३ ॥ २५९ ॥ अदु नाइण च सुहीण वा अप्पिय दट्ठु एगया होइ। गिद्धा सत्ता कामेहिं रक्खणपोसणे मणुस्सोऽसि ॥ १४ ॥ ॥ २६० ॥ समण पि दट्ठुदासीण तत्थ वि ताव एगे कुप्पन्ति। अदु वा भोयणेहिं नत्थेहिं इत्थीदोस सकिणो होन्ति ॥ १५ ॥ २६१ ॥ कुव्वन्ति सथव ताहिं पब्भट्ठा समाहिजोगेहिं। तम्हा समणा न समेन्ति आयहियाए सनिसेज्जाओ ॥१६॥२६२॥ बहवे गिहाईं अवहट्टु मिस्सीभाव पत्थुया य एगे। धुवमग्गमेव पवयन्ति वायावीरिय कुसीलाण ॥ १७ ॥ २६३ ॥ सुद्ध रवइ परिसाए अह रहस्सम्मि दुक्कड करेन्ति। जाणन्ति य ण तहाविऊ माइल्ले महासढेऽय ति ॥ १८ ॥ २६४ ॥ सय दुक्कड च न वयइ आइट्ठो वि पकत्थइ बाले। वेयाणुवीइ मा कासी चोइज्जन्तो गिलाइ से भुज्जो ॥ १९ ॥ २६५ ॥ ओसिया वि इत्थिपोसेसु पुरिसा इत्थिवेयखेयन्ना। पन्नासमन्निया वेगे नारीण वस उवकसन्ति ॥ २० ॥ २६६ ॥ अवि हत्थपायछेयाए अदु वा वद्धमसउक्कन्ते। अवि तेयसाभितावणाणि तच्छिय खारसिंचणाईं य ॥२१॥२६७॥ अदु कण्णनासछेय कण्ठच्छेयण तिइक्खन्ती। इइ एत्थ पावसतत्ता न वेन्ति पुणो न काहिन्ति ॥ २२ ॥ २६८ ॥ सुयमेयमेवमेगेसिं इत्थीवेय त्ति हु सुयक्खाय। एय पि ता वइत्ताण अदु वा कम्मुणा अवकरेन्ति ॥ २३ ॥ २६९ ॥ अन्न मणेण चिन्तेन्ति वाया अन्न च कम्मुणा अन्न। तम्हा न सद्दहे भिक्खू बहुमायाओ इत्थिओ नच्चा ॥ २४ ॥ २७० ॥ जुवई समण बूया विचित्तलकारवत्थगाणि परिहित्ता। विरया चरिस्सह रुक्खं धम्ममाइक्ख णे भयन्तारो ॥ २५ ॥ २७१ ॥ अदु साविया पवाएण अहमसि साहम्मिणी य समणाण। जउकुम्भे जहा उवज्जोई सवासे विऊ विसीएज्जा ॥ २६ ॥ २७२ ॥ जउकुम्भे जोइउवगूढे आसुभितत्ते नासमुवयाइ। एवित्थियाहि अणगारा सवासेण नासमुवयन्ति ॥ २७ ॥ २७३ ॥ कुव्वन्ति पावग कम्म पुट्ठा वेगेवमाहिंसु। नो हं करेमि पाव ति अकेसाइणी ममेस त्ति ॥२८॥२७४॥

बालस्स मन्दयं बीयं जं च कडं अवजाणई भुज्जो । दुगुणं करेइ से पावं पूयणकामो
विसण्णेसी ॥ २९ ॥ २७५ ॥ संलोकणिज्जमणगारं आयगयं निमन्तणेणाहंसु । वत्थं
च ताइ पायं वा अन्नं पाणगं पडिग्गाहे ॥ ३० ॥ २७६ ॥ नीवारमेयं बुज्झेज्जा णो
इच्छे अगारमागन्तुं । बद्धे विसयपासेहिं मोहमावज्जइ पुणो मन्दे ॥ ३१ ॥ २७७ ॥
त्ति बेमि ॥ इत्थिपरिन्नज्झयणे पढमुद्देसे ॥

ओए सया न रज्जेज्जा भोगकामी पुणो विरज्जेज्जा । भोगे समणाण सुणेह जह
भुञ्जन्ति भिक्खुणो एगे ॥ १ ॥ २७८ ॥ अह तं तु भेयमावन्नं मुच्छियं भिक्खुं
काममइवट्टं । पलिभिन्दियाण तो पच्छा पादुद्धट्टु मुद्धि पहणन्ति ॥ २ ॥ २७९ ॥
जइ केसिया णं मए भिक्खू णो विहरे सह णमित्थीए । केसाणवि हं लुंचिस्सं नन्नत्थ
मए चरेज्जासि ॥ ३ ॥ २८० ॥ अह णं से होइ उवलद्धो तो पेसन्ति तहाभूएहिं ।
अलाउच्छेयं पेहेहि वग्गुफलाइं आहराहि त्ति ॥ ४ ॥ २८१ ॥ दारूणि सागपागाए
पज्जोओ वा भविस्सई राओ । पायाणि य मे रयावेहि एहि ता मे पिट्ठओमद्दे ॥ ५ ॥
॥ २८२ ॥ वत्थाणि य मे पडिलेहेहि अन्नं पाणं च आहराहि त्ति । गन्धं च
रओहरणं च कासवगं च मे समणुजाणाहि ॥ ६ ॥ २८३ ॥ अदु अंजणिं अलंकारं
कुक्कययं मे पयच्छाहि । लोद्धं च लोद्धकुसुमं च वेणुपलासियं च गुलियं च ॥ ७ ॥
॥ २८४ ॥ कुट्ठं तगरं च अगरुं संपिट्ठं सम्मं उसिरेणं । तेल्लं मुहभिजाए वेणुफलाइं
सन्निहाणाए ॥ ८ ॥ २८५ ॥ नन्दीचुण्णगाइं पाहराहि छत्तोवाणहं च जाणाहि ।
सत्थं च सूवच्छेज्जाए आणीलं च वत्थयं रयावेहि ॥ ९ ॥ २८६ ॥ सुफणिं च
सागपागाए आमलगाइं दगाहरणं च । तिलगकरणिमंजणसलागं घिंसु मे विहूणयं
विजाणेहि ॥ १० ॥ २८७ ॥ संडासगं च फणिहं च सीहलिपासगं च आणाहि ।
आदंसगं च पयच्छाहि दन्तपक्खालणं पवेसाहि ॥११॥२८८॥ पूयफलं तम्बोलयं सूई
सुत्तगं च जाणाहि । कोसं च मोयमेहाए सुप्पुक्खलगं च खारगालणं च ॥ १२ ॥
॥ २८९ ॥ चन्दालगं च करगं च वच्चघरं च आउसो खणाहि । सरपाययं च
जायाए गोरहगं च सामणेराए ॥ १३ ॥ २९० ॥ घडिगं च सडिण्डिमयं च चेल-
गोलं कुमारभूयाए । वासं समभिआवण्णं आवसहं च जाण भत्तं च ॥ १४ ॥ २९१ ॥
आसन्दियं च नवसुत्तं पाउल्लाइं संकमट्ठाए । अदु पुत्तदोहलट्ठाए आणप्पा हवन्ति
दासा वा ॥ १५ ॥ २९२ ॥ जाए फले समुप्पन्ने गेण्हसु वा णं अहवा जहाहि ।
अह पुत्तपोसिणो एगे भारवहा हवन्ति उट्टा वा ॥ १६ ॥ २९३ ॥ राओ वि
उट्ठिया सन्ता दारगं च संठवन्ति धाई वा । सुहिरामणा वि ते सन्ता वत्थधोवा
हवन्ति हंसा वा ॥ १७ ॥ २९४ ॥ एवं बहुहिं कयपुव्वं भोगत्थाए जेऽभियावन्ना ।

दासे मिए व पेसे व्व पसुभूए वा से न वा केई ॥ १८ ॥ २९५ ॥ एव खु तासु विन्नप्प सथव सवास च वज्जेज्जा । तज्जातिया इमे कामा वज्जकरा य एवमक्खाए ॥ १९ ॥ २९६ ॥ एय भयं न सेयाए इइ से अप्पग निरुम्भित्ता । नो इत्थिं नो पसु भिक्खु नो सय पाणिणा निलिज्जेज्जा ॥ २० ॥ २९७ ॥ सुविसुद्धलेसे मेहावी परकिरिय च वज्जए नाणी । मणसा वयसा काएण सव्वफाससहे अणगारे ॥ २१ ॥ ॥ २९८ ॥ इच्चेवमाहु से वीरे धुयरए धुयमोहे से भिक्खु । तम्हा अज्झत्तविसुद्धे सुविमुक्के आमोक्खाए परिव्वएज्जासि ॥ २२ ॥ २९९ ॥ त्ति बेमि ॥ **इत्थिपरिन्नज्झयणं चउत्थं ॥**

निरयविभत्तियज्झयणे पञ्चमे

पुच्छिस्सह केवलिय महेसिं कह भितावा नरगा पुरत्था । अजाणओ मे मुणि बूहि जाणं कहिं नु बाला नरग उवेन्ति ॥ १ ॥ ३०० ॥ एवं मए पुट्ठे महाणुभावे इणमोऽब्बवी कासवे आसुपन्ने । पवेयइस्स दुहमट्ठदुग्ग आईणिय दुक्कडिण पुरत्था ॥ २ ॥ ३०१ ॥ जे केइ बाला इह जीवियट्ठी पावाईं कम्माईं करेन्ति रुद्दा । ते घोररूवे तमिसन्धयारे तिव्वाभितावे नरगे पडन्ति ॥ ३ ॥ ३०२ ॥ तिव्व तसे पाणिणो थावरे य जे हिंसई आयसुह पडुच्चा । जे लूसए होइ अदत्तहारी न सिक्खई सेयवियस्स किंचि ॥ ४ ॥ ३०३ ॥ पागब्भि पाणे वहुण तिवाई अनिव्वुए घायमुवेइ बाले । निहो निस गच्छइ अन्तकाले अहोसिर कट्टु उवेइ दुग्ग ॥ ५ ॥ ३०४ ॥ हण छिन्दह भिन्दह ण दहेति सद्दे सुणेन्ता परधम्मियाण । ते नारगाओ भयभिन्नसन्ना कखन्ति क नाम दिस वयामो ॥ ६ ॥ ३०५ ॥ इङ्गालरासिं जलिय सजोइ तत्तोवम भूमिमणुक्कमन्ता । ते डज्झमाणा कलुण थणन्ति अरहस्सरा तत्थ चिरट्ठिईया ॥ ७ ॥ ३०६ ॥ जइ ते सुया वेयरणी भिदुग्गा निसिओ जहा खुर इव तिक्खसोया । तरन्ति ते वेयरणिं भिदुग्ग उसुचोइया सत्तिसु हम्ममाणा ॥ ८ ॥ ॥ ३०७ ॥ कीलेहि विज्झन्ति असाहुकम्मा नाव उवेन्ते सइविप्पहूणा । अन्ने उ सूलाहि तिसूलियाहिं दीहाहि विद्धूण अहे करेन्ति ॥ ९ ॥ ३०८ ॥ केसिं च बन्धित्तु गले सिलाओ उदगसि बोलेन्ति महालयसि । कलबुयावालुयमुम्मुरे य लोलन्ति पचन्ति य तत्थ अन्ने ॥ १० ॥ ३०९ ॥ आसूरिय नाम महाभितावं अन्धतम दुप्पतर महन्त । उड्ढ अहे य तिरिय दिसासु समाहिओ जत्थगणी झियाइ ॥ ११ ॥ ३१० ॥ जसी गुहाए जलणेऽतिउट्टे अविजाणओ डज्झइ लुत्तपन्नो । सया य कलुण पुण घम्मठाण गाढोवणीय अइदुक्खधम्म ॥ १२ ॥ ३११ ॥ चत्तारि

अगणीओ गमारभेत्ता जहिं कूरकम्मा भितवेन्ति बाल। ते तत्थ चिट्ठन्तभितप्पमागा मच्छा व जीवन्तो व जोइपत्ता ॥ १३ ॥ ३१२ ॥ सतच्छण नाम महाभितावं ते नारगा जत्थ असाहुकम्मा। हत्थेहि पाएहि य बन्धिऊण फलगं व तच्छन्ति कुहाडहत्था ॥ १४ ॥ ३१३ ॥ रुहिरे पुणो वच्चसमुस्सियंगे भिन्नुत्तमंगे परिवत्तयन्ता। पयन्ति णं नेरइए फुरन्ते सजीवमच्छे व अयोकवल्ले ॥ १५ ॥ ३१४ ॥ नो चेव ते तत्थ मसीभवन्ति न मिज्जई तिव्वभिवेयणाए। तमाणुभागं अणुवेदयन्ता दुक्खन्ति दुक्खी इह दुक्कडेण ॥ १६ ॥ ३१५ ॥ तहिं च ते लोलणसंपगाढे गाढं सुतत्तं अगणिं वयन्ति। न तत्थ सायं लहई भिदुग्गे अरहियाभितावा तह वी तवेन्ति ॥ १७ ॥ ३१६ ॥ से सुव्वई नगरवहे व सद्दे दुहोवणीयाणि पयाणि तत्थ। उदिण्णकम्माण उदिण्णकम्मा पुणो पुणो ते सरहं दुहेन्ति ॥ १८ ॥ ३१७ ॥ पाणेहि णं पाव वियोजयन्ति तं भे पवक्खामि जहातहेणं। दण्डेहि तत्था सरयन्ति बाला सव्वेहि दण्डेहि पुराकएहिं ॥ १९ ॥ ३१८ ॥ ते हम्ममाणा नरगे पडन्ति पुण्णे दुरूवस्स महाभितावे। ते तत्थ चिट्ठन्ति दुरूवभक्खी तुट्टन्ति कम्मोवगया किमीहिं ॥ २० ॥ ३१९ ॥ सया कसिणं पुण घम्मठाणं गाढोवणीयं अइदुक्खधम्मं। अन्दूसु पक्खिप्प विहत्तु देहं वेहेण सीसं सेऽभितावयन्ति ॥ २१ ॥ ३२० ॥ छिन्दन्ति बालस्स खुरेण नक्कं ओट्ठे वि छिन्दन्ति दुवे वि कण्णे। जिब्भं विणिक्कस्स विहत्थिमेत्तं तिक्खाहि सूलाहि भितावयन्ति ॥ २२ ॥ ३२१ ॥ ते तिप्पमाणा तलसंपुडं व राइंदियं तत्थ थणन्ति बाला। गलन्ति ते सोणियपूयमंसं पज्जोइया खारपइद्धियंगा ॥ २३ ॥ ३२२ ॥ जइ ते सुया लोहियपूयपाई बालागणी तेअगुणा परेण। कुम्भी महन्ताहियपोरुसीया समूसिया लोहियपूयपुण्णा ॥ २४ ॥ ३२३ ॥ पक्खिप्प तासु पययन्ति बाले अट्टस्सरे ते कलुणं रसन्ते। तण्हाइया ते तउतम्बतत्तं पज्जिज्जमाणट्टयरं रसन्ति ॥ २५ ॥ ३२४ ॥ अप्पेण अप्पं इह वञ्चइत्ता भवाहमे पुव्वसए सहस्से। चिट्ठन्ति तत्था बहुकूरकम्मा जहा कडं कम्म तहासि भारे ॥ २६ ॥ ३२५ ॥ समज्जिणित्ता कलुसं अणज्जा इट्ठेहि कन्तेहि य विप्पहूणा। ते दुब्भिगन्धे कसिणे य फासे कम्मोवगा कुणिमे आवसन्ति ॥ २७ ॥ ३२६ ॥ त्ति बेमि **निरयविभत्तियज्झयणे पढमुद्देसे ॥**

अहावरं सासयदुक्खधम्मं तं भे पवक्खामि जहातहेणं। बाला जहा दुक्कडकम्मकारी वेयन्ति कम्माइं पुरेकडाइं ॥ १ ॥ ३२७ ॥ हत्थेहि पाएहि य बन्धिऊण उयरं विकत्तन्ति खुरासिएहिं। गिण्हित्तु बालस्स विहत्तु देहं वद्धं थिरं पिट्ठउ उद्धरन्ति ॥ २ ॥ ३२८ ॥ बाहू पकत्तन्ति य मूलओ से थूलं वियासं मुहे आड-

हन्ति । रहंसि जुत्त सरयन्ति वाल आरुस्स विज्झन्ति तुदेण पिट्ठे ॥ ३ ॥ ३२९ ॥ अय व तत्त जलिय सजोइ तऊवम भूमिमणुक्कमन्ता । ते डज्झमाणा कलुण थणन्ति उसुचोइया तत्तजुगेसु जुत्ता ॥ ४ ॥ ३३० ॥ वाला वला भूमिमणुक्कमन्ता पविज्जल लोहपह च तत्त । जसी भिदुग्गसि पवज्जमाणा पेसे व दण्डेहि पुरा करेन्ति ॥ ५ ॥ ॥ ३३१ ॥ ते सपगाढसि पवज्जमाणा सिलाहि हम्मन्ति निपातिणीहि । सतावणी नाम चिरट्ठिईया सतप्पई जत्थ असाहुकम्मा ॥ ६ ॥ ३३२ ॥ कन्दूसु पक्खिप्प पयन्ति वाल तओ वि दड्ढा पुण उप्पयन्ति । ते उड्ढकाएहि पखज्जमाणा अवरेहि खज्जन्ति सणप्फएहि ॥ ७ ॥ ३३३ ॥ समूसिय नाम विधूमठाण जं सोयतत्ता कलुणं थणन्ति । अहोसिर कट्टु विगत्तिऊण अय व सत्थेहि समोसवेन्ति ॥ ८ ॥ ॥ ३३४ ॥ समूसिया तत्थ विसूणियंगा पक्खीहि खज्जन्ति अयोमुहेहि । सजीवणी नाम चिरट्ठिईया जसी पया हम्मइ पावचेया ॥ ९ ॥ ३३५ ॥ तिक्खाहि सूलाहि निवाययन्ति वसोगय सावयय व लद्ध । ते सूलविद्धा कलुण थणन्ति एगन्तदुक्खं दुहओ गिलाणा ॥ १० ॥ ३३६ ॥ सया जल नाम निह महन्त जसी जलन्तो अगणी अकट्ठो । चिट्ठन्ति वद्धा वहुकूरकम्मा अरहस्सरा केइ चिरट्ठिईया ॥ ११ ॥ ॥ ३३७ ॥ चिया महन्तीउ समारभित्ता छुब्भन्ति ते त कलुण रसन्ति । आवट्टई तत्थ असाहुकम्मा सप्पी जहा पडिय जोइमज्झे ॥ १२ ॥ ३३८ ॥ सया कसिण पुण घम्मठाण गाढोवणीय अइदुक्खधम्म । हत्थेहि पाएहि य वन्धिऊण सत्तु-व्वदण्डेहि समारभन्ति ॥ १३ ॥ ३३९ ॥ भज्जन्ति वालस्स वहेण पुट्ठी सीस पि भिन्दन्ति अयोघणेहिं । ते भिन्नदेहा फलग व तच्छा तत्ताहि आराहि नियोजयन्ति ॥ १४ ॥ ३४० ॥ अभिजुजिया रुद्द असाहुकम्मा उसुचोइया हत्थिवह वहन्ति । एग दुरूहित्तु दुवे तओ वा आरुस्स विज्झन्ति ककाणओ से ॥ १५ ॥ ३४१ ॥ वाला वला भूमिमणुक्कमन्ता पविज्जल कण्टइल महन्त । विवद्धतप्पेहि विवण्णचित्ते समीरिया कोट्टवलिं करेन्ति ॥ १६ ॥ ३४२ ॥ वेयालिए नाम महाभितावे एगायए पव्वयमन्तलिक्खे । हम्मन्ति तत्था वहुकूरकम्मा पर सहस्साण मुहुत्तगाण ॥ १७ ॥ ॥ ३४३ ॥ सवाहिया दुक्कडिणो थणन्ति अहो य राओ परितप्पमाणा । एगन्तकूडे नरगे महन्ते कूडेण तत्था विसमे हया उ ॥ १८ ॥ ३४४ ॥ भञ्जन्ति ण पुव्वमरी सरोस समुग्गरे ते मुसले गहेउ । ते भिन्नदेहा रुहिर वमन्ता ओमुद्धगा धरणितले पडन्ति ॥ १९ ॥ ३४५ ॥ अणासिया नाम महासियाला पागब्भिणो तत्थ सयावकोवा । खज्जन्ति तत्था वहुकूरकम्मा अदूरगा सखलियाहि वद्धा ॥ २० ॥ ॥ ३४६ ॥ सयाजला नाम नई भिदुग्गा पविज्जल लोहविलीणतत्ता । जसी भिदु-

मगाउ पवज्जमाणा एगायताणुक्कमणं करेन्ति ॥ २१ ॥ ३४७ ॥ एयाइ फासाइं फुसन्ति बालं निरन्तरं तत्थ चिरट्ठिईयं । न हम्ममाणस्स उ होइ ताणं एगो सयं पच्चणुहोइ दुक्खं ॥ २२ ॥ ३४८ ॥ जं जारिसं पुव्वमकासि कम्मं तमेव आगच्छइ संपराए । एगन्तदुक्खं भवमज्जणित्ता वेयन्ति दुक्खी तमणन्तदुक्खं ॥ २३ ॥ ॥ ३४९ ॥ एयाणि सोच्चा नरगाणि धीरे न हिंसए किंचण सव्वलोए । एगन्तदिट्ठी अपरिग्गहे उ बुज्झिज्ज लोगस्स वसं न गच्छे ॥ २४ ॥ ३५० ॥ एवं तिरिक्खे मणुयामरेसु चउरन्तणन्तं तयणुव्विवागं । स सव्वमेयं इइ वेयइत्ता कंखेज्ज कालं धुयमायरेज्ज ॥ २५ ॥ ३५१ ॥ त्ति बेमि ॥ **निरयविभत्तियज्झयणं पञ्चमं ॥**

सिरिवीरत्थुइयज्झयणे छट्ठे

पुच्छिंसु णं समणा माहणा य अगारिणो या परतित्थिया य । से केइ नेगन्तहियं धम्ममाहु अणेलिसं साहुसमिक्खयाए ॥ १ ॥ ३५२ ॥ कहं च नाणं कह दंसणं से सीलं कहं नायसुयस्स आसि । जाणासि णं भिक्खु जहातहेणं अहासुयं बूहि जहा निसन्तं ॥ २ ॥ ३५३ ॥ खेयन्नए से कुसलासुपन्ने अणन्तनाणी य अणन्तदंसी । जससिणो चक्खुपहे ठियस्स जाणाहि धम्मं च धिइं च पेहि ॥ ३ ॥ ३५४ ॥ उड्ढं अहे य तिरियं दिसासु तसा य जे थावर जे य पाणा । से निच्चनिच्चेहि समिक्ख पन्ने दीवे व धम्मं समियं उदाहु ॥ ४ ॥ ३५५ ॥ से सव्वदंसी अभिभूयनाणी निरामगन्धे धिइमं ठियप्पा । अणुत्तरे सव्वजगंसि विज्जं गन्था अईए अभए अणाऊ ॥ ५ ॥ ३५६ ॥ से भूइपन्ने अणिएअचारी ओहंतरे धीरे अणन्तचक्खू । अणुत्तरं तप्पइ सूरिए वा वइरोयणिन्दे व तमं पगासे ॥ ६ ॥ ३५७ ॥ अणुत्तरं धम्ममिणं जिणाणं नेया मुणी कासव आसुपन्ने । इन्दे व देवाण महाणुभावे सहस्सणेया दिवि णं विसिट्ठे ॥ ७ ॥ ३५८ ॥ से पन्नया अक्खयसागरे वा महोदही वा वि अणन्तपारे । अणाविले वा अकसाइ मुक्के सक्के व देवाहिवई जुईमं ॥ ८ ॥ ३५९ ॥ से वीरिएणं पडिपुण्णवीरिए सुदंसणे वा नगसव्वसेट्ठे । सुरालए वा वि मुदागरे से विरायए णेगगुणोववेए ॥ ९ ॥ ३६० ॥ सयं सहस्साण उ जोयणाणं तिकण्डगे पण्डगवेजयन्ते । से जोयणे नवनवते सहस्से उद्धुस्सियो हेट्ठ सहस्समेगं ॥ १० ॥ ॥ ३६१ ॥ पुट्ठे नभे चिट्ठइ भूमिवट्ठिए जं सूरिया अणुपरिवट्टयन्ति । से हेमवण्णे बहुनन्दणे य जंसी रइं वेययई महिन्दा ॥ ११ ॥ ३६२ ॥ से पव्वए सद्दमहप्पगासे विरायई कंचणमट्ठवण्णे । अणुत्तरे गिरिसु य पव्वदुग्गे गिरीवरे से जलिए व भोमे

॥ १२ ॥ ३६३ ॥ महीइ मज्झम्मि ठिए नगिन्दे पन्नायए सूरियसुद्धलेसे । एव सिरीए उ स भूरिवण्णे मणोरमे जोयइ अच्चिमाली ॥ १३ ॥ ३६४ ॥ सुदसणस्सेव जसो गिरिस्स पवुच्चई महओ पव्वयस्स । एओवमे समणे नायपुत्ते जाईजसोदसण-नाणसीले ॥ १४ ॥ ३६५ ॥ गिरीवरे वा निसहाययाणं रुयए व सेट्ठे वलयाययाण । तओवमे से जगभूइपन्ने मुणीण मज्झे तमुदाहु पन्ने ॥ १५ ॥ ३६६ ॥ अणुत्तर धम्ममुईरइत्ता अणुत्तर झाणवर झियाइ । सुसुक्कसुक्क अपगण्डसुक्क सखिन्दुएगन्तव-दायसुक्क ॥ १६ ॥ ३६७ ॥ अणुत्तरग्ग परम महेसी असेसकम्म स विसोहइत्ता । सिद्धिं गए साइमणन्तपत्ते नाणेण सीलेण य दसणेण ॥ १७ ॥ ३६८ ॥ रुक्खेसु णाए जह सामली वा जस्सि रइ वेययई सुवण्णा । वणेसु वा नन्दणमाहु सेट्ठ नाणेण सीलेण य भूइपन्ने ॥ १८ ॥ ३६९ ॥ थणिय व सद्दाण अणुत्तरे उ चन्दो व ताराण महाणुभावे । गन्धेसु वा चन्दणमाहु सेट्ठ एवं मुणीण अपडिन्नमाहु ॥१९॥३७०॥ जहा सयभू उदहीण सेट्ठे नागेसु वा धरणिन्दमाहु सेट्ठ । खोओदए वा रस वेजयन्ते तवोवहाणे मुणि वेजयन्ते ॥ २० ॥ ३७१ ॥ हत्थीसु एरावणमाहु नाए सीहो मिगाण सलिलाण गङ्गा । पक्खीसु वा गरुळे वेणुदेवो निव्वाणवादीणिह नायपुत्ते ॥ २१ ॥ ॥ ३७२ ॥ जोहेसु नाए जह वीससेणे पुप्फेसु वा जह अरविन्दमाहु । खत्तीण सेट्ठे जह दन्तवक्के इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे ॥ २२ ॥ ३७३ ॥ दाणाण सेट्ठं अभयप्प-याणं सच्चेसु वा अणवज्ज वयन्ति । तवेसु वा उत्तम बम्भचेर लोगुत्तमे समणे नाय-पुत्ते ॥ २३ ॥ ३७४ ॥ ठिईण सेट्ठा लवसत्तमा वा सभा सुहम्मा व सभाण सेट्ठा । निव्वाणसेट्ठा जह सव्वधम्मा न नायपुत्ता परमत्थि नाणी ॥ २४ ॥ ३७५ ॥ पुढोवमे धुणइ विगयगेही न सनिहिं कुव्वइ आसुपन्ने । तरिउ समुद्दं व महाभवोघ अभयकरे वीर अणन्तचक्खू ॥ २५ ॥ ३७६ ॥ कोह च माण च तहेव माय लोभं चउत्थ अज्झत्तदोसा । एयाणि वन्ता अरहा महेसी न कुव्वई पाव न कारवेइ ॥ २६ ॥ ३७७ ॥ किरियाकिरिय वेणइयाणुवाय अन्नाणियाण पडियच्च ठाण । से सव्ववाय इइ वेयइत्ता उवट्ठिए सजमदीहराय ॥ २७ ॥ ३७८ ॥ से वारिया इत्थि सराइभत्त उवहाणव दुक्खखयट्ठयाए । लोग विदित्ता आर पर च सव्वं पभू वारिय सव्ववार ॥ २८ ॥ ३७९ ॥ सोच्चा य धम्मं अरहन्तभासिय समाहियं अट्ठपदोव-सुद्ध । त सद्दहाणा य जणा अणाऊ इन्दा व देवाहिव आगमिस्सन्ति ॥२९॥३८०॥ त्ति बेमि ॥ **सिरिवीरत्थुइज्झयणं छट्ठं** ॥

कुसीलपरिभासियज्झयणं सत्तमं

पुढवी य आऊ अगणी य वाऊ तण रुक्ख बीया य तसा य पाणा। जे अंडया जे य जराउ पाणा संसेयया जे रसयाभिहाणा॥ १॥ ३८१॥ एयाइं कायाइं पवेइयाइं एएसु जाणे पडिलेह सायं। एएण काएण य आयदंडे एएसु या विप्परियासुविंति॥ २॥ ३८२॥ जाईपहं अणुपरियट्टमाणे तसथावरेहिं विणिघायमेइ। से जाइ जाइं बहुकूरकम्मे जं कुव्वई मिज्जइ तेण बाले॥ ३॥ ३८३॥ अस्सिं च लोए अदुवा परत्था सयग्गसो वा तह अन्नहा वा। संसारमावन्न परं परं ते बंधन्ति वेयन्ति य दुण्णियाणि॥ ४॥ ३८४॥ जे मायरं वा पियरं च हिच्चा समणव्वए अगणि समारभिज्जा। अहाहु से लोए कुसीलधम्मे भूयाइं जे हिंसइ आयसाए॥ ५॥ ३८५॥ उज्जालओ पाण निवायएज्जा निव्वावओ अगणि निवायवेज्जा। तम्हा उ मेहावि समिक्ख धम्मं न पण्डिए अगणि समारभिज्जा॥ ६॥ ३८६॥ पुढवी वि जीवा आऊ वि जीवा पाणा य संपाइम संपयन्ति। संसेयया कट्ठसमस्सिया य एए दहे अगणि समारभन्ते॥ ७॥ ३८७॥ हरियाणि भूयाणि विलम्बगाणि आहार देहा य पुढो सियाइं। जे छिन्दई आयसुहं पडुच्च पागब्भि पाणे बहुणं तिवाई॥ ८॥ ३८८॥ जाइं च वुड्ढिं च विणासयन्ते बीयाइ अस्संजय आयदण्डे। अहाहु से लोए अणज्जधम्मे बीयाइ जे हिंसइ आयसाए॥ ९॥ ३८९॥ गब्भाइ मिज्जन्ति बुयाबुयाणा नरा परे पञ्चसिहा कुमारा। जुवाणगा मज्झिम थेरगा य चयन्ति ते आउखए पलीणा॥ १०॥ ३९०॥ संबुज्झहा जन्तवो माणुसत्तं दट्ठुं भयं बालिसेणं अलम्भो। एगन्तदुक्खे जरिए व लोए सकम्मुणा विप्परियासुवेइ॥ ११॥ ३९१॥ इहेग मूढा पवयन्ति मोक्खं आहारसंपज्जणवज्जणेणं। एगे य सीओदगसेवणेणं हुएण एगे पवयन्ति मोक्खं॥ १२॥ ३९२॥ पाओसिणाणाइसु नत्थि मोक्खो खारस्स लोणस्स अणासएणं। ते मज्जमंसं लसुणं च भोच्चा अन्नत्थ वासं परिकप्पयन्ति॥ १३॥ ३९३॥ उदगेण जे सिद्धिमुदाहरन्ति सायं च पायं उदगं फुसन्ता। उदगस्स फासेण सिया य सिद्धी सिज्झिंसु पाणा बहवे दगंसि॥ १४॥ ३९४॥ मच्छा य कुम्मा य सिरीसिवा य मग्गू य उट्टा दगरक्खसा य। अट्ठाणमेयं कुसला वयन्ति उदगेण जे सिद्धिमुदाहरन्ति॥ १५॥ ३९५॥ उदगं जई कम्ममलं हरेज्जा एवं सुहं इच्छामित्तमेव। अन्धं व नेयारमणुस्सरित्ता पाणाणि चेव विणिहन्ति मन्दा॥ १६॥ ३९६॥ पावाइं कम्माइं पकुव्वओ हि सिओदगं तु जइ तं हरेज्जा। सिज्झिंसु एगे दगसत्तघाई मुसं वयन्ते जलसिद्धिमाहु॥ १७॥ ३९७॥ हुएण जे सिद्धिमुदाहरन्ति सायं च पायं अगणिं फुसन्ता। एवं सिया

सिद्धि हवेज्ज तम्हा अगणिं फुसन्ताण कुकम्मिण पि ॥ १८ ॥ ३९८ ॥ अपरिक्ख
दिट्ठं न हु एव सिद्धी एहिन्ति ते घायमबुज्झमाणा । भूएहि जाण पडिलेह सायं
विज्जं गहाय तसथावरेहिं ॥ १९ ॥ ३९९ ॥ थणन्ति लुप्पन्ति तसन्ति कम्मी पुढो
जगा परिसंखाय भिक्खू । तम्हा विऊ विरओ आयगुत्ते दट्ठुं तसे या पडिसंहरेज्जा
॥ २० ॥ ४०० ॥ जे धम्मलद्धं विणिहाय भुंजे वियडेण साहट्टु य जे सिणाइं । जे
धोवई लूसयई व वत्थं अहाहु ते णागणियस्स दूरे ॥ २१ ॥ ४०१ ॥ कम्मं परिन्नाय
दगंसि धीरे वियडेण जीविज्ज य आदिमोक्खं । से बीयकन्दाइ अभुंजमाणे विरए
सिणाणाइसु इत्थियासु ॥ २२ ॥ ४०२ ॥ जे मायरं च पियरं च हिच्चा गारं तहा
पुत्तपसुं धणं च । कुलाइं जे धावइ साउगाइं अहाहु से सामणियस्स दूरे ॥ २३ ॥
॥ ४०३ ॥ कुलाइं जे धावइ साउगाइं आघाइ धम्मं उयराणुगिद्धे । अहाहु से
आयरियाण सयंसे जे लावएज्जा असणस्स हेऊ ॥ २४ ॥ ४०४ ॥ निक्खम्म दीणे
परभोयणम्मि मुहमंगलीए उयराणुगिद्धे । नीवारगिद्धे व महावराहे अदूरए एहिइ
घायमेव ॥ २५ ॥ ४०५ ॥ अन्नस्स पाणस्सिहलोइयस्स अणुप्पियं भासइ सेवमाणे ।
पासत्थयं चेव कुसीलयं च निस्सारए होइ जहा पुलाए ॥ २६ ॥ ४०६ ॥ अन्नाय-
पिण्डेण हियासएज्जा नो पूयणं तवसा आवहेज्जा । सद्देहि रूवेहि असज्जमाणे सव्वेहि
कामेहि विणीय गेहिं ॥ २७ ॥ ४०७ ॥ सव्वाइं संगाइं अइच्च धीरे सव्वाइं
दुक्खाइं तितिक्खमाणे । अखिले अगिद्धे अणिएयचारी अभयंकरे भिक्खु अणा-
विलप्पा ॥ २८ ॥ ४०८ ॥ भारस्स जाआ मुणि भुंजएज्जा कंखेज्ज पावस्स विवेग
भिक्खू । दुक्खेण पुट्ठे धुयमाइएज्जा संगामसीसे व परं दमेज्जा ॥ २९ ॥ ४०९ ॥
अवि हम्ममाणे फलगावतट्ठी समागमं कंखइ अन्तगस्स । निधूय कम्मं न पवंचुवेइ
अक्खक्खए वा सगडं ति बेमि ॥ ३० ॥ ४१० ॥ **कुसीलपरिभासियज्झयणं
सत्तमं ॥**

वीरियज्झयणे अट्ठमे

दुहा चेयं सुयक्खायं वीरियं ति पवुच्चई । किं नु वीरस्स वीरत्तं कहं चेयं पवुच्चई
॥ १ ॥ ४११ ॥ कम्ममेगे पवेदेन्ति अकम्मं वा वि सुव्वया । एएहिं दोहि ठाणेहिं
जेहिं दीसन्ति मच्चिया ॥ २ ॥ ४१२ ॥ पमायं कम्ममाहंसु अप्पमायं तहावरं ।
तब्भावादेसओ वा वि बालं पण्डियमेव वा ॥ ३ ॥ ४१३ ॥ सत्थमेगे तु सिक्खन्ता
अइवायाय पाणिणं । एगे मन्ते अहिज्जन्ति पाणभूयविहेडिणो ॥ ४ ॥ ४१४ ॥
मायिणो कट्टु माया य कामभोगे समारभे । हन्ता छेत्ता पगब्भित्ता आयसायाणु-

गामिणो ॥ ५ ॥ ४१५ ॥ मणसा वयसा चेव कायसा चेव अन्तसो । आरओ परओ वा वि दुहा वि य असंजया ॥ ६ ॥ ४१६ ॥ वेराइं कुव्वई वेरी तओ वेरेहिं रज्जई । पावोवगा य आरम्भा दुक्खफासा य अन्तसो ॥ ७ ॥ ४१७ ॥ संपरायं नियच्छन्ति अत्तदुक्कडकारिणो । रागदोसस्सिया बाला पावं कुव्वन्ति ते बहुं ॥ ८ ॥ ४१८ ॥ एवं सकम्मवीरियं बालाणं तु पवेइयं । इत्तो अकम्मवीरियं पण्डियाणं सुणेह मे ॥ ९ ॥ ॥ ४१९ ॥ दविए बन्धणुम्मुक्के सव्वओ छिन्नबन्धणे । पणोल्ल पावगं कम्मं सल्लं कंतइ अन्तसो ॥ १० ॥ ४२० ॥ नेयाउयं सुयक्खायं उवादाय समीहए । भुज्जो भुज्जो दुहावासं असुहत्तं तहा तहा ॥ ११ ॥ ४२१ ॥ ठाणी विविहठाणाणि चइस्सन्ति न संसओ । अणियए अयं वासे नायएहि सुहीहि य ॥ १२ ॥ ४२२ ॥ एवमायाय मेहावी अप्पणो गिद्धिमुद्धरे । आरियं उवसंपज्जे सव्वधम्ममकोवियं ॥ १३ ॥ ४२३ ॥ सहसम्मइए नच्चा धम्मसारं सुणेत्तु वा । समुवट्ठिए उ अणगारे पच्चक्खायपावए ॥ १४ ॥ ४२४ ॥ जं किंचुवक्कमं जाणे आउक्खेमस्स अप्पणो । तस्सेव अन्तरा खिप्पं सिक्खं सिक्खेज्ज पण्डिए ॥ १५ ॥ ४२५ ॥ जहा कुम्मे सअङ्गाइं सए देहे समाहरे । एवं पावाइं मेहावी अज्झप्पेण समाहरे ॥ १६ ॥ ॥ ४२६ ॥ साहरे हत्थपाए य मणं पञ्चिन्दियाणि य । पावगं च परीणामं भासादोसं च तारिसं ॥ १७ ॥ ४२७ ॥ अणु माणं च मायं च तं परिन्नाय पण्डिए । सायागारवणिहुए उवसन्ते निहे चरे ॥ १८ ॥ ४२८ ॥ पाणे य नाइवाएज्जा अदिन्नं पि य नायए । साइयं न मुसं बूया एस धम्मे वुसीमओ ॥ १९ ॥ ४२९ ॥ अइक्कमन्ति वायाए मणसा वि न पत्थए । सव्वओ संवुडे दन्ते आयाणं सुसमाहरे ॥ २० ॥ ४३० ॥ कडं च कज्जमाणं च आगमिस्सं च पावगं । सव्वं तं नाणुजाणन्ति आयगुत्ता जिइन्दिया ॥ २१ ॥ ४३१ ॥ जे याऽबुद्धा महाभागा वीरा असमत्तदंसिणो । असुद्धं तेसि परक्कन्तं सफलं होइ सव्वसो ॥ २२ ॥ ४३२ ॥ जे य बुद्धा महाभागा वीरा सम्मत्तदंसिणो । सुद्धं तेसि परक्कन्तं अफलं होइ सव्वसो ॥ २३ ॥ ४३३ ॥ तेसिं पि न तवो सुद्धो निक्खन्ता जे महाकुला । जं नेवन्ने वियाणन्ति न सिलोगं पवेज्जए ॥ २४ ॥ ४३४ ॥ अप्पपिण्डासि पाणासि अप्पं भासेज्ज सुव्वए । खन्ते भिनिव्वुडे दन्ते वीयगिद्धी सया जए ॥ २५ ॥ ४३५ ॥ झाणजोगं समाहट्टु कायं विउसेज्ज सव्वसो । तितिक्खं परमं नच्चा आमोक्खाए परिव्वएज्जासि ॥ २६ ॥ ४३६ ॥ त्ति बेमि ॥ **वीरियज्झयणं अट्ठमं ॥**

धम्मज्झयणे नवमे

१ कयरे धम्मे अक्खाए माहणेण मईमया । अञ्जु धम्म जहातच्च जिणाण त सुणेह मे ॥ १ ॥ ४३७ ॥ माहणा खत्तिया वेस्सा चण्डाला अदु वोक्सा । एसिया वेसिया सुद्दा जे य आरम्भनिस्सिया ॥ २ ॥ ४३८ ॥ परिग्गहनिविट्ठाण पाव तेसिं पवड्ढई । आरम्भसभिया कामा न ते दुक्खविमोयगा ॥ ३ ॥ ४३९ ॥ आघायकिच्चमाहेउ नाइओ विसएसिणो । अन्ने हरन्ति तं वित्त कम्मी कम्मेहि किच्चई ॥ ४ ॥ ४४० ॥ माया पिया ण्हुसा भाया भज्जा पुत्ता य ओरसा । नाल ते तव ताणाय लुप्पन्तस्स सकम्मुणा ॥ ५ ॥ ४४१ ॥ एयमट्ठ सपेहाए परमट्ठाणुगामिय । निम्ममो निरहकारो चरे भिक्खू जिणाहिय ॥ ६ ॥ ४४२ ॥ चिच्चा वित्त च पुत्ते य नाइओ य परिग्गह । चिच्चा णॅ अन्तग सोय निरवेक्खो परिव्वए ॥ ७ ॥ ४४३ ॥ पुढवी अगणी वाऊ तणरुक्ख सबीयगा । अण्डया पोयजराऊ रससंसेयउब्भिया ॥ ८ ॥ ४४४ ॥ एएहिं छहिं काएहि त विज्ज परिजाणिया । मणसा कायवक्केण नारम्भी न परिग्गही ॥ ९ ॥ ४४५ ॥ मुसावाय वहिद्ध च उग्गहं च अजाइया । सत्थादाणाइ लोगसि त विज्ज परिजाणिया ॥ १० ॥ ४४६ ॥ पलिउञ्चण च भयण च थण्डिल्लुस्सयणाणि य । धूणादाणाइ लोगसि त विज्जं परिजाणिया ॥ ११ ॥ ४४७ ॥ धोयणं रयण चेव वत्थीकम्म विरेयण । वमणञ्जणपलीमथ तं विज्ज परिजाणिया ॥ १२ ॥ ४४८ ॥ गन्धमल्लसिणाण च दन्तपक्खालण तहा । परिग्गहित्थिकम्म च त विज्ज परिजाणिया ॥ १३ ॥ ४४९ ॥ उद्देसिय कीयगड पामिच्च चेव आहड । पूय अणेसणिज्ज च त विज्ज परिजाणिया ॥ १४ ॥ ४५० ॥ आसूणिमक्खिराग च गिद्धुवघायकम्मग । उच्छोलण च कक्कं च त विज्ज परिजाणिया ॥ १५ ॥ ४५१ ॥ सपसारी कयकिरिए पसिणाययणाणि य । सागारिय च पिण्ड च त विज्ज परिजाणिया ॥ १६ ॥ ४५२ ॥ अट्ठावय न सिक्खिज्जा वेहाईय च नो वए । हत्थकम्म विवाय च त विज्ज परिजाणिया ॥ १७ ॥ ४५३ ॥ पाणहाओ य छत्त च नालीय वालवीयण । परकिरिय अन्नमन्न च त विज्ज परिजाणिया ॥ १८ ॥ ४५४ ॥ उच्चार पासवण हरिएसु न करे मुणी । वियडेण वा वि साहट्टु नावमज्जे कयाइ वि ॥ १९ ॥ ४५५ ॥ परमत्ते अन्नपाण न भुञ्जेज्ज कयाइ वि । परवत्थ अचेलो वि त विज्ज परिजाणिया ॥ २० ॥ ४५६ ॥ आसन्दी पलियङ्के य निसिज्ज च गिहन्तरे । सपुच्छण सरण वा त विज्ज परिजाणिया ॥ २१ ॥ ४५७ ॥ जस किर्त्ति सिलोग च जा य वन्दणपूयणा । सव्वलोयसि जे कामा त विज्जं परिजाणिया ॥ २२ ॥ ४५८ ॥ जेणेह निव्वहे भिक्खू

अपसणं तहागिरं । अणुण्णवाणमन्नेसिं तं विज्जं परिजाणिया ॥ २३ ॥ ४५९ ॥ एवं उदाहु निग्गन्थे महावीरे महामुणी । अणन्तनाणदंसी से धम्मं, देसितवं सुयं ॥ २४ ॥ ४६० ॥ भासमाणो न भासेज्जा नेव वम्फेज्ज मम्मयं । मातिद्वाणं विवज्जेज्जा अणुचिन्तिय वियागरे ॥ २५ ॥ ४६१ ॥ तत्थिमा तइया भासा जं वइत्ताणुतप्पई । जं छन्नं तं न वत्तव्वं एसा आणा नियण्ठिया ॥ २६ ॥ ४६२ ॥ होलावायं सहीवायं गोयावायं च नो वए । तुमं तुमं ति अमणुन्नं सव्वसो तं न वत्तए ॥ २७ ॥ ४६३ ॥ अकुसीले सया भिक्खू नेव संसग्गियं भए । सुहरूवा तत्थुवस्सग्गा पडिबुज्झेज्ज ते विऊ ॥ २८ ॥ ४६४ ॥ नन्नत्थ अन्तराएणं परगेहे न निसीयए । गामकुमारियं किड्डं नाइवेलं हसे मुणी ॥ २९ ॥ ४६५ ॥ अणुस्सुओ उरालेसु जयमाणो परिव्वए । चरियाए अप्पमत्तो पुट्ठो तत्थ हियासए ॥ ३० ॥ ॥ ४६६ ॥ हम्ममाणो न कुप्पेज्ज वुच्चमाणो न संजले । सुमणे अहियासेज्जा न य कोलाहलं करे ॥ ३१ ॥ ४६७ ॥ लद्धे कामे न पत्थेज्जा विवेगे एवमाहिए । आयरियाइं सिक्खेज्जा बुद्धाण अन्तिए सया ॥ ३२ ॥ ४६८ ॥ सुस्सूसमाणो उवासेज्जा सुप्पन्नं सुतवस्सियं । वीरा जे अत्तपन्नेसी धिइमन्ता जिइन्दिया ॥ ३३ ॥ ॥ ४६९ ॥ गिहे दीवमपासन्ता पुरिसादाणिया नरा । ते वीरा बन्धणुम्मुक्का नावकङ्खन्ति जीवियं ॥ ३४ ॥ ४७० ॥ अगिद्धे सद्दफासेसु आरम्भेसु अणिस्सिए । सव्वं तं समयातीयं जमेयं लवियं बहु ॥ ३५ ॥ ४७१ ॥ अइमाणं च मायं च तं परिन्नाय पण्डिए । गारवाणि य सव्वाणि निव्वाणं संधए मुणि ॥ ३६ ॥ ४७२ ॥ त्ति बेमि ॥ **धम्मज्झयणं नवमं ॥**

समाहियज्झयणे दसमे

आघं मईमं अणुवीइ धम्मं अंजू समाहिं तमिमं सुणेह । अपडिन्न भिक्खू उ समाहिपत्ते अणियाण भूएसु परिव्वएज्जा ॥ १ ॥ ४७३ ॥ उड्ढं अहे यं तिरियं दिसासु तसा य जे थावर जे य पाणा । हत्थेहिं पाएहि य संजमित्ता अदिन्नमन्नेसु य नो गहेज्जा ॥ २ ॥ ४७४ ॥ सुयक्खायधम्मे वितिगिच्छतिण्णे लाढे चरे आयतुले पयासु । आयं न कुज्जा इह जीवियट्ठी चयं न कुज्जा सुतवस्सि भिक्खू ॥ ३ ॥ ॥ ४७५ ॥ सव्विन्दियाभिनिव्वुडे पयासु चरे मुणी सव्वउ विप्पमुक्के । पासाहि पाणे य पुढो वि सत्ते दुक्खेण अट्टे परितप्पमाणे ॥ ४ ॥ ४७६ ॥ एएसु बाले य पकुव्वमाणे आवट्टई कम्मसु पावएसु । अइवायओ कीरइ पावकम्मं निउञ्जमाणे उ करेइ कम्मं ॥ ५ ॥ ४७७ ॥ आदीणवित्ती व करेइ पावं मन्ता उ एगन्तसमाहिमाहु । बुद्धे समाहीय रए विवेगे पाणाइवाया विरए ठियप्पा ॥ ६ ॥ ४७८ ॥

सव्व जग तू समयाणुपेही पियमप्पिय कस्स वि नो करेज्जा । उट्ठाय दीणो य पुणो विसण्णो सपूयण चेव सिलोयकामी ॥ ७ ॥ ४७९ ॥ आहाकड चेव निकाम-मीणे नियामचारी य विसण्णमेसी । इत्थीसु सत्ते य पुढो य बाले परिग्गह चेव पकुव्वमाणे ॥ ८ ॥ ४८० ॥ वेराणुगिद्धे निचय करेइ इओ चुए से इहमट्ठदुग्गं । तम्हा उ मेहावि समिक्ख धम्मं चरे मुणि सव्वउ विप्पमुक्के ॥ ९ ॥ ४८१ ॥ आय न कुज्जा इह जीवियट्ठी असज्जमाणो य परिव्वएज्जा । निसम्मभासी य विणीय गिद्धिं हिंसन्नियं वा न कह करेज्जा ॥ १० ॥ ४८२ ॥ आहाकड वा न निकामएज्जा निकामयन्ते य न सथवेज्जा । धुणे उराल अणुवेहमाणे चिच्चा न सोय अणवेक्ख-माणो ॥ ११ ॥ ४८३ ॥ एगत्तमेय अभिपत्थएज्जा एवं पमोक्खो न मुस ति पास । एसप्पमोक्खो अमुसे वरे वि अकोहणे सच्चरए तवस्सी ॥ १२ ॥ ४८४ ॥ इत्थीसु या आरय मेहुणाओ परिग्गह चेव अकुव्वमाणे । उच्चावएसु विसएसु ताई निस्ससय भिक्खु समाहिपत्ते ॥ १३ ॥ ४८५ ॥ अरइं रइं च अभिभूय भिक्खू तणाइफास तह सीयफास । उण्हं च दस चऽहियासएज्जा सुब्भि व दुब्भि व तितिक्खएज्जा ॥ १४ ॥ ४८६ ॥ गुत्तो वईए य समाहिपत्तो लेस समाहट्टु परिव्वएज्जा । गिह न छाए न वि छायएज्जा समिस्सभाव पयहे पयासु ॥ १५ ॥ ४८७ ॥ जे केइ लोगम्मि उ अकिरियआया अन्नेण पुट्ठा धुयमादिसन्ति । आरम्भसत्ता गढिया य लोए धम्म न जाणन्ति विमोक्खहेउ ॥ १६ ॥ ४८८ ॥ पुढो य छन्दा इह माणवा उ किरियाकिरीय च पुढो य वाय । जायस्स बालस्स पकुव्व देह पवड्ढई वेरम-सजयस्स ॥ १७ ॥ ४८९ ॥ आउक्खय चेव अबुज्झमाणे ममाइ से साहसकारि मन्दे । अहो य राओ परितप्पमाणे अट्टेसु मूढे अजरामरे व्व ॥ १८ ॥ ४९० ॥ जहाहि वित्त पसवो य सव्व जे बन्धवा जे य पिया य मित्ता । लालप्पई से वि य एइ मोह अन्ने जणा तसि हरन्ति वित्त ॥ १९ ॥ ४९१ ॥ सीह जहा खुड्डमिगा चरन्ता दूरे चरन्ति परिसकमाणा । एव तु मेहावि समिक्ख धम्म दूरेण पाव परिवज्जएज्जा ॥ २० ॥ ४९२ ॥ सबुज्झमाणे उ नरे मईम पावाउ अप्पाण निवट्ट-एज्जा । हिसप्पसूयाईं दुहाईं मत्ता वेराणुबन्धीणि महब्भयाणि ॥ २१ ॥ ४९३ ॥ मुस न बूया मुणि अत्तगामी निव्वाणमेय कसिण समाहिं । सय न कुज्जा न य कारवेज्जा करन्तमन्न पि य नाणुजाणे ॥ २२ ॥ ४९४ ॥ सुद्धे सिया जाएँ न दूस-एज्जा अमुच्छिए न य अज्झोववन्ने । धिइम विमुक्के न य पूयणट्ठी न सिलोयगामी य परिव्वएज्जा ॥ २३ ॥ ४९५ ॥ निक्खम्म गेहाउ निरावकखी काय विउस्सेज्ज नियाणछिन्ने । नो जीविय नो मरणाभिकखी चरेज्ज भिक्खू वलया विमुक्के ॥ २४ ॥ ॥ ४९६ ॥ त्ति बेमि ॥ **समाहियज्झयणं दसमं** ॥

मग्गज्झयणे एयारहमे

कयरे मग्गे अक्खाए माहणेण मईमया। जं मग्गं उज्जु पाविता ओहं तरइ दुत्तरं ॥ १ ॥ ४९७ ॥ तं मग्गं णुत्तरं सुद्धं सव्वदुक्खविमोक्खणं। जाणासि णं जहा भिक्खू तं णो बूहि महामुणी ॥ २ ॥ ४९८ ॥ जइ णो केइ पुच्छिज्जा देवा अदुव माणुसा। तेसिं तु कयरं मग्गं आइक्खेज्ज कहाहि णो ॥ ३ ॥ ४९९ ॥ जइ वो केइ पुच्छिज्जा देवा अदुव माणुसा। तेसिमं पडिसाहिज्जा मग्गसारं सुणेह मे ॥ ४ ॥ ५०० ॥ अणुपुव्वेण महाघोरं कासवेण पवेइयं। जमायाय इओ पुव्वं समुद्दं ववहारिणो ॥ ५ ॥ ५०१ ॥ अतरिंसु तरन्तेगे तरिस्सन्ति अणागया। तं सोच्चा पडिवक्खामि जन्तवो तं सुणेह मे ॥ ६ ॥ ५०२ ॥ पुढवीजीवा पुढो सत्ता आउजीवा तहागणी। वाउजीवा पुढो सत्ता तणरुक्खा सबीयगा ॥ ७ ॥ ५०३ ॥ अहावरा तसा पाणा एवं छक्काय आहिया। एयावए जीवकाए णावरे कोइ विज्जई ॥ ८ ॥ ५०४ ॥ सव्वाहिं अणुजुत्तीहिं मइमं पडिलेहिया। सव्वे अक्कन्तदुक्खा य अओ सव्वे न हिंसया ॥ ९ ॥ ५०५ ॥ एयं खु नाणिणो सारं जं न हिंसइ किंचण। अहिंसा समयं चेव एतावन्तं वियाणिया ॥ १० ॥ ५०६ ॥ उड्ढं अहे य तिरियं जे केइ तसथावरा। सव्वत्थ विरइं विज्जा सन्ति निव्वाणमाहियं ॥ ११ ॥ ५०७ ॥ पभू दोसे निराकिच्चा न विरुज्झेज्ज केण वि। मणसा वयसा चेव कायसा चेव अन्तसो ॥ १२ ॥ ५०८ ॥ संवुडे से महापन्ने धीरे दत्तेसणं चरे। एसणासमिए णिच्चं वज्जयन्ते अणेसणं ॥ १३ ॥ ५०९ ॥ भूयाइं च समारम्भ तमुद्दिस्सा य जं कडं। तारिसं तु न गिण्हेज्जा अन्नपाणं सुसंजए ॥ १४ ॥ ५१० ॥ पूइकम्मं न सेविज्जा एस धम्मे वुसीमओ। जं किंचि अभिकंखेज्जा सव्वसो तं न कप्पए ॥ १५ ॥ ५११ ॥ हणन्तं नाणुजाणेज्जा आयगुत्ते जिइन्दिए। ठाणाइं सन्ति सड्ढीणं गामेसु नगरेसु वा ॥ १६ ॥ ५१२ ॥ तहा गिरं समारब्भ अत्थि पुण्णं ति नो वए। अहवा नत्थि पुण्णं ति एवमेयं महब्भयं ॥ १७ ॥ ५१३ ॥ दाणट्ठया य जे पाणा हम्मन्ति तसथावरा। तेसिं सारक्खणट्ठाए तम्हा अत्थि त्ति नो वए ॥ १८ ॥ ५१४ ॥ जेसिं तं उवकप्पन्ति अन्नपाणं तहाविहं। तेसिं लाभन्तरायं ति तम्हा नत्थि त्ति नो वए ॥ १९ ॥ ५१५ ॥ जे य दाणं पसंसन्ति वहमिच्छन्ति पाणिणं। जे य णं पडिसेहन्ति वित्तिच्छेयं करन्ति ते ॥ २० ॥ ५१६ ॥ दुहओ वि ते न भासन्ति अत्थि वा नत्थि वा पुणो। आयं रयस्स हेच्चा णं निव्वाणं पाउणन्ति ते ॥ २१ ॥ ५१७ ॥ निव्वाणं परमं बुद्धा नक्खत्ताण व चन्दिमा। तम्हा सया जए दन्ते निव्वाणं संधए मुणी ॥ २२ ॥ ५१८ ॥ वुज्झमाणाण पाणाणं किच्चन्ताण सकम्मुणा।

आघाइ साहु त दीव पइट्ठेसा पवुच्चई ॥ २३ ॥ ५१९ ॥ आयगुत्ते सया दन्ते छिन्नसोए अणासवे । जे धम्म सुद्धमक्खाइ पडिपुण्णमणेलिस ॥ २४ ॥ ५२० ॥ तमेव अवियाणन्ता अवुद्धा वुद्धमाणिणो । वुद्धा मो त्ति य मन्नन्ता अन्त एए समाहिए ॥ २५ ॥ ५२१ ॥ ते य बीयोदग चेव तमुद्दिस्सा य ज कड । भोच्चा झाण झियायन्ति अखेयन्नासमाहिया ॥ २६ ॥ ५२२ ॥ जहा ढका य कका य कुलला मग्गुका सिही । मच्छेसण झियायन्ति झाण ते कलुसाधम ॥ २७ ॥ ५२३ ॥ एव तु समणा एगे मिच्छदिट्ठी अणारिया । विसएसण झियायन्ति कका वा कलुसाहमा ॥ २८ ॥ ५२४ ॥ सुद्ध मग्ग विराहित्ता इहमेगे उ दुम्मई । उम्मग्गगया दुक्ख घायमेसन्ति त तहा ॥ २९ ॥ ५२५ ॥ जहा आसाविणिं नाव जाइअन्धो दुरूहिया । इच्छई पारमागन्तु अन्तरा य विसीयइ ॥ ३० ॥ ५२६ ॥ एव तु समणा एगे मिच्छदिट्ठी अणारिया । सोयं कसिणमावन्ना आगन्तारो महब्भय ॥ ३१ ॥ ५२७ ॥ इम च धम्ममायाय कासवेण पवेइय । तरे सोय महाघोर अत्तत्ताए परिव्वए ॥ ३२ ॥ ५२८ ॥ विरए गामधम्मेहिं जे केइ जगई जगा । तेसिं अत्तुवमायाए थाम कुव्व परिव्वए ॥ ३३ ॥ ५२९ ॥ अइमाण च माय च त परिन्नाय पण्डिए । सव्वमेय निराकिच्चा निव्वाण सधए मुणी ॥ ३४ ॥ ५३० ॥ सधए साहुधम्म च पावधम्म निराकरे । उवहाणवीरिए भिक्खू कोह माण न पत्थए ॥ ३५ ॥ ५३१ ॥ जे य वुद्धा अतिक्कन्ता जे य वुद्धा अणागया । सन्ति तेसिं पइट्ठाण भूयाण जगई जहा ॥ ३६ ॥ ५३२ ॥ अह ण वयमावन्न फासा उच्चावया फुसे । न तेसु विणिहण्णेज्जा वाएण व महागिरी ॥ ३७ ॥ ५३३ ॥ सवुडे से महापन्ने धीरे दत्तेसणं चरे । निव्वुडे कालमाकखी एव केवलिणो मय ॥ ३८ ॥ ५३४ ॥ ति बेमि ॥ **मग्गज्झयणं एयारहमं ॥**

समोसरणज्झयणे बारहमे

चत्तारि समोसरणाणिमाणि पावादुया जाइँ पुटो वयन्ति । किरिय अकिरियं विणय ति तइय अन्नाणमाहसु चउत्थमेव ॥ १ ॥ ५३५ ॥ अन्नाणिया त्ता कुसला वि सन्ता असथुया नो वितिगिच्छतिण्णा । अकोविया आहु अकोवियेहिं अणाणुवीइत्तु मुस वयन्ति ॥ २ ॥ ५३६ ॥ सच्च असच्च इति चिन्तयन्ता असाहु साहु त्ति उदाहरन्ता । जेमे जणा वेणइया अणेगे पुट्ठा वि भाव विणइसु नाम ॥ ३ ॥ ॥ ५३७ ॥ अणोवसखा इइ ते उदाहु अट्ठे स ओभासइ अम्ह एव । लवावसकी

य अणागयाइं नो किरियमाहंसु अकिरियवाई ॥ ४ ॥ ५३८ ॥ सम्मिस्सभावं च
गिरा गहीए से मुम्मुई होइ अणाणुवाई । इमं दुपक्खं इममेगपक्खं आहंसु
छलायणं च कम्मं ॥ ५ ॥ ५३९ ॥ ते एवमक्खन्ति अबुज्झमाणा विरूवरूवाणि
अकिरियवाई । जे मायइत्ता बहवे मणूसा भमन्ति संसारमणोवदग्गं ॥ ६ ॥
॥ ५४० ॥ नाइच्चो उवेइ न अत्थमेइ न चन्दिमा वड्ढइ हायई वा । सलिला न
सन्दन्ति न वन्ति वाया वंझो नियओ कसिणे हु लोए ॥ ७ ॥ ५४१ ॥ जहा हि
अन्धे सह जोइणा वि रूवाइं नो पस्सइ हीणनेत्ते । सन्तं पि ते एवमकिरियवाई
किरियं न पस्सन्ति निरुद्धपन्ना ॥ ८ ॥ ५४२ ॥ संवच्छरं सुविणं लक्खणं च
निमित्तदेहं च उप्पाइयं च । अट्ठंगमेयं बहवे अहित्ता लोगंसि जाणन्ति अणागयाइं
॥ ९ ॥ ५४३ ॥ केई निमित्ता तहिया भवन्ति केसिंचि तं विप्पडिएइ नाणं । ते
विज्जभावं अणहिज्जमाणा आहंसु विज्जा परिमोक्खमेव ॥ १० ॥ ५४४ ॥ ते एवम-
क्खन्ति समिच्च लोगं तहा तहा समणा माहणा य । सयंकडं नन्नकडं च दुक्खं
आहंसु विज्जाचरणं पमोक्खं ॥ ११ ॥ ५४५ ॥ ते चक्खु लोगंसिह नायगा उ
मग्गाणुसासन्ति हियं पयाणं । तहा तहा सासयमाहु लोए जंसी पया माणव संप-
गाढा ॥ १२ ॥ ५४६ ॥ जे रक्खसा वा जमलोइया वा जे वा सुरा गन्धव्वा य
काया । आगासगामी य पुढोसिया जे पुणो पुणो विप्परियासुवेन्ति ॥ १३ ॥
॥ ५४७ ॥ जमाहु ओहं सलिलं अपारगं जाणाहि णं भवगहणं दुमोक्खं । जंसी
विसन्ना विसयंगणाहिं दुहओ वि लोयं अणुसंचरन्ति ॥ १४ ॥ ५४८ ॥ न
कम्मुणा कम्म खवेन्ति बाला अकम्मुणा कम्म खवेन्ति धीरा । मेहाविणो लोभ-
मयावईया संतोसिणो नो पकरेन्ति पावं ॥ १५ ॥ ५४९ ॥ ते तीयउप्पन्नमणा-
गयाइं लोगस्स जाणन्ति तहागयाइं । नेयारो अन्नेसि अणन्ननेया बुद्धा हु ते अन्त-
कडा भवन्ति ॥ १६ ॥ ५५० ॥ ते नेव कुव्वन्ति न कारवेन्ति भूयाहिसंकाइ
दुगुंछमाणा । सया जया विप्पणमन्ति धीरा विण्णत्ति धीरा य हवन्ति एगे
॥ १७ ॥ ५५१ ॥ डहरे य पाणे वुड्ढे य पाणे ते आयओ पासइ सव्वलोए ।
उव्वेहई लोगमिणं महन्तं बुद्धेऽपमत्तेसु परिव्वएज्जा ॥ १८ ॥ ५५२ ॥ जे आयओ
परओ वा वि नच्चा अलमप्पणो होन्ति अलं परेसिं । तं जोइभूयं च सयावसेज्जा
जे पाउकुज्जा अणुवीइ धम्मं ॥ १९ ॥ ५५३ ॥ अत्ताण जो जाणइ जो य लोगं
गइं च जो जाणइ नागइं च । जो सासयं जाण असासयं च जाइं च मरणं च
जणोववायं ॥ २० ॥ ५५४ ॥ अहो वि सत्ताण विउट्टणं च जो आसवं जाणइ
संवरं च । दुक्खं च जो जाणइ निज्जरं च सो भासिउमरिहइ किरियवायं ॥ २१ ॥

॥ ५५५ ॥ सद्देसु रूवेसु असज्जमाणे गन्धेसु रसेसु अदुस्समाणे । नो जीविय नो मरणाहिकखी आयाणगुत्ते वलया विमुक्के ॥ २२ ॥ ५५६ ॥ त्ति बेमि ॥ **समोसरणज्झयणं बारहमं ॥**

आहत्तहीयज्झयणे तेरहमे

आहत्तहीय तु पवेयइस्स नाणप्पकार पुरिसस्स जाय । सओ य धम्म असओ असील सन्ति असन्ति करिस्सामि पाउ ॥ १ ॥ ५५७ ॥ अहो य राओ य समुट्ठिएहिं तहागएहिं पडिलब्भ धम्म । समाहिमाघायमजोसयन्ता सत्थारमेवं फरुस वयन्ति ॥ २ ॥ ५५८ ॥ विसोहियं ते अणुकाहयन्ते जे आयभावेण वियागरेज्जा । अट्ठाणिए होइ बहूगुणाण जे नाणसकाइ मुस वएज्जा ॥ ३ ॥ ५५९ ॥ जे यावि पुट्ठा पलिउञ्चयन्ति आयाणमट्ठं खलु वञ्चइत्ता । असाहुणो ते इह साहुमाणी मायण्णि एस्सन्ति अणन्तघाय ॥ ४ ॥ ५६० ॥ जे कोहणे होइ जयट्ठभासी विओसिय जे उ उदीरएज्जा । अन्धे व से दण्डपह गहाय अविओसिए धासइ पावकम्मी ॥ ५ ॥ ५६१ ॥ जे विग्गहीए अन्नायभासी न से समे होइ अझञ्झपत्ते । ओवायकारी य हिरीमणे य एगन्तदिट्ठी य अमाइरूवे ॥ ६ ॥ ५६२ ॥ से पेसले सुहुमे पुरिसजाए जच्चन्निए चेव सुउज्जुयारे । बहु पि अणुसासिएँ जे तहच्चा समे हु से होइ अझञ्झपत्ते ॥ ७ ॥ ५६३ ॥ जे यावि अप्प वसुम ति मत्ता सखाय वाय अपरिक्ख कुज्जा । तवेण वाह सहिउ त्ति मत्ता अन्न जण पस्सइ बिम्बभूय ॥ ८ ॥ ५६४ ॥ एगन्तकूडेण उ से पलेइ न विज्जई मोणपयसि गोत्ते । जे माणणट्ठेण विउक्कसेज्जा वसुमन्नतरेण अबुज्झमाणे ॥ ९ ॥ ५६५ ॥ जे माहणे खत्तियजायए वा तहुग्गपुत्ते तह लेच्छई वा । जे पव्वईए परदत्तभोई गोत्ते न जे थब्भइ माणबद्धे ॥ १० ॥ ५६६ ॥ न तस्स जाई व कुल व ताण नन्नत्थ विज्जाचरण सुचिण्ण । निक्खम्म से सेवइऽगारिकम्म न से पारए होइ विमोयणाए ॥ ११ ॥ ५६७ ॥ निक्किंचणे भिक्खु सुलूहजीवी जे गारव होइ सिलोगकामी । आजीवमेय तु अबुज्झमाणो पुणो पुणो विप्परियासुवेन्ति ॥ १२ ॥ ५६८ ॥ जे भासव भिक्खु सुसाहुवाई पडिहाणव होइ विसारए य । आगाढपन्ने सुविभावियप्पा अन्नं जण पन्नया परिहवेज्जा ॥ १३ ॥ ५६९ ॥ एव न से होइ समाहिपत्ते जे पन्नव भिक्खु विउक्कसेज्जा । अहवा वि जे लाहमयावलित्ते अन्न जण खिंसइ बालपन्ने ॥ १४ ॥ ५७० ॥ पन्नामय चेव तवोमय च निन्नामए गोयमय च भिक्खू ।

आजीवगं चेव चउत्थमाहु से पण्डिए उत्तमपोग्गले से ॥ १५ ॥ ५७१ ॥ मयाईं एयाईं विगिञ्च धीरा न ताणि सेवन्ति सुधीरधम्मा । ते सव्वगोत्तावगया महेसी उच्चं अगोत्तं च गतिं वयन्ति ॥ १६ ॥ ५७२ ॥ भिक्खू मुयच्चे तह दिट्ठधम्मे गामं च नगरं च अणुप्पविस्सा । से एसणं जाणमणेसणं च अन्नस्स पाणस्स अणाणुगिद्धे ॥ १७ ॥ ५७३ ॥ अरइं रइं च अभिभूय भिक्खू बहूजणे वा तह एगचारी । एगन्तमोणेण वियागरेज्जा एगस्स जन्तो गइरागईं य ॥ १८ ॥ ॥ ५७४ ॥ सयं समेच्चा अदुवा वि सोच्चा भासेज्ज धम्मं हिययं पयाणं । जे गरहिया सणियाणप्पओगा न ताणि सेवन्ति सुधीरधम्मा ॥ १९ ॥ ५७५ ॥ केसिंचि तक्काइ अबुज्झ भावं खुद्दं पि गच्छेज्ज असद्दहाणे । आउस्स कालाइयारं वघाए लद्धाणुमाणे य परेसु अट्ठे ॥ २० ॥ ५७६ ॥ कम्मं च छन्दं च विगिञ्च धीरे विणइज्ज उ सव्वउ आयभावं । रूवेहिं लुप्पन्ति भयावहेहिं विज्जं गहाया तसथावरेहिं ॥ २१ ॥ ५७७ ॥ न पूयणं चेव सिलोयकामी पियमप्पियं कस्सइ नो करेज्जा । सव्वे अणट्ठे परिवज्जयन्ते अणाउले या अकसाइ भिक्खू ॥ २२ ॥ ॥ ५७८ ॥ आहत्तहीयं समुपेहमाणे सव्वेहिं पाणेहिं निहाय दण्डं । नो जीवियं नो मरणाहिकंखी परिव्वएज्जा वलया विमुक्के ॥ २३ ॥ ५७९ ॥ त्ति बेमि ॥

आहत्तहीयज्झयणं तेरहमं ॥

गन्थज्झयणे चोद्दहमे

गन्थं विहाय इह सिक्खमाणो उट्ठाय सुबम्भचेरं वसेज्जा । ओवायकारी विणयं सुसिक्खे जे छेय से विप्पमायं न कुज्जा ॥ १ ॥ ५८० ॥ जहा दियापोयमपत्तजायं सावासगा पविउं मन्नमाणं । तमचाइयं तरुणमपत्तजायं ढंकाइ अव्वत्तगमं हरेज्जा ॥ २ ॥ ५८१ ॥ एवं तु सेहं पि अपुट्ठधम्मं निस्सारियं वुसिमं मन्नमाणा । दियस्स छायं व अपत्तजायं हरिंसु णं पावधम्मा अणेगे ॥ ३ ॥ ५८२ ॥ ओसाणमिच्छे मणुए समाहिं अणोसिए णन्तकरिं ति नच्चा । ओभासमाणे दवियस्स वित्तं न निक्कसे बहिया आसुपन्नो ॥ ४ ॥ ५८३ ॥ जे ठाणओ य सयणासणे य परक्कमे यावि सुसाहुजुत्ते । समिईसु गुत्तीसु य आयपन्ने वियागरिं ते य पुढो वएज्जा ॥५॥५८४॥ सद्दाणि सोच्चा अदु भेरवाणि अणासवे तेसु परिव्वएज्जा । निद्दं च भिक्खू न पमाय कुज्जा कहंकहं वा वितिगिच्छतिण्णे ॥ ६ ॥ ५८५ ॥ डहरेण वुड्ढेणऽणुसासिए उ राइणिएणावि समव्वएण । सम्मं तयं थिरओ नाभिगच्छे निज्जन्तए वावि अपारए से ॥ ७ ॥ ५८६ ॥ विउट्ठिएण समयाणुसिट्ठे डहरेण वुड्ढेण उ चोइए य । अच्चुट्ठि-

याए घडदासिए वा अगारिण वा समयाणुसिट्ठे ॥ ८ ॥ ५८७ ॥ न तेसु कुज्झे न य पव्वहेज्जा न यावि किंची फरुस वएज्जा । तहा करिस्स ति पडिस्सुणेज्जा सेय खु मेयं न पमाय कुज्जा ॥ ९ ॥ ५८८ ॥ वणसि मूढस्स जहा अमूढा मग्गाणुसासन्ति हिय पयाण । तेणेव मज्झं इणमेव सेय ज मे बुहा समणुसासयन्ति ॥१०॥५८९॥ अह तेण मूढेण अमूढगस्स कायव्व पूया सविसेसजुत्ता । एओवमं तत्थ उदाहु वीरे अणुगम्म अत्थ उवणेइ सम्म ॥ ११ ॥ ५९० ॥ नेया जहा अन्धकारसि राओ मग्ग न जाणाइ अपस्समाणे । से सूरियस्स अब्भुग्गमेण मग्ग वियाणाइ पगासियसि ॥ १२ ॥ ५९१ ॥ एवं तु सेहे वि अपुट्ठधम्मे धम्म नजाणाइ अबुज्झमाणे । से कोविए जिणवयणेण पच्छा सूरोदए पासइ चक्खुणेव ॥ १३ ॥ ५९२ ॥ उड्ढ अहे यं तिरियं दिसासु तसा य जे थावर जे य पाणा । सया जए तेसु परिव्वएज्जा मणप्पओस अविकम्पमाणे ॥ १४ ॥ ५९३ ॥ कालेण पुच्छे समिय पयासु आइक्खमाणो दवियस्स वित्त । तं सोयकारी य पुढो पवेसे संखा इम केवलियं समाहिं ॥ १५ ॥ ५९४ ॥ अस्सिं सुठिच्चा तिविहेण तायी एएसु या सन्ति निरोहमाहु । ते एवमक्खन्ति तिलोगदसी न भुज्जमेयन्ति पमायसगं ॥ १६ ॥ ५९५ ॥ निसम्म से भिक्खु समीहियट्ठ पडिभाणव होइ विसारए य । आयाणअट्ठी वोदाणमोणं उवेच्च सुद्धेण उवेइ मोक्ख ॥ १७ ॥ ५९६ ॥ सखाइ धम्म च वियागरन्ति बुद्धा हु ते अन्तकरा भवन्ति । ते पारगा दोण्ह वि मोयणाए ससोधिय पण्हमुदाहरन्ति ॥ १८ ॥ ५९७ ॥ नो छायए नो वि य लूसएज्जा माण न सेवेज्ज पगासण च । न यावि पन्ने परिहास कुज्जा न याऽऽसियावाय वियागरेज्जा ॥ १९ ॥ ५९८ ॥ भूयाभिसकाइ दुगुञ्छमाणे न निव्वहे मन्तपएण गोय । न किंचिमिच्छे मणुए पयासु असाहुधम्माणि न सवएज्जा ॥ २० ॥ ५९९ ॥ हास पि नो सधइ पावधम्मे ओए तहीय फरुस वियाणे । नो तुच्छए नो य विकथइज्जा अणाइले या अकसाइ भिक्खू ॥ २१ ॥ ६०० ॥ सकेज्ज याऽसकियभाव भिक्खू विभज्जवाय च वियागरेज्जा । भासादुय धम्मसमुट्ठिएहिं वियागरेज्जा समयासुपन्ने ॥ २२ ॥ ६०१ ॥ अणुगच्छमाणे वितह विजाणे तहा तहा साहु अकक्कसेण । न कत्थई भास विहिंसइज्जा निरुद्धग वावि न दीहइज्जा ॥ २३ ॥ ६०२ ॥ समालवेज्जा पडिपुण्णभासी निसामिया समियाअट्ठदसी । आणाइ सुद्ध वयण भिउञ्जे अभिसधए पावविवेग भिक्खू ॥ २४ ॥ ६०३ ॥ अहावुइयाइ सुसिक्खएज्जा जइज्जया नाइवेल वएज्जा । से दिट्ठिम दिट्ठि न लूसएज्जा से जाणइ भासिउ त समाहिं ॥२५॥६०४॥ अलूसए नो पच्छन्नभासी नो सुत्तमत्थ च करेज्ज ताई । सत्थारभत्ती अणुवीइ वाय

॥ २० ॥ ६२६ ॥ अणुत्तरे य ठाणे से कासवेण पवेइए । जं किच्चा निव्वुडा एगे निट्ठं पावन्ति पण्डिया ॥ २१ ॥ ६२७ ॥ पण्डिए वीरियं लद्धुं निग्घायाय पवत्तगं धुणे पुव्वकडं कम्मं नवं वा वि न कुव्वई ॥ २२ ॥ ६२८ ॥ न कुव्वई महावीरे अणुपुव्वकडं रयं । रयसा संमुहीभूया कम्मं हेच्चाण जं मयं ॥ २३ ॥ ६२९ ॥ जं मयं सव्वसाहूणं तं मयं सल्लगत्तणं । साहइत्ताण तं तिण्णा देवा वा अभविंसु ते ॥२४॥६३०॥ अभविंसु पुरा धीरा आगमिस्सा वि सुव्वया । दुन्निबोहस्स मग्गस्स अन्तं पाउकरा तिण्णे ॥२५॥६३१॥ त्ति बेमि ॥ **आयाणियज्झयणं पण्णरहमं ॥**

गाहज्झयणे सोळसमे

अहाह भगवं—एवं से दन्ते दविए वोसट्ठकाए त्ति वच्चे माहणे त्ति वा १ समणे त्ति वा २ भिक्खु त्ति वा ३ निग्गन्थे त्ति वा ४ । पडिआह-भन्ते कहं नु दन्ते दविए वोसट्ठकाए त्ति वच्चे माहणे त्ति वा समणे त्ति वा भिक्खु त्ति वा निग्गन्थे त्ति वा । तं नो बूहि महामुणी ॥ इति विरए सव्वपावकम्मेहिं पिज्जदोसकलह० अब्भक्खाण० पेसुन्न० परपरिवाय० अरइरइ० मायामोस० मिच्छादंसणसल्लविरए समिए सहिए सया जए नो कुज्झे नो माणी माहणे त्ति वच्चे ॥ १ ॥ ६३२ ॥ एत्थ वि समणे अनिस्सिए अणियाणे आयाणं च अइवायं च मुसावायं च बहिद्धं च कोहं च माणं च मायं च लोहं च पिज्जं च दोसं च इच्चेव जओ जओ आयाणं अप्पणो पद्दोसहेऊ तओ तओ आयाणाओ पुव्वं पडिविरए पाणाइवाया सिआ दन्ते दविए वोसट्ठकाए समणे त्ति वच्चे ॥ २ ॥ ६३३ ॥ एत्थ वि भिक्खू अणुन्नए विणीए नामए दन्ते दविए वोसट्ठकाए संविधुणीय विरूवरूवे परीसहोवसग्गे अज्झप्पजोगसुद्धादाणे उवट्ठिए ठिअप्पा संखाए परदत्तभोई भिक्खु त्ति वच्चे ॥ ३ ॥ ६३४ ॥ एत्थ वि निग्गन्थे एगे एगविऊ बुद्धे संछिन्नसोए सुसंजए सुसमिए सुसामाइए आयवायपत्ते विऊ दुहओ वि सोयपलिच्छिन्ने णो पूयणसक्कारलाभट्ठी धम्मट्ठी धम्मविऊ नियागं पडिवन्ने समियं चरे दन्ते दविए वोसट्ठकाए निग्गन्थे त्ति वच्चे ॥ ४ ॥ ६३५ ॥ से एवमेव जाणह जमहं भयन्तारो ॥ त्ति बेमि ॥ **गाहज्झयणं सोळसमं, पढमे सुयक्खन्धे समत्ते ॥**

पोण्डरियज्झयणे पढमे

सुयं मे आउसं तेणं भगवया एवमक्खायं । इह खलु पोण्डरीए नामज्झयणे

तस्स ण अयमट्ठे पन्नत्ते। से जहानामए पुक्खरिणी सिया बहुउदगा बहुसेया बहु-पुक्खला लद्धट्ठा पुण्डरिकिणी पासादिया दरिसणिया अभिरूवा पडिरूवा। तीसे ण पुक्खरिणीए तत्थ तत्थ देसे देसे तहिं तहिं बहवे पउमवरपोण्डरीया बुइया, अणु-पुव्वुट्ठिया ऊसिया रुइला वण्णमन्ता गन्धमन्ता रसमन्ता फासमन्ता पासादिया दरिसणिया अभिरूवा पडिरूवा। तीसे ण पुक्खरिणीए बहुमज्झदेसभाए एगे महं पउमवरपोण्डरीए बुइए, अणुपुव्वुट्ठिए ऊसिए रुइले वण्णमन्ते गन्धमन्ते रसमन्ते फासमन्ते पासादीए जाव पडिरूवे। सव्वावन्ति च ण तीसे पुक्खरिणीए तत्थ तत्थ देसे देसे तहिं तहिं बहवे पउमवरपोण्डरीया बुइया अणुपुव्वुट्ठिया ऊसिया रुइला जाव पडिरूवा। सव्वावन्ति च ण तीसे ण पुक्खरिणीए बहुमज्झदेसभाए एगे महं पउमवरपोण्डरीए बुइए अणुपुव्वुट्ठिए जाव पडिरूवे ॥ १ ॥ ६३६ ॥ अह पुरिसे पुरित्थिमाओ दिसाओ आगम्म त पुक्खरिणिं तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिचा पासइ त महं एग पउमवरपोण्डरीयं अणुपुव्वुट्ठिय ऊसिय जाव पडिरूव। तए ण से पुरिसे एव वयासी—अहमसि पुरिसे खेयन्ने कुसले पण्डिए वियत्ते मेहावी अवाले मग्गट्ठे मग्गविऊ मग्गस्स गइपरिक्कमन्नू। अहमेय पउमवरपोण्डरीय उन्निक्खिस्सामि त्ति कट्टु इइ वुया से पुरिसे अभिक्कमेइ त पुक्खरिणिं। जावं जाव च ण अभिक्कमेइ ताव ताव च ण महन्ते उदए महन्ते सेए पहीणे तीर अपत्ते पउमवरपोण्डरीय नो हव्वाए नो पाराए अन्तरा पुक्खरिणीए सेयसि निसण्णे पढमे पुरिसजाए ॥ २ ॥ ६३७ ॥ अहावरे दोच्चे पुरिसजाए। अह पुरिसे दक्खिणाओ दिसाओ आगम्म त पुक्खरिणिं तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिचा पासइ त महं एग पउमवर-पोण्डरीय अणुपुव्वुट्ठिय पासादीय जाव पडिरूव। त च एत्थ एगं पुरिसजाय पासइ पहीणतीरं अपत्तपउमवरपोण्डरीय नो हव्वाए नो पाराए अन्तरा पुक्खरिणीए सेयंसि निसण्ग। तए ण से पुरिसे त पुरिस एव वयासी—अहो णं इमे पुरिसे अखेयन्ने अकुसले अपण्डिए अवियत्ते अमेहावी वाले नो मग्गट्ठ नो मग्गविऊ नो मग्गस्स गइपरिक्कमन्नू ज ण एस पुरिसे। अहमसि खेयन्ने कुसले जाव पउमवरपोण्डरीय उन्निक्खिस्सामि। नो य खलु एय पउमवरपोण्डरीयं एव उन्निक्खेयव्व जहा ण एस पुरिसे मन्ने। अहमसि पुरिसे खेयन्ने कुसले पण्डिए वियत्ते मेहावी अवाले मग्गट्ठे मग्गविऊ मग्गस्स गइपरिक्कमन्नू, अहमेय पउमवरपोण्डरीयं उन्निक्खिस्सामि त्ति कट्टु इइ वुया से पुरिसे अभिक्कमे त पुक्खरिणिं। जाव जाव च ण अभिक्कमेइ ताव ताव च ण महन्ते उदए महन्ते सेए पहीणे तीर अपत्ते पउमवरपोण्डरीय नो हव्वाए नो पाराए अन्तरा पुक्खरिणीए सेयसि निसण्णे दोच्चे पुरिसजाए ॥ ३ ॥ ६३८ ॥

अहावरे तच्चे पुरिसजाए। अह पुरिसे पच्चत्थिमाओ दिसाओ आगम्म तं पुक्खरिणिं तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिच्चा पासइ तं एगं महं पउमवरपोण्डरीयं अणुपुव्वुट्ठियं जाव पडिरूवं। ते तत्थ दोण्णि पुरिसजाए पासइ पहीणे तीरं अपत्ते पउमवरपोण्डरीयं नो हव्वाए नो पाराए जाव सेयंसि निसण्णे। तए णं से पुरिसे एवं वयासी–अहो णं इमे पुरिसा अखेयन्ना अकुसला अपण्डिया अवियत्ता अमेहावी बाला नो मग्गट्ठा नो मग्गविऊ नो मग्गस्स गइपरिक्कमन्नू जं णं एए पुरिसा एवं मन्ने–अम्हे एयं पउमवरपोण्डरीयं उन्निक्खिस्सामो नो य खलु एयं पउमवरपोण्डरीयं एवं उन्निक्खेयव्वं जहा णं एए पुरिसा मन्ने। अहमंसि पुरिसे खेयन्ने कुसले पण्डिए वियत्ते मेहावी अबाले मग्गट्ठे मग्गविऊ मग्गस्स गइपरिक्कमन्नू अहमेयं पउमवरपोण्डरीयं उन्निक्खिस्सामि त्ति कट्टु इति वुच्चा से पुरिसे अभिक्कमे तं पुक्खरिणिं। जावं जावं च णं अभिक्कमे ताव तावं च णं महन्ते उदए महन्ते सेए जाव अन्तरा पुक्खरिणीए सेयंसि निसण्णे तच्चे पुरिसजाए ॥ ४ ॥ ६३९ ॥ अहावरे चउत्थे पुरिसजाए। अह पुरिसे उत्तराओ दिसाओ आगम्म तं पुक्खरिणिं तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिच्चा पासइ तं महं एगं पउमवरपोण्डरीयं अणुपुव्वुट्ठियं जाव पडिरूवं। ते तत्थ तिण्णि पुरिसजाए पासइ पहीणे तीरं अपत्ते जाव सेयंसि निसण्णे। तए णं से पुरिसे एवं वयासी–अहो णं इमे पुरिसा अखेयन्ना जाव नो मग्गस्स गइपरिक्कमन्नू जं णं एए पुरिसा एवं मन्ने–अम्हे एयं पउमवरपोण्डरीयं उन्निक्खिस्सामो नो य खलु एयं पउमवरपोण्डरीयं एवं उन्निक्खेयव्वं जहा णं एए पुरिसा मन्ने। अहमंसि पुरिसे खेयन्ने जाव मग्गस्स गइपरिक्कमन्नू, अहमेयं पउमवरपोण्डरीयं एवं उन्निक्खिस्सामि त्ति कट्टु इति वुच्चा से पुरिसे अभिक्कमे तं पुक्खरिणिं। जावं जावं च णं अभिक्कमे ताव तावं च णं महन्ते उदए महन्ते सेए जाव निसण्णे चउत्थे पुरिसजाए ॥ ५ ॥ ६४० ॥ अह भिक्खू लूहे तीरट्ठी खेयन्ने जाव गइपरिक्कमन्नू अन्नयराओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा आगम्म तं पुक्खरिणिं तीसे पुक्खरिणीए तीरे ठिच्चा पासइ तं महं एगं पउमवरपोण्डरीयं जाव पडिरूवं। ते तत्थ चत्तारि पुरिसजाए पासइ पहीणे तीरं अपत्ते जाव पउमवरपोण्डरीयं नो हव्वाए नो पाराए अन्तरा पुक्खरिणीए सेयंसि निसण्णे। तए णं से भिक्खू एवं वयासी–अहो णं इमे पुरिसा अखेयन्ना जाव नो मग्गस्स गइपरिक्कमन्नू जं एए पुरिसा एवं मन्ने अम्हे एयं पउमवरपोण्डरीयं उन्निक्खिस्सामो, नो य खलु एयं पउमवरपोण्डरीयं एवं उन्निक्खेयव्वं जहा णं एए पुरिसा मन्ने। अहमंसि भिक्खू लूहे तीरट्ठी खेयन्ने जाव गइपरिक्कमन्नू अहमेयं पउमवरपोण्डरीयं उन्निक्खिस्सामि त्ति कट्टु इति वुच्चा से भिक्खू

(रायवण्णओ जहा ओववाइए) जाव पसतडिम्बडमर रज्ज पसाहेमाणे विहरइ। तस्स णं रन्नो परिसा भवइ उग्गा उग्गपुत्ता भोगा भोगपुत्ता इक्खागाइ इक्खागाइ-पुत्ता नाया नायपुत्ता कोरव्वा कोरव्वपुत्ता भट्टा भट्टपुत्ता माहणा माहणपुत्ता लेच्छइ लेच्छइपुत्ता पसत्थारो पसत्थपुत्ता सेणावई सेणावइपुत्ता। तेसिं च ण एगइए सड्ढी भवइ काम त समणा वा माहणा वा सपहारिंसु गमणाए। तत्थ अन्नयरेणं धम्मेण पन्नत्तारो वय इमेणं धम्मेण पन्नवइस्सामो से एवमायाणह भयतारो जहा मए एस धम्मे सुयक्खाए सुपन्नत्ते भवइ। त जहा–उड्ढ पायतला अहे केसग्गमत्थया तिरिय तयपरियते जीवे एस आयापज्जवे कसिणे एस जीवे जीवइ, एस मए नो जीवइ, सरीरे धरमाणे धरइ विणट्ठम्मि य नो धरइ। एय त जीविय भवइ, आदहणाए परेहिं निज्जइ, अगणिझामिए सरीरे कवोयवण्णाणि अट्ठीणि भवंति, आसदीपचमा पुरिसा गाम पच्चागच्छति, एव असते असविज्जमाणे। जेसिं तं असते असविज्जमाणे तेसिं त सुयक्खाय भवइ–अन्नो भवइ जीवो अन्नं सरीर, तम्हा ते एवं नो विपडिवे-देति–अयमाउसो आया दीहे त्ति वा हस्से त्ति वा परिमण्डले त्ति वा वट्टे त्ति वा तसे त्ति वा चउरसे त्ति वा आयए त्ति वा छलंसिए त्ति वा अट्ठसे त्ति वा किण्हे त्ति वा नीले त्ति वा लोहियहालिद्दे त्ति वा सुक्किले त्ति वा सुब्भिगधे त्ति वा दुब्भिगंधे त्ति वा तित्ते त्ति वा कडुए त्ति वा कसाए त्ति वा अम्बिले त्ति वा महुरे त्ति वा कक्खडे त्ति वा मउए त्ति वा गुरुए त्ति वा लहुए त्ति वा सीए त्ति वा उसिणे त्ति वा निद्धे त्ति वा लुक्खे त्ति वा। एव असते असविज्जमाणे। जेसिं तं सुयक्खाय भवइ–अन्नो जीवो अन्न सरीर, तम्हा ते नो एवं उवलब्भति। से जहानामए–केइ पुरिसे कोसीओ असिं अभिनिव्वट्टित्ता ण उवदसेज्जा अयमाउसो असी अय कोसी, एवमेव नत्थि केइ पुरिसे अभिनिव्वट्टित्ता ण उवदसेत्तारो अयमाउसो आया इयं सरीर। से जहानामए केइ पुरिसे मुञ्जाओ इसिय अभिनिव्वट्टित्ता ण उवदंसेज्जा अयमाउसो मुञ्जे इय इसियं, एवमेव नत्थि केइ पुरिसे उवदंसेत्तारो अयमाउसो आया इय सरीर। से जहानामए–केइ पुरिसे मसाओ अट्ठिं अभिनिव्वट्टित्ता णं उवदसेज्जा अयमाउसो मसे अय अट्ठी, एवमेव नत्थि केइ पुरिसे उवदसेत्तारो अयमाउसो आया इयं सरीरं। से जहानामए–केइ पुरिसे करयलाओ आमलकं अभिनिव्वट्टित्ता ण उवदं-सेज्जा अयमाउसो करयले अयं आमलए, एवमेव नत्थि केइ पुरिसे उवदसेत्तारो अय-माउसो आया इय सरीर। से जहानामए–केइ पुरिसे दहीओ नवणीयं अभिनिव्व-ट्टित्ता ण उवदंसेज्जा अयमाउसो नवणीयं अय तु दही, एवमेव नत्थि केइ पुरिसे जाव सरीरं। से जहानामए–केइ पुरिसे तिलेहिंतो तेल्लं अभिनिव्वट्टित्ता ण उवदंसेज्जा

अयमाउसो तेल्ले अयं पिण्णाए, एवमेव जाव सरीरं। से जहानामए-केइ पुरिसे इक्खूओ खोयरस अभिनिव्वट्टित्ता ण उवदंसेज्जा अयमाउसो खोयरसे अय छोए, एवमेव जाव सरीर। से जहानामए-केइ पुरिसे अरणीओ अग्गि अभिनिव्वट्टित्ता ण उवदसेज्जा अयमाउसो अरणी अय अग्गी, एवमेव जाव सरीरं। एव असत्ते असविज्जमाणे। जेसिं त सुयक्खाय भवइ त जहा-अन्नो जीवो अन्न सरीरं। तम्हा ते मिच्छा॥ से हता त हणह खणह छणह डहह पयह आलुम्पह विलुम्पह सहसक्कारेह विपरामुसह, एयावया जीवे नत्थि परलोए। ते नो एव विप्पडिवेदेंति, त जहा-किरिया इ वा अकिरिया इ वा सुक्कडे इ वा दुक्कडे इ वा कल्लाणे इ वा पावए इ वा साहु इ वा असाहु इ वा सिद्धी इ वा असिद्धी इ वा निरए इ वा अणिरए इ वा। एव ते विरूवरूवेहिं कम्मसमारम्भेहिं विरूवरूवाइ कामभोगाइ समारभन्ति भोयणाए॥ एवं एगे पागब्भिया निक्खम्म मामग धम्म पन्नवेंति। त सद्दहमाणा त पत्तियमाणा त रोएमाणा साहु सुयक्खाए समणे त्ति वा माहणे त्ति वा काम खलु आउसो तुम पूययामि, त जहा-असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा वत्थेण वा पडिग्गहेण वा कम्बलेण वा पायपुञ्छणेण वा। तत्थेगे पूयणाए समाउट्टिंसु तत्थेगे पूयणाए निकाइंसु॥ पुव्वमेव तेसिं नाय भवइ-समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसू परदत्तभोइणो भिक्खुणो पाव कम्म नो करिस्सामो समुट्ठाए। ते अप्पणा अप्पडिविरया भवति, सयमाइयति अन्ने वि आइयावेंति अन्न पि आययत समणुजाणति एवमेव ते इत्थिकामभोगेहिं मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववन्ना लुद्धा रागदोसवसट्टा। ते नो अप्पाण समुच्छेदेंति ते नो पर समुच्छेदेंति ते नो अन्नाइ पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ समुच्छेदेंति, पहीणा पुव्वसजोग आयरिय मग्ग असपत्ता इति ते नो हव्वाए नो पाराए अतरा कामभोगेसु विसण्णा। इति पढमे पुरिसजाए तज्जीवतच्छरीरए त्ति आहिए॥ १॥ ६४८॥

अहावरे दोच्चे पुरिसजाए पचमहब्भूइए त्ति आहिज्जइ। इह खलु पाईण वा ६ सन्तेगइया मणुस्सा भवन्ति अणुपुव्वेण लोय उववन्ना, त जहा-आरिया वेगे अणारिया वेगे एव जाव दुरूवा वेगे। तेसिं च णं महं एगे राया भवइ महया एव चेव निरवसेस जाव सेणावइपुत्ता। तेसिं च ण एगइए सड्ढी भवति काम त समणा य माहणा य पहारिंसु गमणाए। तत्थ अन्नयरेणं धम्मेण पन्नत्तारो वय इमेण धम्मेणं पन्नवइस्सामो से एवमायाणह भयन्तारो जहा मए एस धम्मे सुअक्खाए सुपन्नत्ते भवइ। इह खलु पचमहब्भूया जेहिं नो विज्जइ किरिय त्ति वा अकिरिय त्ति वा सुक्कडे त्ति वा दुक्कडे त्ति वा कल्लाणे त्ति वा पावए त्ति वा साहु त्ति वा असाहु त्ति

वा सिद्धि त्ति वाअसिद्धि त्ति वा निरए त्ति वा अनिरए त्ति वा अवि अन्तसो तणमायमवि ॥ त च पिहुद्देसेणं पुढोभूयसमवाय जाणेज्जा । तं जहा पुढवी एगे महब्भूए, आऊ दुच्चे महब्भूए, तेऊ तच्चे महब्भूए, वाऊ चउत्थे महब्भूए, आगासे पञ्चमे महब्भूए । इच्चेए पञ्च महब्भूया अनिम्मिया अनिम्माविया अकडा नो कित्तिमा नो कडगा अणाइया अणिहणा अवञ्झा अपुरोहिया सतता सासया आयछट्ठा । पुण एगे एवमाहु–सओ नत्थि विणासो असओ नत्थि सभवो । एयावया व जीवकाए एयावया व अत्थिकाए एयावया व सव्वलोए, एय मुह लोगस्स करणयाए, अवि अन्तसो तणमायमवि । से किण किणावेमाणे हण घायमाणे पयं पयावेमाणे अवि अन्तसो पुरिसमवि कीणित्ता घायइत्ता एत्थ पि जाणाहि नत्थित्थ दोसो । ते नो एवं विप्पडिवेदेंति । त जहा–किरिया इ वा जाव अनिरए इ वा । एव ते विरूवरूवेहिं कम्मसमारभेहिं विरूवरूवाइ कामभोगाइं समारभति भोयणाए । एवमेव ते अणारिया विप्पडिवन्ना त सद्दहमाणा त पत्तियमाणा जाव ते नो हव्वाए नो पाराए अतरा कामभोगेसु विसण्णा । दोच्चे पुरिसजाए पञ्चमहब्भूइए त्ति आहिए ॥ १० ॥ ६४५ ॥ अहावरे तच्चे पुरिसजाए ईसरकारणिए त्ति आहिज्जइ । इह खलु पाईणं वा ६ सतेगइया मणुस्सा भवति अणुपुव्वेणं लोय उववन्ना । त जहा–आरिया वेगे जाव तेसिं च ण महते एगे राया भवइ जाव सेणावइपुत्ता । तेसिं च ण एगइए सड्ढी भवइ, काम त समणा य माहणा य पहारिंसु गमणाए जाव जहा मए एस धम्मे सुयक्खाए सुपन्नत्ते भवइ । इह खलु धम्मा पुरिसादिया पुरिसोत्तरिया पुरिसप्पणीया पुरिससभूया पुरिसपज्जोइया पुरिसमभिसमन्नागया पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठति । से जहानामए–गण्डे सिया सरीरे जाए सरीरे सवुड्ढे सरीरे अभिसमन्नागए सरीरमेव अभिभूय चिट्ठइ, एवमेव धम्मा पुरिसादिया जाव पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति । से जहानामए–अरई सिया सरीरे जाया सरीरे सवुड्ढा सरीरे अभिसमन्नागया सरीरमेव अभिभूय चिट्ठइ, एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया जाव पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठति से जहानामए–वम्मिए सिया पुढविजाए पुढविसवुड्ढे पुढविअभिसमन्नागए पुढविमेव अभिभूय चिट्ठइ, एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया जाव पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठति, से जहानामए–रुक्खे सिया पुढविजाए पुढविसवुड्ढे पुढविअभिसमन्नागए पुढविमेव अभिभूय चिट्ठइ, एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया जाव पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठति । से जहानामए–पुक्खरिणी सिया पुढविजाया जाव पुढविमेव अभिभूय चिट्ठइ, एवमेव धम्मा वि पुरिसादिया जाव पुरिसमेव अभिभूय चिट्ठंति । से जहानामए–उदगपुक्खले सिया उदगजाए जाव

पुरिसजाए नियइवाइए त्ति आहिए ॥ इच्चेए चत्तारि पुरिसजाया नाणापन्ना नाणाछंदा नाणासीला नाणादिट्ठी नाणारुई नाणारम्भा नाणाअज्झवसाणसंजुत्ता पहीणपुव्वसजोगा आरिय मग्ग असपत्ता इति ते नो हव्वाए नो पाराए अतरा कामभोगेसु विसण्णा ॥ १२ ॥ ६४७ ॥ से बेमि पाईण वा ६ सन्तेगइया मणुस्सा भवन्ति । त जहा–आरिया वेगे अणारिया वेगे उच्चागोया वेगे नीयागोया वेगे कायमन्ता वेगे हस्समन्ता वेगे सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे । तेसिं च ण खेत्तवत्थूणि परिग्गहियाणि भवति, तं जहा अप्पयरो वा भुज्जयरो वा । तेसिं च ण जणजाणवयाइ परिग्गहियाइ भवन्ति, तं जहा अप्पयरा भुज्जयरा वा । तहप्पगारेहिं कुलेहिं आगम्म अभिभूय एगे भिक्खायरियाए समुट्ठिया । सओ वा वि एगे नायओ (अणायओ) य उवगरण च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया । असओ वा वि एगे नायओ (अणायओ) य उवगरण च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया । [जे ते सओ वा असओ वा नायओ य अणायओ य उवगरण च विप्पजहाय भिक्खायरियाए समुट्ठिया] पुव्वमेव तेहिं नाय भवइ । त जहा–इह खलु पुरिसे अन्नमन्न ममट्ठाए एव विप्पडिवेदेंति । तं जहा–खेत्त मे वत्थू मे हिरण्ण मे सुवण्ण मे धण मे धन्न मे कस मे दूस मे विपुलधणकणगरयणमणिमोत्तियसखसिलप्पवालरत्तरयणसतसारसावएय मे । सद्दा मे रूवा मे गंधा मे रसा मे फासा मे । एए खलु मे कामभोगा अहमवि एएसिं । से मेहावी पुव्वामेव अप्पणो एव समभिजाणेज्जा । त जहा–इह खलु मम अन्नयरे दुक्खे रोगायके समुप्पज्जेज्जा अणिट्ठे अकते अप्पिए असुभे अमणुन्ने अमणामे दुक्खे नो सुहे । से हता भयतारो कामभोगाइ मम अन्नयर दुक्खं रोगायंक परियाइयह अणिट्ठ अकतं अप्पिय असुभ अमणुन्न अमणाम दुक्ख नो सुह । ता अह दुक्खामि वा सोयामि वा जूरामि वा तिप्पामि वा पीडामि वा परितप्पामि वा इमाओ मे अन्नयराओ दुक्खाओ रोगायकाओ पडिमोयह अणिट्ठाओ अकताओ अप्पियाओ असुभाओ अमणुन्नाओ अमणामाओ दुक्खाओ नो सुहाओ । एवमेव नो लद्धपुव्व भवइ । इह खलु कामभोगा नो ताणाए वा नो सरणाए वा । पुरिसे वा एगया पुव्विं कामभोगे विप्पजहइ, कामभोगा वा एगया पुव्विं पुरिस विप्पजहन्ति । अन्ने खलु कामभोगा अन्नो अहमसि । से किमंग पुण वय अन्नमन्नेहिं कामभोगेहिं मुच्छामो । इति सखाए णं वय च कामभोगेहिं विप्पजहिस्सामो । से मेहावी जाणेज्जा वहिरङ्गमेय इणमेव उवणीययराग । त जहा–माया मे पिया मे भाया मे भगिणी मे भज्जा मे पुत्ता मे धूया मे पेसा मे नत्ता मे सुण्हा मे सुहा मे पिया मे सहा मे सयणसगथसथुया मे । एए खलु मम नायओ

अहमंसि एएसिं। एवं से मेहावी पुव्वामेव अप्पणा एवं समभिजाणेज्जा। इह खलु मम अन्नयरे दुक्खे रोगायंके समुप्पज्जेज्जा अणिट्ठे जाव दुक्खे नो सुहे। से हंता भयंतारो नायओ इमं मम अन्नयरं दुक्खं रोगायंकं परियाइयह अणिट्ठं जाव नो सुहं। ता अहं दुक्खामि वा सोयामि वा जाव परितप्पामि वा, इमाओ मे अन्नयराओ दुक्खाओ रोगायंकाओ परिमोएह अणिट्ठाओ जाव नो सुहाओ, एवमेव नो लद्धपुव्वं भवइ। तेसिं वा वि भयंताराणं मम नाययाणं अन्नयरे दुक्खे रोगायंके समुप्पज्जेज्जा अणिट्ठे जाव नो सुहे, से हंता अहमेएसिं भयंताराणं नाययाणं इमं अन्नयरं दुक्खं रोगायंकं परियाइयामि अणिट्ठं जाव नो सुहं, मा मे दुक्खंतु वा जाव मा मे परितप्पंतु वा, इमाओ णं अन्नयराओ दुक्खाओ रोगायंकाओ परिमोएमि अणिट्ठाओ जाव नो सुहाओ, एवमेव नो लद्धपुव्वं भवइ। अन्नस्स दुक्खं अन्नो न परियाइयइ अन्नेण कडं अन्नो नो पडिसंवेदेइ पत्तेयं जायइ पत्तेयं मरइ पत्तेयं चयइ पत्तेयं उववज्जइ पत्तेयं झंझा पत्तेयं सन्ना पत्तेयं मन्ना एवं विन्नू वेयणा। इइ खलु नाइसंजोगा नो ताणाए वा नो सरणाए वा। पुरिसे वा एगया पुव्विं नाइसंजोगे विप्पजहइ, नाइसंजोगा वा एगया पुव्विं पुरिसं विप्पजहन्ति, अन्ने खलु नाइसंजोगा अन्नो अहमंसि, से किमंग पुण वयं अन्नमन्नेहिं नाइसंजोगेहिं मुच्छामो, इति संखाए णं वयं नाइसंजोगं विप्पजहिस्सामो। से मेहावी जाणेज्जा बहिरंगमेयं, इणमेव उवणीययरागं। तं जहा-हत्था मे पाया मे बाहा मे ऊरू मे उयरं मे सीसं मे सीलं मे आऊ मे बलं मे वण्णो मे तया मे छाया मे सोयं मे चक्खू मे घाणं मे जिब्भा मे फासा मे ममाइज्जइ, वयाउ पडिजूरइ। तं जहा-आउओ बलाओ वण्णाओ तयाओ छायाओ सोयाओ जाव फासाओ। सुसंधिओ संधी विसंधीभवइ, वलियतरंगे गाए भवइ, किण्हा केसा पलिया भवन्ति। तं जहा-जं पि य इमं सरीरगं उरालं आहारोवइयं एयं पि य अणुपुव्वेणं विप्पजहियव्वं भविस्सइ। एयं संखाए से भिक्खू भिक्खायरियाए समुट्ठिए दुहओ लोगं जाणेज्जा, तं जहा-जीवा चेव अजीवा चेव, तसा चेव थावरा चेव॥ १३॥ ६४८॥ इह खलु गारत्था सारम्भा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारम्भा सपरिग्गहा, जे इमे तसा थावरा पाणा ते सयं समारभन्ति अन्नेण वि समारम्भावेंति अन्नं पि समारभंतं समणुजाणन्ति। इह खलु गारत्था सारम्भा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि सारम्भा सपरिग्गहा, जे इमे कामभोगा सचित्ता वा अचित्ता वा ते सयं परिगिण्हन्ति अन्नेण वि परिगिण्हावेन्ति अन्नं पि परिगिण्हंतं समणुजाणंति। इह खलु गारत्था सारम्भा सपरिग्गहा, संतेगइया समणा माहणा वि

सारम्भा सपरिग्गहा, अहं खलु अणारम्भे अपरिग्गहे, जे खलु गारत्था सारम्भा सपरिग्गहा, सतेगइया समणा माहणा वि सारम्भा सपरिग्गहा, एएसिं चेव निस्साए बम्भचेरवास वसिस्सामो। कस्स ण तं हेउ ? जहा पुव्व तहा अवर जहा अवर तहा पुव्व, अञ्जू एए अणुवरया अणुवट्ठिया पुणरवि तारिसगा चेव। जे खलु गारत्था सारम्भा सपरिग्गहा, सतेगइया समणा माहणा वि सारम्भा सपरिग्गहा, दुहओ पावाइ कुव्वति इति सखाए दोहि वि अतेहिं अदिस्समाणो इति भिक्खू रीएज्जा। से बेमि पाईण वा ६ जाव एव से परिन्नायकम्मे, एव से ववेयकम्मे, एवं से विअतकारए भवइ त्ति-मक्खाय ॥ १४ ॥ ६४९ ॥ तत्थ खलु भगवया छज्जीवनिकायहेऊ पन्नत्ता। त जहा-पुढवीकाए जाव तसकाए। से जहानामए-मम असाय दण्डेण वा मुट्ठीण वा लेलूण वा कवालेण वा आउट्टिज्जमाणस्स वा हम्ममाणस्स वा तज्जिज्जमाणस्स वा ताडिज्जमाणस्स वा परियाविज्जमाणस्स वा किलामिज्जमाणस्स वा उद्दविज्जमाणस्स वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारग दुक्ख भय पडिसवेदेमि, इच्चेव जाण सव्वे जीवा सव्वे भूया सव्वे पाणा सव्वे सत्ता दण्डेण वा जाव कवालेण वा आउट्टिज्जमाणा वा हम्ममाणा वा तज्जिज्जमाणा वा ताडिज्जमाणा वा परियाविज्जमाणा वा किलामिज्जमाणा वा उद्दविज्जमाणा वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकारग दुक्ख भय पडिसवेदेति। एवं नच्चा सव्वे पाणा जाव सत्ता न हतव्वा न अज्जावेयव्वा न परिघेयव्वा न परितावेयव्वा न उद्दवेयव्वा। से बेमि जे य अईया जे य पडुप्पन्ना जे य आगमिस्सा अरिहता भगवता सव्वे ते एवमाइक्खंति एव भासति एवं पन्नवेंति एव परूवेंति सव्वे पाणा जाव सत्ता न हतव्वा न परिघेयव्वा न अज्जावेयव्वा न परितावेयव्वा न उद्दवेयव्वा। एस धम्मे धुवे नीइए सासए समिच्च लोग खेयन्नेहिं पवेइए। एव से भिक्खू विरए पाणाइवायाओ जाव विरए परिग्गहाओ नो दंतपक्खालणेण दते पक्खालेज्जा नो अञ्जण नो वमण नो धूवणे नो तं परिआविएज्जा॥ से भिक्खू अकिरिए अलूसए अकोहे अमाणे अमाए अलोहे उवसते परिनिव्वुडे नो आसस पुरओ करेज्जा इमेण मे दिट्ठेण वा सुएण वा मएण वा विन्नाएण वा इमेण वा सुचरियतवनियमबम्भचेरवासेण इमेण वा जायामायावुत्तिएण धम्मेण इओ चुए पेच्चा देवे सिया कामभोगाण वसवत्ती सिद्धे वा अदुक्खमसुभे एत्थ वि सिया एत्थ वि नो सिया। से भिक्खू सद्देहिं अमुच्छिए रूवेहिं अमुच्छिए गधेहिं अमुच्छिए रसेहिं अमुच्छिए फासेहि अमुच्छिए विरए कोहाओ माणाओ मायाओ लोभाओ पेज्जाओ दोसाओ कलहाओ अब्भक्खाणाओ पेसुन्नाओ परपरिवायाओ

अरइरईओ मायामोसाओ मिच्छादंसणसल्लाओ इति से महओ आयाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरए से भिक्खू। जे इमे तसथावरा पाणा भवंति ते नो सयं समारम्भइ नो अन्नेहिं समारम्भावेइ अन्ने समारम्भंते वि न समणुजाणइ इति से महओ आयाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरए से भिक्खू जे इमे कामभोगा सचित्ता वा अचित्ता वा ते णो सयं परिगिण्हंति णो अण्णेण परिगिण्हावेंति अन्नं परिगिण्हंतंपि न समणुजाणंति इति से महओ आयाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरओ से भिक्खू। जं पि य इमं संपराइयं कम्मं किज्जइ, नो तं सयं करेइ नो अण्णेणं कारवेइ अन्नं पि करेंतं न समणुजाणइ, इति से महओ आयाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरए। से भिक्खू जाणेज्जा असणं वा ४ अस्सिं पडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारम्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छिज्जं अनिसट्ठं अभिहडं आहट्टुद्देसियं तं चेइयं सिया तं नो सयं भुंजइ नो अन्नेणं भुंजावेइ अन्नं पि भुंजंतं न समणुजाणइ, इति से महओ आयाणाओ उवसंते उवट्ठिए पडिविरए से भिक्खू, अह पुण एवं जाणेज्जा तं विज्जइ तेसिं परक्कमे। (जस्सट्ठा ते चेइयं सिया तंजहा अप्पणो पुत्ताईणट्ठाए जाव आएसाए पुढो पहेणाए सामासाए पायरासाए सन्निहिसंनिचओ किज्जइ इह एएसिं माणवाणं भोयणाए) तत्थ भिक्खू परकडं परनिट्ठियमुग्गमुप्पायणेसणासुद्धं सत्थाईयं सत्थपरिणामियं अविहिंसियं एसियं वेसियं सामुदाणियं पत्तमसणं कारणट्ठा पमाणजुत्तं अक्खोवंजणवणलेवणभूयं संजमजायामायावत्तियं बिलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं आहारं आहारेज्जा अन्नं अन्नकाले पाणं पाणकाले वत्थं वत्थकाले लेणं लेणकाले सयणं सयणकाले। से भिक्खू मायन्ने अन्नयरं दिसं अणुदिसं वा पडिवन्ने धम्मं आइक्खे विभए किट्टे उवट्ठिएसु वा अणुवट्ठिएसु वा सुस्सूसमाणेसु पवेयए, संतिविरइं उवसमं निव्वाणं सोयवियं अज्जवियं मद्दवियं लाघवियं अणइवाइयं सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं जाव सत्ताणं अणुवाइ किट्टए धम्मं। से भिक्खू धम्मं किट्टमाणे नो अन्नस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा, नो पाणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा, नो वत्थस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा, नो लेणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा, नो सयणस्स हेउं धम्ममाइक्खेज्जा, नो अन्नेसिं विरूवरूवाणं कामभोगाणं हेउं धम्ममाइक्खेज्जा, अगिलाए धम्ममाइक्खेज्जा, नन्नत्थ कम्मनिज्जरट्ठाए धम्ममाइक्खेज्जा। इह खलु तस्स भिक्खुस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म उट्ठाणेणं उट्ठाय वीरा अस्सिं धम्मे समुट्ठिया। जे तस्स भिक्खुस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म सम्मं उट्ठाणेणं उट्ठाय वीरा अस्सिं धम्मे समुट्ठिया ते एवं सव्वोवगया ते एवं सव्वोवरया ते एवं सव्वोवसंता ते एवं सव्वत्ताए परिनिव्वुडे त्ति बेमि। एवं

से भिक्खू धम्मट्ठी धम्मविऊ नियागपडिवन्ने से जहेय वुइय अदुवा पत्ते पउमवर-पोण्डरीय अदुवा अपत्ते पउमवरपोण्डरीय, एव से भिक्खू परिन्नायकम्मे परिन्नाय सगे परिन्नायगेहवासे उवसते समिए सहिए सयाजए। सेय वयणिज्जे तं जहा—समणे त्ति वा माहणे त्ति वा खते त्ति वा दते त्ति वा गुत्ते त्ति वा मुत्ते त्ति वा इसि त्ति वा मुणि त्ति वा कइ त्ति वा विउ त्ति वा भिक्खु त्ति वा लूहे त्ति वा तीरट्ठि त्ति वा चरणकरणपारविउ त्ति बेमि ॥ १५ ॥ ६५० ॥ **पोण्डरियज्झयणं पढमं समत्तं** ॥

किरियाठाणज्झयणे बिइये

सुय मे आउस! तेण भगवया एवमक्खाय। इह खलु किरियाठाणे नामज्झयणे पन्नत्ते, तस्स ण अयमट्ठे। इह खलु सजूहेण दुवे ठाणे एवमाहिज्जति। त जहा। धम्मे चेव अधम्मे चेव उवसते चेव अणुवसते चेव। तत्थ णं जे से पढमस्स ठाणस्स अहम्मपक्खस्स विभङ्गे तस्स ण अयमट्ठे पन्नत्ते। इह खलु पाईण वा ६ सतेगइया मणुस्सा भवति। त जहा—आरिया वेगे अणारिया वेगे उच्चागोया वेगे नीयागोया वेगे कायमता वेगे हस्समता वेगे सुवण्णा वेगे दुव्वण्णा वेगे सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे। तेसिं च ण इम एयारूव दण्डसमादाणं सपेहाए। तं जहा—नेरइ-एसु वा तिरिक्खजोणिएसु वा मणुस्सेसु वा देवेसु वा जे यावन्ने तहप्पगारा पाणा विन्नू वेयण वेयति॥ तेसिं पि य ण इमाइ तेरस किरियाठाणाइ भवतीतिमक्खाय। त जहा—अट्ठादण्डे १, अणट्ठादण्डे २, हिसादण्डे ३, अकम्हादण्डे ४, दिट्ठिविपरि-यासियादण्डे ५, मोसवत्तिए ६, अदिन्नादाणवत्तिए ७, अज्झत्थवत्तिए ८, माणवत्तिए ९, मित्तदोसवत्तिए १०, मायावत्तिए ११, लोभवत्तिए १२, इरियावहिए १३ ॥१॥६५१॥ पढमे दण्डसमादाणे अट्ठादण्डवत्तिए त्ति आहिज्जइ। से जहानामए—केइ पुरिसे आयहेउ वा नाइहेउ वा अगारहेउ वा परिवारहेउ वा मित्तहेउ वा नागहेउ वा भूयहेउ वा जक्खहेउ वा त दण्ड तसथावरेहिं पाणेहिं सयमेव निसिरइ अन्नेण वि निसिरावेइ अन्न पि निसिरत समणुयाणइ, एव खलु तस्स तप्पत्तिय सावज्ज ति आहिज्जइ। पढमे दण्डसमादाणे अट्ठादण्डवत्तिए त्ति आहिए ॥ २ ॥ ६५२ ॥ अहावरे दोच्चे दण्डसमादाणे अणट्ठादण्डवत्तिए त्ति आहिज्जइ। से जहानामए—केइ पुरिसे जे इमे तसा पाणा भवति ते नो अच्चाए नो अजिणाए नो मसाए नो सोणियाए एव हिययाए पित्ताए वसाए पिच्छाए पुच्छाए वालाए सिंगाए विसाणाए

सावज्जं आहिज्जइ। चउत्थे दण्डसमादाणे अकम्हादण्डवत्तिए आहिए ॥५॥६५५॥ अहावरे पञ्चमे दण्डसमादाणे दिट्ठिविपरियासियादण्डवत्तिए त्ति आहिज्जइ। से जहानामए-केइ पुरिसे माईहिं वा पिईहिं वा भाईहिं वा भगिणीहिं वा भज्जाहिं वा पुत्तेहिं वा धूयाहिं वा सुण्हाहि वा सद्धिं सवसमाणे मित्त अमित्तमेव मन्नमाणे मित्ते हयपुव्वे भवइ दिट्ठिविपरियासियादण्डे। से जहानामए-केइ पुरिसे गामघायंसि वा नगरघायंसि वा खेडघायंसि कव्वडघायंसि मडबघायंसि वा दोणमुहघायंसि वा पट्टणघायंसि वा आसमघायंसि वा सन्निवेसघायंसि वा निग्गमघायंसि वा रायहाणि-घायंसि वा अतेण तेणमिति मन्नमाणे अतेणे हयपुव्वे भवइ दिट्ठिविपरियासियादण्डे। एव खलु तस्स तप्पत्तिय सावज्ज ति आहिज्जइ। पञ्चमे दण्डसमादाणे दिट्ठिविपरि-यासियादण्डवत्तिए त्ति आहिए॥ ६ ॥ ६५६ ॥ अहावरे छट्ठे किरियट्ठाणे मोसावत्तिए त्ति आहिज्जइ । से जहानामए-केइ पुरिसे आयहेउ वा नाइहेउ वा अगारहेउ वा परिवारहेउ वा सयमेव मुस वयइ अण्णेण वि मुस वाएइ मुस वयन्त पि अन्न समणु-जाणइ, एव खलु तस्स तप्पत्तिय सावज्ज ति आहिज्जइ। छट्ठे किरियट्ठाणे मोसावत्तिए त्ति आहिए ॥७॥६५७॥ अहावरे सत्तमे किरियट्ठाणे अदिन्नादाणवत्तिए त्ति आहिज्जइ। से जहानामए-केइ पुरिसे आयहेउ वा जाव परिवारहेउ वा सयमेव अदिन्न आदियइ अन्नेण वि अदिन्नं आदियावेइ अदिन्न आदियन्त अन्न समणुजाणइ, एव खलु तस्स तप्पत्तिय सावज्ज ति आहिज्जइ। सत्तमे किरियट्ठाणे अदिन्नादाणवत्तिए त्ति आहिए ॥८॥६५८॥ अहावरे अट्ठमे किरियट्ठाणे अज्झत्थवत्तिए त्ति आहिज्जइ। से जहानामए-केइ पुरिसे नत्थि ण केइ किंचि विसवादेइ सयमेव हीणे दीणे दुट्ठे दुम्मणे ओहयमण-सकप्पे चिन्तासोगसागरसपविट्ठे करयलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठिए झियाइ, तस्स ण अज्झत्थया आससइया चत्तारि ठाणा एवमाहिज्जन्ति। त जहा-कोहे माणे माया लोहे। अज्झत्थमेव कोहमाणमायालोहे। एव खलु तस्स तप्प-त्तिय सावज्ज ति आहिज्जइ। अट्ठमे किरियट्ठाणे अज्झत्थवत्तिए त्ति आहिए ॥९॥६५९॥ अहावरे नवमे किरियट्ठाणे माणवत्तिए त्ति आहिज्जइ। से जहानामए-केइ पुरिसे जाइमएण वा कुलमएण वा बलमएण वा रूवमएण वा तवमएण वा सुयमएण वा लाभमएण वा इस्सरियमएण वा पन्नामएण वा अन्नयरेण वा मयट्ठाणेण मत्ते समाणे पर हीलेइ निन्देइ खिंसइ गरहइ परिभवइ अवमन्नेइ, इत्तरिए अय, अहमसि पुण विसिट्ठजाइकुलबलाइगुणोववेए। एव अप्पाण समुक्कस्से, देहचुए कम्मबिइए अवसे पयाइ। त जहा-गब्भाओ गब्भ ४ जम्माओ जम्म माराओ मार नरगाओ नरग चण्डे थद्धे चवले माणी यावि भवइ। एव खलु तस्स तप्पत्तिय सावज्जं

अज्झोववन्ना जाव वासाइं चउपञ्चमाइ छद्दसमाइ अप्पयरो वा भुज्जयरो वा भुञ्जित्तु भोगभोगाइ कालमासे काल किच्चा अन्नयरेसु आसुरिएसु किब्बिसिएसु ठाणेसु उववत्तारो भवन्ति । तओ विप्पमुच्चमाणे भुज्जो भुज्जो एलमूयत्ताए तमूयत्ताए जाइमूयत्ताए पच्चायन्ति । एव खलु तस्स तप्पत्तिय सावज्ज ति आहिज्जइ । दुवालसमे किरियट्ठाणे लोभवत्तिए त्ति आहिए । इच्चेयाइ दुवालस किरियट्ठाणाइं दविएण समणेण वा माहणेण वा सम्म सुपरिजाणियव्वाइ भवन्ति ॥ १३ ॥ ६६३ ॥ अहावरे तेरसमे किरियट्ठाणे इरियावहिए त्ति आहिज्जइ । इह खलु अत्तत्ताए सवुडस्स अणगारस्स इरियासमियस्स भासासमियस्स एसणासमियस्स आयाणभण्डमत्तनिक्खेवणासमियस्स उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमियस्स मणसमियस्स वयसमियस्स कायसमियस्स मणगुत्तस्स वयगुत्तस्स कायगुत्तस्स गुत्तिन्दियस्स गुत्तबम्भयारिस्स आउत्त चिट्ठमाणस्स आउत्त निसीयमाणस्स आउत्त तुयट्टमाणस्स आउत्त भुञ्जमाणस्स आउत्त गच्छमाणस्स आउत्त भासमाणस्स आउत्त वत्थं पडिग्गह कम्बल पायपुञ्छणं गिण्हमाणस्स वा निक्खिवमाणस्स वा जाव चक्खुपम्हनिवायमवि अत्थि विमाया सुहुमा किरिया इरियावहिया नाम कज्जइ । सा पढमसमए बद्धा पुट्ठा बिईयसमए वेइया तइयसमए निज्जिण्णा सा बद्धा पुट्ठा उदीरिया वेइया निज्जिण्णा सेयकाले अकम्मे यावि भवइ । एव खलु तस्स तप्पत्तियं सावज्ज ति आहिज्जइ, तेरसमे किरियट्ठाणे इरियावहिए त्ति आहिज्जइ । से बेमि जे य अईया जे य पडुप्पन्ना जे य आगमिस्सा अरिहन्ता भगवन्ता सव्वे ते एयाइ चेव तेरस किरियट्ठाणाइ भासिंसु वा भासेन्ति वा भासिस्सन्ति वा पन्नविंसु वा पन्नवेन्ति वा पन्नविस्सन्ति वा, एव चेव तेरसम किरियट्ठाण सेविंसु वा सेवन्ति वा सेविस्सन्ति वा ॥ १४ ॥ ६६४ ॥ अदुत्तर च ण पुरिसविजय विभङ्गमाइक्खिस्सामि । इह खलु नाणापन्नाण नाणाछन्दाण नाणासीलाण नाणादिट्ठीण नाणारुईण नाणारम्भाणं नाणाज्झवसाणसजुत्ताण नाणाविहपावसुयज्झयण एव भवइ । त जहा–भोम उप्पायं सुविण अन्तलिक्ख अङ्ग सर लक्खण वञ्जण इत्थिलक्खण पुरिसलक्खण हयलक्खणं गयलक्खण गोणलक्खण मेण्ढलक्खण कुक्कुडलक्खण तित्तिरलक्खण वट्टगलक्खण लावयलक्खण चक्कलक्खण छत्तलक्खणं चम्मलक्खण दण्डलक्खण असिलक्खण मणिलक्खण कागिणिलक्खण सुभगाकर दुब्भगाकर गब्भाकर मोहणकर आहव्वणिं पागसासणिं दव्वहोमं खत्तियविज्ज चन्दचरिय सूरचरियं सुक्कचरियं बहस्सइचरिय उक्कापाय दिसादाह मियचक्क वायसपरिमण्डल पसुवुट्ठिं केसवुट्ठिं मसवुट्ठिं रुहिरवुट्ठिं वेयालिं अद्धवेयालिं ओसोवणिं तालुग्घाडणिं सोवागिं सोवारिं दामिलिं कालिङ्गिं

गोरिं गन्धारिं ओवयणिं उप्पयणिं जम्भणिं थम्भणिं लेसणिं आमयकरणिं विसल्लकरणिं पक्कमणिं अन्तद्धाणिं आयमिणिं, एवमाइयाओ विज्जाओ अन्नस्स हेउ पउञ्जन्ति पाणस्स हेउ पउञ्जन्ति वत्थस्स हेउ पउञ्जन्ति लेणस्स हेउ पउञ्जन्ति सयणस्स हेउं पउञ्जन्ति, अन्नेसिं वा विरूवरूवाण कामभोगाण हेउं पउंजंति। तिरिच्छं ते विज्जं सेवन्ति, ते अणारिया विप्पडिवन्ना कालमासे काल किच्चा अन्नयराइं आसुरियाइं किब्बिसयाइं ठाणाइं उववत्तारो भवन्ति। तओ वि विप्पमुच्चमाणा भुज्जो एलमूययाए तमअन्धयाए पच्चायन्ति ॥ १५ ॥ ६६५ ॥ से एगइओ आयहेउं वा नायहेउं वा सयणहेउं वा अगारहेउं वा परिवारहेउं वा नायगं वा सहवासियं वा निस्साए अदुवा अणुगामिए १ अदुवा उवचरए २ अदुवा पडिपहिए ३ अदुवा संधिच्छेयए ४ अदुवा गण्ठिच्छेयए ५ अदुवा उरब्भिए ६ अदुवा सोवरिए ७ अदुवा वागुरिए ८ अदुवा साउणिए ९ अदुवा मच्छिए १० अदुवा गोघायए ११ अदुवा गोवालए १२ अदुवा सोवणिए १३ अदुवा सोवणियंतिए १४। एगइओ आणुगामियभावं पडिसंधाय तमेव अणुगामियाणुगामियं हन्ता छेत्ता भेत्ता लुम्पइत्ता विलुम्पइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ, इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवइ। से एगइओ उवचरयभावं पडिसंधाय तमेव उवचरियं हन्ता छेत्ता भेत्ता लुम्पइत्ता विलुम्पइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ। इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवइ। से एगइओ पाडिपहियभावं पडिसंधाय तमेव पडिपहे ठिच्चा हन्ता छेत्ता भेत्ता लुम्पइत्ता विलुम्पइत्ता उद्दवइत्ता आहारं आहारेइ, इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवइ। से एगइओ संधिच्छेदगभावं पडिसंधाय तमेव संधिं छेत्ता भेत्ता जाव इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवइ। से एगइओ गण्ठिच्छेदगभावं पडिसंधाय तमेव गण्ठिं छेत्ता भेत्ता जाव इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवइ। से एगइओ उरब्भियभावं पडिसंधाय उरब्भं वा अन्नयरं वा तसं पाणं हन्ता जाव उवक्खाइत्ता भवइ। (एसो अभिलावो सव्वत्थ) से एगइओ सोयरियभावं पडिसंधाय महिसं वा अन्नयरं वा तसं पाणं हन्ता जाव उवक्खाइत्ता भवइ। से एगइओ वागुरियभावं पडिसंधाय मियं वा अन्नयरं वा तसं पाणं हन्ता जाव उवक्खाइत्ता भवइ। से एगइओ सउणियभावं पडिसंधाय सउणिं वा अन्नयरं वा तसं पाणं हन्ता जाव उवक्खाइत्ता भवइ। से एगइओ मच्छियभावं पडिसंधाय मच्छं वा अन्नयरं वा तसं पाणं हन्ता जाव उवक्खाइत्ता भवइ। से एगइओ गोघायभावं पडिसंधाय तमेव गोणं वा अन्नयरं वा तसं पाणं हन्ता जाव उवक्खाइत्ता भवइ। से एगइओ

गोवालभाव पडिसधाय तमेव गोवाल वा परिजविय परिजविय हन्ता जाव उवक्खाइत्ता भवइ। से एगइओ सोवणियभावं पडिसधाय तमेव सुणगं वा अन्नयर वा तस पाण हन्ता जाव उवक्खाइत्ता भवइ। से एगइओ सोवणियन्तियभाव पडिसधाय तमेव मणुस्स वा अन्नयर वा तस पाणं हन्ता जाव आहार आहारेइ इति से महया पावेहिं कम्मेहिं अत्ताण उवक्खाइत्ता भवइ ॥ १६ ॥ ६६६ ॥ से एगइओ परिसामज्झाओ उट्ठित्ता अहमेय हणामि त्ति कट्टु तित्तिर वा वट्टगं वा लावग वा कवोयग वा कविञ्जलं वा अन्नयर वा तस वा पाण हन्ता जाव उवक्खाइत्ता भवइ। से एगइओ केणइ आयाणेगं विरुद्धे समाणे अदुवा खलदाणेण अदुवा सुरायालएण गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा सयमेव अगणिकाएण सस्साइ झामेइ अन्नेण वि अगणिकाएग सस्साईं झामावेइ अगणिकाएणं सस्साइ झामन्तं पि अन्नं समणुजाणइ, इति से महया पावकम्मेहिं अत्ताण उवक्खाइत्ता भवइ। से एगइओ केणइ आयाणेग विरुद्धे समाणे अदुवा खलदाणेग अदुवा सुराथालएण गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टाण वा गोणाण वा घोडगाण वा गद्दभाण वा सयमेव घूराओ कप्पेइ अन्नेण वि कप्पावेइ कप्पन्तं पि अन्न समणुजाणइ, इति से महया जाव भवइ। से एगइओ केणइ आयाणेगं विरुद्धे समाणे अदुवा खलदाणेण अदुवा सुराथालएण गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टसालाओ वा गोणसालाओ वा घोडगसालाओ वा गद्दभसालाओ वा कण्टकबोंदियाए पडिपेहित्ता सयमेव अगणिकाएण झामेइ अन्नेण वि झामावेइ झामन्त पि अन्न समणुजाणइ, इति से महया जाव भवइ। से एगइओ केणइ आयाणेण विरुद्धे समाणे अदुवा खलदाणेण अदुवा सुराथालएणं गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा कुण्डल वा मणिं वा मोत्तिय वा सयमेव अवहरइ अन्नेण वि अवहरावेइ अवहरन्त पि अन्न समणुजाणइ इति से महया जाव भवइ ॥ से एगइओ केणइ वि आयाणेग विरुद्धे समाणे अदुवा खलदाणेग अदुवा सुराथालएणं समणाण वा माहणाण वा छत्तग वा दण्डग वा भण्डग वा मत्तग वा लट्ठिं वा भिसिग वा चेलग वा चिलिमिलिग वा चम्मय वा छेयणग वा चम्मकोसिय वा सयमेव अवहरइ जाव समणुजाणइ, इति से महया जाव उवक्खाइत्ता भवइ ॥ से एगइओ नो वितिगिन्छइ। त जहा–गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा सयमेव अगणिकाएण ओसहीओ झामेइ जाव अन्न पि झामन्त समणुजाणइ, इति से महया जाव उवक्खाइत्ता भवइ। से एगइओ नो वितिगिन्छइ, त जहा–गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टाण वा गोणाण वा घोडगाण वा गद्दभाण वा सयमेव घूराओ कप्पेइ अन्नेण वि कप्पावेइ अन्न पि कप्पन्त समणुजाणइ। से एगइओ

नो वितिगिच्छइ, त जहा-गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा उट्टसालाओ वा जाव गद्दभसालाओ वा कण्टकबोंदियाहिं पडिपेहित्ता सयमेव अगणिकाएण झामेइ जाव समणुजाणइ। से एगइओ नो वितिगिच्छइ, त जहा-गाहावईण वा गाहावइपुत्ताण वा जाव मोत्तियं वा सयमेव अवहरइ जाव समणुजाणइ। से एगइओ नो वितिगिच्छइ त जहा-समणाण वा माहणाण वा छत्तग वा दण्डग वा जाव चम्मछेदणग वा सयमेव अवहरइ जाव समणुजाणइ। इति से महया जाव उवक्खाइत्ता भवइ। से एगइओ समण वा माहण वा दिस्सा नाणाविहेहिं पावकम्मेहिं अत्ताण उवक्खाइत्ता भवइ, अदुवा ण अच्छराए आफालित्ता भवइ, अदुवा ण फरुस वदित्ता भवइ, कालेण वि से अणुपविट्ठस्स असण वा पाण वा जाव नो दवावेत्ता भवइ, जे इमे भवन्ति वोणमन्ता भारक्कन्ता अलसगा वसलगा किवणगा समणगा निउज्झमा वणगा पव्वयन्ति ते इणमेव जीविय धिज्जीविय सपडिवूहेन्ति, नाइ ते परलोगस्स अट्ठाए किंचि वि सिलीसन्ति, ते दुक्खन्ति ते सोयन्ति ते जूरन्ति ते तिप्पन्ति ते पिट्टन्ति ते परितप्पन्ति ते दुक्खणजूरणसोयणतिप्पणपिट्टणपरितिप्पणवहबन्धणपरिकिलेसाओ अप्पडिविरया भवन्ति। ते महया आरम्भेण ते महया समारम्भेण ते महया आरम्भसमारम्भेण विरूवरूवेहिं पावकम्मकिच्चेहिं उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुञ्जित्तारो भवन्ति। त जहा-अन्न अन्नकाले पाण पाणकाले वत्थ वत्थकाले लेण लेणकाले सयण सयणकाले सपुव्वावर च ण ण्हाए कण्ठेमालकडे आविद्धमणिसुवण्णे कप्पियमालामउली पडिबद्धसरीरे वग्घारियसोणिसुत्तगमल्लदामकलावे अहयवत्थपरिहिए चन्दणोक्खित्तगायसरीरे महइमहालियाए कूडागारसालाए महइमहालयसि सीहासणसि इत्थीगुम्मसपरिवुडे सव्वराइएण जोइणा झियायमाणेण महयाहयनट्टगीयवाइयतन्तीतलतालतुडियघणमुइगपडुप्पवाइयरवेण उरालाइ माणुस्सगाइ भोगभोगाइ भुञ्जमाणे विहरइ। तस्स ण एगमवि आणवेमाणस्स जाव चत्तारि पञ्च जणा अवुत्ता चेव अब्भुट्ठन्ति। भणह देवाणुप्पिया किं करेमो? किं आहरेमो? किं उवणेमो? किं आचिट्ठामो? किं भे हिय इच्छिय? किं भे आसगस्स सयइ? तमेव पासित्ता अणारिया एव वयन्ति-देवे खलु अय पुरिसे, देवसिणाए खलु अय पुरिसे, देवजीवणिज्जे खलु अय पुरिसे, अन्ने वि य ण उवजीवन्ति। तमेव पासित्ता आरिया वयन्ति-अभिक्कन्तकूरकम्मे खलु अय पुरिसे अइधुए अइयायरक्खे दाहिणगामिए नेरइए कण्हपक्खिए आगमिस्साण दुल्लहबोहियाए यावि भविस्सइ। इच्चेयस्स ठाणस्स उट्ठिया वेगे अभिगिज्झन्ति अणुट्ठिया वेगे अभिगिज्झन्ति अभिझझाउरो अभि-

गिज्झन्ति। एस ठाणे अणारिए अकेवले अप्पडिपुण्णे अणेयाउए असंसुद्धे असल्लगत्तणे असिद्धिमग्गे अमुत्तिमग्गे अनिव्वाणमग्गे अनिज्जाणमग्गे असव्वदुक्खपहीणमग्गे एगन्तमिच्छे असाहु। एस खलु पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभङ्गे एवमाहिए ॥१७॥६६७॥ अहावरे दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभङ्गे एवमाहिज्जइ। इह खलु पाईणं वा पडीणं वा उदीणं वा दाहिणं वा सन्तेगइया मणुस्सा भवन्ति। तं जहा–आरिया वेगे अणारिया वेगे उच्चागोया वेगे नीयागोया वेगे कायमन्ता वेगे हस्समन्ता वेगे सुवण्णा वेगे दुवण्णा वेगे सुरूवा वेगे दुरूवा वेगे। तेसिं च णं खेत्तवत्थूणि परिग्गहियाइं भवन्ति, एसो आलावगो जहा पोण्डरीए तहा नेयव्वो, तेणेव अभिलावेण जाव सव्वोवसन्ता सव्वत्ताए परिनिव्वुडे त्ति बेमि॥ एस ठाणे आरिए केवले जाव सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे एगन्तसम्मे साहु। दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभङ्गे एवमाहिए ॥१८॥६६८॥ अहावरे तच्चस्स ठाणस्स मिस्सगस्स विभङ्गे एवमाहिज्जइ। जे इमे भवन्ति आरण्णिया आवसहिया गामणियन्तिया कण्हुइरहस्सिया जाव ते तओ विप्पमुच्चमाणा भुज्जो एलमूयाए तमूयत्ताए पच्चायन्ति। एस ठाणे अणारिए अकेवले जाव असव्वदुक्खपहीणमग्गे एगन्तमिच्छे असाहू। एस खलु तच्चस्स ठाणस्स मिस्सगस्स विभङ्गे एवमाहिए ॥ १९ ॥ ६६९ ॥ अहावरे पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभङ्गे एवमाहिज्जइ। इह खलु पाईणं वा ४ सन्तेगइया मणुस्सा भवन्ति–गिहत्था महिच्छा महारम्भा महापरिग्गहा अधम्मिया अधम्माणुया अधम्मिट्ठा अधम्मक्खाई अधम्मपायजीविणो अधम्मपलोई अधम्मपलज्जणा अधम्मसीलसमुदायारा अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरन्ति। हण छिन्द भिन्द विगत्तगा लोहियपाणी चण्डा रुद्दा खुद्दा साहस्सिया उक्कुञ्चणवञ्चणमायानियडिकूडकवडसाइसपओगबहुला दुस्सीला दुव्वया दुप्पडियाणन्दा असाहू सव्वाओ पाणाइवायाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए जाव सव्वाओ परिग्गहाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ कोहाओ जाव मिच्छादंसणसल्लाओ अप्पडिविरया, सव्वाओ ण्हाणुम्मद्दणवण्णगन्धविलेवणसद्दफरिसरसरूवगन्धमल्लालंकाराओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ सगडरहजाणजुग्गगिल्लिथिल्लिसियासंदमाणियासयणासणजाणवाहणभोगभोयणपवित्थरविहीओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ कयविक्कयमासद्धमासरूवगसंववहाराओ अप्पडिविरया, जावज्जीवाए, सव्वाओ हिरण्णसुवण्णधणधन्नमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ कूडतुलकूडमाणाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ आरम्भसमारम्भाओ अप्पडिविरया जावज्जीवाए सव्वाओ करणकारावणाओ अप्पडिविरया

काल किच्चा धरणियलमइवइत्ता अहे नरगयलपइट्ठाणे भवइ ॥ २० ॥ ६७० ॥ ते णं नरगा अन्तो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसठाणसठिया निच्चन्धकारतमसा ववगयगहचन्दसूरनक्खत्तजोइसप्पहा मेदवसामसरुहिरपूयपडलचिक्खिल्ललित्ता-णुलेवणयला असुई वीसा परमदुब्भिगन्धा कण्हा अगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरएसु वेयणाओ ॥ नो चेव नरएसु नेरइया निद्दायन्ति वा पयलायन्ति वा सुइं वा रइं वा धिइं वा मइं वा उवलभन्ते । ते णं तत्थ उज्जलं विउलं पगाढं कडुयं कक्कसं चण्डं दुक्खं दुग्गं तिव्वं दुरहियासं नेरइया वेयणं पच्चणुभवमाणा विहरन्ति ॥ २१ ॥ ६७१ ॥ से जहानामए रुक्खे सिया पव्वयग्गे जाए मूले छिन्ने अग्गे गरुए जओ निण्णं जओ विसमं जओ दुग्गं तओ पवडइ, एवामेव तहप्पगारे पुरिसजाए गब्भाओ गब्भं जम्माओ जम्मं माराओ मारं नरगाओ नरगं दुक्खाओ दुक्खं दाहिणगामिए नेरइए कण्हपक्खिए आग-मिस्साणं दुल्लहबोहिए यावि भवइ । एस ठाणे अणारिए अकेवले जाव असव्वदुक्ख-पहीणमग्गे एगन्तमिच्छे असाहू । पढमस्स ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभङ्गे एव-माहिए ॥ २२ ॥ ६७२ ॥ अहावरे दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभङ्गे एव-माहिज्जइ । इह खलु पाईणं वा ४ सन्तेगइया मणुस्सा भवन्ति । तं जहा–अणारम्भा अपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुगा धम्मिट्ठा जाव धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरन्ति, सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणन्दा सुसाहू सव्वाओ पाणाइवायाओ पडि-विरया जावज्जीवाए जाव जे यावन्ने तहप्पगारा सावज्जा अबोहिया कम्मन्ता परपाणपरियावणकरा कज्जन्ति तओ वि पडिविरया जावज्जीवाए ॥ से जहानामए– अणगारा भगवन्तो इरियासमिया भासासमिया एसणासमिया आयाणभण्डमत्त-निक्खेवणसमिया उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपरिट्ठावणियासमिया मणसमिया वय-समिया कायसमिया मणगुत्ता वयगुत्ता कायगुत्ता गुत्ता गुत्तिन्दिया गुत्तबम्भयारी अकोहा अमाणा अमाया अलोभा सन्ता पसन्ता उवसन्ता परिनिव्वुडा अणासवा अग्गन्था छिन्नसोया निरुवलेवा कंसपाई व्व मुक्कतोया सङ्खो इव निरञ्जणा जीव इव अपडिहयगई गगणतलं पिव निरालम्बणा वाउरिव अपडिबद्धा सारदसलिलं व सुद्धहियया पुक्खरपत्तं व निरुवलेवा कुम्मो इव गुत्तिन्दिया विहग इव विप्पमुक्का खग्गिविसाणं व एगजाया भारुण्डपक्खी व अप्पमत्ता कुञ्जरो इव सोण्डीरा वसभो इव जायत्थामा सीहो इव दुद्धरिसा मन्दरो इव अप्पकम्पा सागरो इव गम्भीरा चन्दो इव सोमलेसा सूरो इव दित्ततेया जच्चकञ्चणगं व जायरूवा वसुंधरा इव सव्वफासविसहा सुहुयहुयासणो विय तेयसा जलन्ता । नत्थि णं तेसिं भगवन्ताणं

पवरमल्लाणुलेवणधरा भासुरबोंदी पलम्बवणमालाधरा दिव्वेणं रूवेणं दिव्वेणं वण्णेण दिव्वेण गन्धेण दिव्वेणं फासेण दिव्वेणं सघाएणं दिव्वेण सठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चाए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा गइकल्लाणा ठिइकल्लाणा आगमेसिभद्दया यावि भवन्ति। एस ठाणे आरिए जाव सव्वदुक्खपहीणमग्गे एगन्तसम्मे सुसाहू। दोच्चस्स ठाणस्स धम्मपक्खस्स विभङ्गे एवमाहिए ॥ २३ ॥ ६७३ ॥ अहावरे तच्चस्स ठाणस्स मीसगस्सविभङ्गे एवमाहिज्जइ। इह खलु पाईण वा ४ सन्तेगइया मणुस्सा भवन्ति। त जहा–अप्पिच्छा अप्पारम्भा अप्पपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया जाव धम्मेणं चेव वित्तिं कप्पेमाणा विहरन्ति सुसीला सुव्वया सुप्पडियाणन्दा साहू एगच्चाओ पाणाइवायाओ पडिविरया जावजीवाए एगच्चाओ अप्पडिविरया जाव जे यावन्ने तहप्पगारा सावज्जा अबोहिया कम्मन्ता परपाणपरितावणकरा कज्जन्ति तओ वि एगच्चाओ अप्पडिविरया। से जहानामए समणोवासगा भवन्ति अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा आसवसवरवेयणानिज्जराकिरियाहिगरणबन्धमोक्खकुसला असहेज्जदेवासुरनागसुवण्णजक्खरक्खसकिनरकिंपुरिसगरुलगन्धव्वमहोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गन्थाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जा, इणमेव निग्गन्थे पावयणे निस्सकिया निक्कखिया निव्विइगिच्छा लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा अट्ठिमिञ्जपेम्माणुरागरत्ता। अयमाउसो निग्गन्थे पावयणे अट्ठे अय परमट्ठे सेसे अणट्ठे उसियफलिहा अवगुयदुवाराअचियत्तन्तेउरपरघरपवेसा चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णिमासिणीसु पडिपुण्ण पोसह सम्म अणुपालेमाणा समणे निग्गन्थे फासुएसणिज्जेण असणपाणखाइमसाइमेण वत्थपडिग्गहकम्बलपायपुञ्छणेण ओसहभेसज्जेण पीठफलगसेज्जासन्थारएण पडिलाभेमाणा बहूहिं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणा विहरन्ति ॥ ते ण एयारूवेण विहारेण विहरमाणा बहूइ वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणति पाउणित्ता आबाहसि उप्पण्णसि वा, अणुप्पण्णसि वा बहूइ भत्ताइ अणसणाए पच्चक्खाएन्ति बहूइ भत्ताइ अणसणाए पच्चक्खाएत्ता बहूइ भत्ताइ अणसणाए छेदेन्ति बहूइ भत्ताइ अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिक्कता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति, तजहा–महड्ढिएसु महज्जुइएसु जाव महासोक्खेसु सेस तहेव जाव एसठ्ठाणे आयरिए जाव एगंतसम्मे साहू तच्चस्स ठाणस्स मीसगस्स विभगे एवमाहिए ॥ २४ ॥ ६७४ ॥ अविरइ पडुच्च बाले आहिज्जइ विरइं पडुच्च पडिए आहिज्जइ विरयाविरइ पडुच्च बालपडिए आहिज्जइ, तत्थण

जा णा गच्छओ जरिए एगट्ठाणे आरंभट्ठाणे आगमिए जाव अणगाडुक्खपहीणमग्गे एगंतमिच्छे असाहु, तच्चं जा णा गच्छओ विरए एगट्ठाणे अणारंभट्ठाणे आरिए जाव सव्वदुक्खपहीणमग्गे एगंतसम्मे साहु, तत्थ जा णा गच्छओ विरयाविरए एगट्ठाणे आरंभणोआरंभट्ठाणे एगट्ठाणे आरिए जाव सव्वदुक्खपहीणमग्गे एगंतसम्मे साहु ॥ २५ ॥ ६७५ ॥ एवमेव समणुगम्ममाणा इमेहिं चेव दोहिं ठाणेहिं समोयरंति, तंजहा-धम्मे चेव अधम्मे चेव, उवसंते चेव अणुवसंते चेव, तत्थ णं जे से पढमट्ठाणस्स अधम्मपक्खस्स विभंगे एवमाहिए तत्थ णं इमाइं तिण्णि तेवट्ठाइं पावादुयसयाइं भवंतीति मक्खायाइं, तंजहा-किरियावाईणं अकिरियावाईणं अण्णाणियवाईणं वेणइयवाईणं तेवि परिनिव्वाणमाहंसु तेवि पमोक्खमाहंसु तेवि लवंति सावगा तेवि लवंति सावइत्तारो ॥ २६ ॥ ६७६ ॥ ते सव्वे पावाउया आइगरा धम्माणं णाणापन्ना णाणाछंदा णाणासीला णाणादिट्ठी णाणारुई णाणारंभा णाणाज्झवसाणसंजुत्ता एगं महं मंडलिबंधं किच्चा सव्वे एगओ चिट्ठंति ॥ २७ ॥ ६७७ ॥ पुरिसे य सागणियाणं इंगालाणं पाइं बहुपडिपुण्णं अओमएणं संडासएणं गहाय ते सव्वे पावाउए आइगरे धम्माणं णाणापन्ने जाव णाणाज्झवसाणसंजुत्ते एवं वयासी-हंभो पावाउया आइगरा धम्माणं णाणापन्ना जाव णाणाज्झवसाणसंजुत्ता इमं ताव तुब्भे सागणियाणं इंगालाणं पाइं बहुपडिपुण्णं गहाय मुहुत्तयं २ पाणिणा धरेह णो बहुसंडासगं संसारियं कुज्जा, णो बहुअग्गिथंभणियं कुज्जा णो बहु साहम्मियवेयावडियं कुज्जा णो बहु परधम्मियवेयावडियं कुज्जा, उज्जुया णियागपडिवण्णा अमायं कुव्वमाणा पाणिं पसारेह इति वुच्चा से पुरिसे तेसिं पावाउयाणं तं सागणियाणं इंगालाणं पाइं बहुपडिपुण्णं अओमएणं संडासएणं गहाय पाणिंसि णिसिरति, तए णं ते पावाउया आइगरा धम्माणं णाणापन्ना जाव णाणाज्झवसाणसंजुत्ता पाणिं पडिसाहरंति तए णं से पुरिसे ते सव्वे पावाउए आइगरे धम्माणं जाव णाणाज्झवसाणसंजुत्ते एवं वयासी-हंभो पावाउया आइगरा धम्माणं णाणापन्ना जाव णाणाज्झवसाणसंजुत्ता कम्हा णं तुब्भे पाणिं पडिसाहरह पाणिं णो डहिज्जा, दड्ढे किं भविस्सइ? दुक्खं, दुक्खं ति मन्नमाणा पडिसाहरह एस तुला एस पमाणे एस समोसरणे पत्तेयं तुला पत्तेयं पमाणे पत्तेयं समोसरणे तत्थ णं जे ते समणा माहणा एवमाइक्खंति, जाव परूवेंति सव्वे पाणा जाव सत्ता हंतव्वा अज्जावेयव्वा परिघेतव्वा परितावेयव्वा किलामेयव्वा उद्दवेयव्वा ते आगंतु छेयाए ते आगंतु भेयाए जाव ते आगंतु जाइजरामरणजोणिजम्मणसंसारपुणब्भवगब्भवासभवपवंचकलंकलीभागिणो भविस्संति, ते बहूणं दंडणाणं बहूणं मुंडणाणं तज्जणाणं तालणाणं अदुबंधणाणं जाव घोलणाणं माइमरणाणं पिइमरणाणं

भाइमरणाण भगिणीमरणाणं भज्जापुत्तधूयासुण्हामरणाण दारिद्दाणं दोहग्गाण अप्पिय-सवासाण पियविप्पओगाण बहूण दुक्खदोमणस्साण आभागिणो भविस्सति अणादियं च ण अणवयग्गं दीहमद्ध चाउरतससारकतार भुज्जो भुज्जो अणुपरियट्टिस्सति ते णो सिज्झिस्सति णो बुज्झिस्सति जाव णो सव्वदुक्खाणमंतं करिस्सति एस तुला एस पमाणे एस समोसरणे पत्तेय तुला पत्तेयं पमाणे पत्तेयं समोसरणे। तत्थ ण जे ते समणा माहणा एवमाइक्खन्ति जाव परूवेन्ति। सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता न हन्तव्वा न अज्जावेयव्वा न परिघेयव्वा न उद्दवेयव्वा ते नो आगन्तुच्छेयाए ते नो आगन्तुभेयाए जाव जाइजरामरणजोणिजम्मणससारपुणब्भवगब्भवासभवपवचकलकलीभागिणो भविस्सन्ति, जाव अणाइय च ण अणवयग्ग दीहमद्ध चाउरन्तससारकन्तार भुज्जो भुज्जो नो अणुपरियट्टिस्सन्ति, ते सिज्झिस्सन्ति जाव सव्वदुक्खाणं अन्त करिस्सन्ति ॥ २८ ॥ ६७८ ॥ इच्चेएहिं बारसहिं किरिया-ठाणेहिं वट्टमाणा जीवा नो सिज्झिसु नो बुज्झिसु नो मुच्चिंसु नो परिणिव्वाइसु जाव नो सव्वदुक्खाण अन्त करेंसु वा नो करेन्ति वा नो करिस्सन्ति वा। एयसि चेव तेरसमे किरियाठाणे वट्टमाणा जीवा सिज्झिसु बुज्झिसु मुच्चिंसु परिणिव्वाइसु जाव सव्वदुक्खाणं अत करेंसु वा करति वा करिस्सति वा। एव से भिक्खू आयट्ठी आय-हिए आयगुत्ते आयजोगे आयपरक्कमे आयरक्खिए आयाणुकम्पए आयणिप्फेडए आयाणमेव पडिसाहरेज्जासि त्ति बेमि **किरियाट्ठाणज्झयणं विइयं** ॥२९॥६७९॥

आहारपरिन्नज्झयणे तइये

सुय मे आउस! तेणं भगवया एवमक्खायं। इह खलु आहारपरिन्ना नामज्झयणे तस्स ण अयमट्ठे। इह खलु पाईण वा ४ सव्वओ सव्वावति च ण लोगसि चत्तारि बीयकाया एवमाहिज्जति। त जहा—अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधबीया। तेसिं च णं अहाबीएण अहावगासेण इहेगइया सत्ता पुढवीजोणिया पुढवीसभवा पुढवी-वुक्कमा तज्जोणिया तस्सभवा तदुवक्कमा कम्मोवगा कम्मनियाणेण तत्थवुक्कमा नाणा-विहजोणियासु पुढवीसु रुक्खत्ताए विउट्टति ॥ ते जीवा तेसिं नाणाविहजोणियाण पुढवीण सिणेहमाहारेंति। ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीर आउसरीर तेउसरीर वाउसरीर वणस्सइसरीर। नाणाविहाणं तसथावराणं पाणाण सरीर अचित्त कुव्वति परिविद्धत्थ। त सरीर पुव्वाहारिय तयाहारिय विपरिणय सारूवियकडं सत। अवरे वि य ण तेसिं पुढविजोणियाण रुक्खाण सरीरा नाणावण्णा नाणागंधा नाणारसा

॥ ५ ॥ ६८४ ॥ अहावर पुरक्खाय इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसभवा जाव कम्मनियाणेण तत्थ वुक्कमा रुक्खजोणिएसु अज्झारोहेसु अज्झारोहत्ताए विउट्टति ते जीवा तेसिं रुक्खजोणियाण अज्झारोहाण सिणेहमाहारेंति ते जीवा आहारेंति पुढवीसरीर जाव सारूवियकड सत अवरेवि य ण तेसिं अज्झारोहजोणियाण अज्झारोहाण सरीरा णाणावण्णा जावमक्खाय ॥ ६ ॥ ६८५ ॥ अहावर पुरक्खाय इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसभवा जाव कम्मनियाणेण तत्थ वुक्कमा अज्झारोहजोणिएसु अज्झारोहत्ताए विउट्टति ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाण अज्झारोहाण सिणेहमाहारेंति ते जीवा आहारेंति-पुढविसरीर आउसरीर जाव सारूवियकड- सत अवरेवि य ण तेसिं अज्झारोहजोणियाण अज्झारोहाण सरीरा णाणावण्णा जावमक्खाय ॥ ७ ॥ ६८६ ॥ अहावर पुरक्खाय इहेगइया सत्ता अज्झारोहजोणिया अज्झारोहसभवा जाव कम्मनियाणेण तत्थवुक्कमा अज्झारोहजोणिएसु अज्झारोहेसु मूलत्ताए जाव बीयत्ताए विउट्टंति ते जीवा तेसिं अज्झारोहजोणियाण अज्झारोहाण सिणेहमाहारेति जाव अवरेवि य णं तेसिं अज्झारोहजोणियाण मूलाण जाव बीयाण सरीरा णाणावण्णा जावमक्खाय ॥ ८ ॥ ६८७ ॥ अहावर पुरक्खाय इहेगइया सत्ता पुढविजोणिया पुढविसभवा जाव णाणाविहजोणियासु पुढवीसु तणत्ताए विउट्टति ते जीवा तेसिं णाणाविहजोणियाण पुढवीण सिणेहमाहारेंति जाव ते जीवा कम्मोववन्ना भवति त्ति मक्खाय-एव पुढविजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टति जाव मक्खाय-एव तणजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टति तणजोणिय तणसरीर च आहारेंति, जावमक्खाय-एव तणजोणिएसु तणेसु मूलत्ताए जाव बीयत्ताए विउट्टति ते जीवा जाव एवमक्खाय-एव ओसहीण वि चत्तारि आलावगा-एव हरियाणवि चत्तारि आलावगा-॥ ९-१० ॥ ६८८-६८९ ॥ अहावर पुरक्खाय इहेगइया सत्ता पुढवीजोणिया पुढविसभवा जाव कम्मनियाणेण तत्थवुक्कमा नाणाविहजोणियासु पुढवीसु आयत्ताए वायत्ताए कायत्ताए कूहणत्ताए कन्दुकत्ताए उव्वेहणियत्ताए निव्वेहणियत्ताए सछत्ताए छत्तगत्ताए वासाणियत्ताए कूरत्ताए विउट्टन्ति । ते जीवा तेसिं नाणाविहजोणियाण पुढवीण सिणेहमाहारेन्ति । ते वि जीवा आहारेन्ति पुढविसरीर जाव सन्त । अवरे वि य ण तेसिं पुढविजोणियाण आयत्ताण जाव कूराण सरीरा नाणावण्णा जाव मक्खाय । एगो चेव आलावगो सेसा तिण्णि नत्थि । अहावर पुरक्खाय इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसभवा जाव कम्मनियाणेण तत्थवुक्कमा नाणाविहजोणिएसु उदएसु रुक्खत्ताए विउट्टन्ति । ते जीवा तेसिं नाणाविहजोणियाण

उदगाणं सिणेहमाहारेन्ति । ते जीवा आहारेन्ति पुढविसरीरं जाव सन्तं । अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं रुक्खाणं सरीरा नाणावण्णा जाव मक्खायं । जहा पुढविजोणियाणं रुक्खाणं चत्तारि गमा अज्झारुहाण वि तहेव, तणाणं ओसहीणं हरियाणं चत्तारि आलावगा भाणियव्वा एक्केक्के, अहावरं पुरक्खायं इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसम्भवा जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा नाणाविहजोणिएसु उदएसु उदगत्ताए अवगत्ताए पणगत्ताए सेवालत्ताए कलम्बुगत्ताए हडत्ताए कसेरुगत्ताए कच्छभाणियत्ताए उप्पलत्ताए पउमत्ताए कुमुयत्ताए नलिणत्ताए सुभगत्ताए सोगन्धियत्ताए पोण्डरीयमहापोण्डरीयत्ताए सयपत्तत्ताए सहस्सपत्तत्ताए एवं कल्हारकोकणयत्ताए अरविन्दत्ताए तामरसत्ताए भिसभिसमुणालपुक्खलत्ताए पुक्खलच्छिभगत्ताए विउट्टन्ति । ते जीवा तेसिं नाणाविहजोणियाणं उदगाणं सिणेहमाहारेन्ति । ते जीवा आहारेन्ति पुढवीसरीरं जाव सन्तं । अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाणं उदगाणं जाव पुक्खलच्छिभगाणं सरीरा नाणावण्णा जाव मक्खायं । एगो चेव आलावगो ॥ ११ ॥ ६९० ॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगइया सत्ता तेसिं चेव पुढवीजोणिएहिं रुक्खेहिं रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं रुक्खजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं, रुक्खजोणिएहिं अज्झारोहेहिं अज्झारोहजोणिएहिं अज्झारोहेहिं अज्झारोहजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं, पुढविजोणिएहिं तणेहिं तणजोणिएहिं तणेहिं तणजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं । एवं ओसहीहि वि तिण्णि आलावगा एवं हरिएहि वि तिण्णि आलावगा । पुढविजोणिएहि वि आएहिं काएहिं जाव कूरेहिं उदगजोणिएहिं रुक्खेहिं रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं रुक्खजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं एवं अज्झारोहेहि वि तिण्णि । तणेहिं पि तिण्णि आलावगा । ओसहीहिं पि तिण्णि, हरिएहिं पि तिण्णि, उदगजोणिएहिं, उदएहिं अवएहिं जाव पुक्खलच्छिभएहिं तसपाणत्ताए विउट्टन्ति ॥ ते जीवा तेसिं पुढवीजोणियाणं उदगजोणियाणं रुक्खजोणियाणं अज्झारोहजोणियाणं तणजोणियाणं ओसहीजोणियाणं हरियजोणियाणं रुक्खाणं अज्झारोहाणं तणाणं ओसहीणं हरियाणं मूलाणं जाव बीयाणं आयाणं कायाणं जाव कुरवाणं [कूराणं] उदगाणं अवगाणं जाव पुक्खलच्छिभगाणं सिणेहमाहारेन्ति । ते जीवा आहारेन्ति पुढवीसरीरं जाव सन्तं । अवरे वि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं अज्झारोहजोणियाणं तणजोणियाणं ओसहिजोणियाणं हरियजोणियाणं मूलजोणियाणं कन्दजोणियाणं जाव बीयजोणियाणं आयजोणियाणं कायजोणियाणं जाव कूरजोणियाणं उदगजोणियाणं अवगजोणियाणं जाव पुक्खलच्छिभगजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा नाणावण्णा जाव मक्खायं ॥ १२ ॥ ६९१ ॥ अहावरं पुरक्खायं नाणाविहाणं मणुस्साणं । तं जहा—कम्मभूम-

गाण अकम्मभूमगाण अन्तरदीवगाण आरियाण मिलक्खुयाण । तेसिं च ण अहा-बीएगं अहावगासेण इत्थीए पुरिसस्स य कम्मकडाए जोणिए एत्य ण मेहुणवत्तियाए (व) नाम सजोगे समुप्पज्जइ । ते दुहओ वि सिणेह सचिणन्ति। तत्थ ण जीवा इत्थि-त्ताए पुरिसत्ताए नपुसगत्ताए विउट्टन्ति, ते जीवा माओउय पिउसुक्कं त तदुभय ससट्ठ कलुस किब्बिस तं पढमत्ताए आहारमाहारेंति तओ पच्छा ज से माया णाणाविहाओ रसविहीओ आहारमाहारेंति तओ एगदेसेण ओयमाहारेंति अणुपुव्वेण वुड्ढा पलिपाग-मणुपवन्ना तओ कायाओ अभिनिवट्टमाणा इत्थि वेगया जणयति पुरिस वेगया जण-यति, णपुसग वेगया जणयति, ते जीवा डहरा समाणा माउक्खीर सप्पिं आहारेंति आणुपुव्वेगं वुड्ढा ओयण कुम्मास तसथावरे य पाणे ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर जाव सारूवियकड सतं अवरेवि य ण तेसिं णाणाविहाण मणुस्सगाण कम्मभूमगाण अकम्मभूमगाण अतरदीवगाण आरियाण मिलक्खूण सरीरा णाणावण्णा भवंति त्ति मक्खाय ॥ ६९२ ॥ अहावर पुरक्खाय णाणाविहाणं जलचराण पचिंदियतिरिक्ख-जोणियाण, तजहा–मच्छाण जाव सुंसुमाराण तेसिं च ण अहाबीएण अहावगासेण इत्थीए पुरिसस्स य कम्मकडा तहेव जाव तओ पच्छा एगदेसेण ओयमाहारेंति आणुपुव्वेण वुड्ढा पलिपागमणुपवन्ना तओ कायाओ अभिनिवट्टमाणा अड वेगया जणयति पोय वेगया जणयति, से अडे उब्भिज्जमाणे इत्थि वेगया जणयति, पुरिस वेगया जणयति, णपुसग वेगया जणयति, ते जीवा डहरा समाणा आउसिणेहमा-हारेंति, आणुपुव्वेण वुड्ढा वणस्सइकाय तसथावरे य पाणे ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर जाव सत अवरेवि य णं तेसिं णाणाविहाण जलचरपचिंदियतिरिक्ख-जोणियाण मच्छाणं सुसुमाराण सरीरा णाणावण्णा जावमक्खाय ॥ ६९३ ॥ अहावर पुरक्खायं णाणाविहाण चउप्पयथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाण तजहा एगखुराणं दुखुराण गंडीपदाणं सणप्पयाण तेसिं च ण अहाबीएण अहावगासेण इत्थिपुरिसस्स य कम्म जाव मेहुणवत्तिए णाम सजोगे समुप्पज्जइ ते दुहओ सिणेह सचिणति तत्यण जीवा इत्थित्ताए पुरिसत्ताए जाव विउट्टति ते जीवा माउओय पिउसुक्क एव जहा माणुस्साण इत्थि वेगया जणयति पुरिसपि नपुसगपि ते जीवा डहरा समाणा माउक्खीर सप्पिं आहारेंति आणुपुव्वेग वुड्ढा वणस्सइकाय तसथावरे य पाणे ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर जाव सत अवरेवि य ण तेसिं णाणाविहाण चउप्प-यथलयरपचिंदियतिरिक्खजोणियाण एगखुराण जाव सणप्पयाण सरीरा णाणावण्णा जावमक्खाय ॥ ६९४ ॥ अहावर पुरक्खाय णाणाविहाण उरपरिसप्पथलयरपचिं-दियतिरिक्खजोणियाण तजहा–अहीण अयगराण आसालियाण महोरगाण तेसिं च

ण अहावीएण अहावगासेण इत्थीए पुरिसस्स जाव एत्थ णं मेहुणे एवं तं चेव णाणत्तं अंडं वेगइया जणयंति पोयं वेगइया जणयंति से अंडे उब्भिज्जमाणे इत्थिं वेगइया जणयंति पुरिसंपि णपुंसगंपि, ते जीवा डहरा समाणा वाउक्कायमाहारेंति आणुपुव्वेणं वुड्ढा वणस्सइकायं तसथावरपाणे ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं जाव संतं अवरेवि य णं तेसिं णाणाविहाणं उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्ख० अहीणं जाव महोरगाणं सरीरा णाणावण्णा णाणागंधा जावमक्खायं ॥ ६९५ ॥ अहावरं पुरक्खायं णाणाविहाणं भुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, तंजहा—गोहाणं नउलाणं सिहाणं सरडाणं सल्लाणं सरघाणं खराणं घरकोइलियाणं विस्सभराणं मुसगाणं मंगुसाणं पयलाइयाणं बिरालियाणं जोहाणं चउप्पाइयाणं तेसिं च णं अहावीएणं अहावगासेणं इत्थिए पुरिसस्स य जहा उरपरिसप्पाणं तहा भाणियव्वं जाव सारूविकडं संतं अवरेवि य णं तेसिं णाणाविहाणं भुयपरिसप्पपंचिंदियथलयरतिरिक्खाणं तं० गोहाणं जावमक्खायं ॥ ६९६ ॥ अहावरं पुरक्खायं णाणाविहाणं खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, तंजहा—चम्मपक्खीणं लोमपक्खीणं समुग्गपक्खीणं विततपक्खीणं तेसिं च णं अहावीएणं अहावगासेणं इत्थीए जहा उरपरिसप्पाणं णाणत्तं ते जीवा डहरा समाणा माउगात्तसिणेहमाहारेंति आणुपुव्वेणं वुड्ढा वणस्सइकायं तसथावरे य पाणे ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं जाव संतं अवरेवि य णं तेसिं णाणाविहाणं खहचरपंचिन्दियतिरिक्खजोणियाणं चम्मपक्खीणं जाव मक्खायं ॥ १३ ॥ ६९७ ॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया णाणाविहसंभवा णाणाविहवुक्कमा तज्जोणिया तस्संभवा तदुवक्कमा कम्मोवगा कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा णाणाविहाणं तसथावराणं पोग्गलाणं सरीरेसु वा सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा अणुसूयत्ताए विउट्टन्ति। ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेन्ति। ते जीवा आहारेन्ति पुढविसरीरं जाव सन्तं। अवरे वि य णं तेसिं तसथावरजोणियाणं अणुसूयगाणं सरीरा णाणावण्णा जाव मक्खायं। एवं दुरूवसंभवत्ताए। एवं खुरदुगत्ताए ॥ १४ ॥ ६९८ ॥ अहावरं पुरक्खायं इहेगइया सत्ता णाणाविहजोणिया जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा तं सरीरगं वायसंसिद्धं वा वायसंगहियं वा वायपरिग्गहियं उड्ढवाएसु उड्ढभागी भवइ, अहेवाएसु अहेभागी भवइ, तिरियवाएसु तिरियभागी भवइ। तं जहा—ओसा हिमए महिया करए हरतणुए सुद्धोदए। ते जीवा तेसिं णाणाविहाणं तसथावराणं पाणाणं सिणेहमाहारेन्ति। ते जीवा आहारेन्ति पुढविसरीरं जाव सन्तं। अवरे वि य णं तेसिं तसथावरजोणि-

यागं ओसाण जाव सुद्धोदगाण सरीरा नाणावण्णा जावमक्खाय । अहावर पुरक्खायं इहेगइया सत्ता उदगजोणिया उदगसभवा जाव कम्मनियाणेण तत्थवुक्कमा तसथावरजोणिएसु उदएसु उदगत्ताए विउट्टन्ति । ते जीवा तेसिं तसथावरजोणियाणं उदगाण सिणेहमाहारेन्ति । ते जीवा आहारेन्ति पुढविसरीर जाव सन्त । अवरे वि य ण तेसिं तसथावरजोणियाण उदगाणं सरीरा नाणावण्णा जाव मक्खाय । अहावर पुरक्खायं इहेगइया सत्ता उदगजोणियाणं जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा उदगजोणिएसु उदएसु उदगत्ताए विउट्टन्ति ते जीवा तेसिं उदगजोणियाण उदगाणं सिणेहमाहारेन्ति । ते जीवा आहारेन्ति पुढविसरीर जाव सन्त । अवरे वि य णं तेसिं उदगजोणियाण उदगाणं सरीरा नाणावण्णा जाव मक्खाय । अहावर पुरक्खाय इहेगइया सत्ता उदगजोणियाण जाव कम्मनियाणेणं तत्थवुक्कमा उदगजोणिएसु उदएसु तसपाणत्ताए विउट्टन्ति । ते जीवा तेसिं उदगजोणियाण उदगाण सिणेहमाहारेन्ति । ते जीवा आहारेन्ति पुढविसरीर जाव सन्त । अवरे वि य ण तेसिं उदगजोणियाणं तसपाणाण सरीरा नाणावण्णा जाव मक्खाय ॥ १५ ॥ ६९९ ॥ अहावर पुरक्खाय इहेगइया सत्ता नाणाविहजोणिया जाव कम्मनियाणेण तत्थवुक्कमा नाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा अगणिकायत्ताए विउट्टन्ति । ते जीवा तेसिं नाणाविहाण तसथावराण पाणाण सिणेहमाहारेन्ति । ते जीवा आहारेन्ति पुढविसरीर जाव सन्त । अवरे वि य ण तेसिं तसथावरजोणियाण अगणीण सरीरा नाणावण्णा जावमक्खाय । सेसा तिण्णि आलावगा जहा उदगाण । अहावर पुरक्खाय इहेगइया सत्ता नाणाविहजोणियाण जाव कम्मनियाणेण तत्थवुक्कमा नाणाविहाणं तसथावराण पाणाण सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा वाउक्कायत्ताए विउट्टन्ति । जहा अगणीण तहा भाणियव्वा चत्तारि गमा ॥ १६ ॥ ॥ ७०० ॥ अहावर पुरक्खाय इहेगइया सत्ता नाणाविहजोणिया जाव कम्मणियाणेण तत्थवुक्कमा नाणाविहाण तसथावराण पाणाण सरीरेसु सचित्तेसु वा अचित्तेसु वा पुढवित्ताए सक्करत्ताए वालुयत्ताए । इमाओ गाहाओ अणुगन्तव्वाओ–पुढवी य सक्करा वालुया य उवले सिला य लोणूसे । अय तउय तम्ब सीसग रुप्प सुवण्णेय वइरे य (१) हरियाले हिंगुलए, मणोसिला सासगजणपवाले, अब्भपडलब्भवालुय, बायरकाए मणिविहाणा (२) गोमेज्जए य रुयए, अके फलिहे य लोहियक्खेय, मरगयमसारगल्ले भुयमोयगइदनीले य (३) चदणगेरुयहसगब्भे, पुलए सोगधिए य बोद्धव्वे, चदप्पभवेरुलिए, जलकंते सूरकते य (४) एयाओ एएसु भाणियव्वाओ गाहाओ जाव सूरकतत्ताए विउट्टंति, ते जीवा तेसिं णाणाविहाण तसथावराण

पाणाणं सिणेहमाहारेंति, ते जीवा आहारेंति पुढविसरीर जाव सत अवरे वि य ण तेसिं तसथावरजोणियाण पुढवीण जाव सूरकताग सरीरा णाणावण्गा जावनक्खाय, सेस तिण्गि आलावगा जहा उदगाग ॥ ७०१ ॥ अहावर पुरक्खाय सव्वे पाणा सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता, णाणाविहजोणिया, णाणाविहसभवा, णाणाविहवुक्कमा, सरीरजोणिया, सरीरसभवा, सरीरवुक्कमा, सरीराहारा, कम्मोवगा, कम्मनियाणा, कम्मगईया, कम्मठिईया, कम्मणा चेव विप्परियासमुवेंति ॥ ७०२ ॥ सेएवमायाणह से एवमायाणित्ता आहारगुत्ते सहिए समिए सयाजए त्ति बेमि ॥७०३॥ **आहारपरिण्णयज्झयणं तइय ॥**

पच्चक्खाणकिरियज्झयणे चउत्थे

सुय मे आउस! तेग भगवया एवमक्खाय, इह खलु पचक्खाणकिरियाणामज्झयणे तस्सग अयमट्ठे पण्गत्ते, आया अपचक्खाणीयावि भवइ, आया अकिरिया कुसलेयावि भवइ, आया मिच्छासठिएयावि भवइ, आया एगतदडेयावि भवइ, आया एगतबालेयावि भवइ, आया एगतसुत्तेयावि भवइ, आया अवियारमणवयणकायवक्केयावि भवइ, आया अप्पडिहयअपच्चक्खायपावकम्मेयावि भवइ, एस खलु भगवया अक्खाए, असजए, अविरए, अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, सकिरिए, असवुडे, एगतदडे, एगतबाले, एगतसुत्ते से बाले, अवियारमणवयकायवक्के, सुविणमवि ण पस्सइ पावे य से कम्मे कज्जइ ॥ ७०४ ॥ तत्थ चोयए पन्नवग एव वयासी, असतएण मणेण पावएण असतियाए वईए पावियाए, असतएग काएण पावएण अहणतस्स अमणक्खस्स, अवियारमणवयकायवक्कस्स सुविणमवि अपस्सओ पावकम्मे णो कज्जइ कस्सण त हेउ चोयए एव ववीइ अन्नयरेण मणेग पावएग मणवत्तिए पावे कम्मे कज्जइ, अन्नयरीए वईए पावियाए वतिवत्तिए पावे कम्मे कज्जइ, अन्नयरेण काएग पावएग कायवत्तिए पावेकम्मे कज्जइ, हणतस्स समणक्खस्स सवियारमणवयकायवक्कस्स सुविणमवि पासओ, एव गुगजाईयस्स पावेकम्मे कज्जइ, पुणरवि चोयए, एव ववीइ तत्थण जे ते एवमाहसु असतएग मणेण पावएण असतियाए वईए पावियाए, असतएण काएण पावएग अहणतस्स अमणक्खस्स अवियारमणवयकायवक्कस्स सुविणमवि अपस्सओ पावे कम्मे कज्जइ, तत्थ ण जे ते एवमाहसु मिच्छा ते एवमाहसु ॥ ७०५ ॥ तत्थ पन्नवए चोयग एव वयासी–त सम्म ज मए पुव्व वुत्त असतएण मणेण पावएण, असतियाए वईए पावियाए, असतएण काएण पावएग, अहणतस्स अमणक्खस्स अवियारमणवयकायवक्कस्स सुविणमवि अपस्सओ

पावे कम्मे कज्जइ, त सम्म कस्स ण तं हेउं? आयरिय आह, तत्थ खलु भगवया छज्जीवणिकायहेऊ पण्णत्ता, तजहा पुढविकाइया जाव तसकाइया इच्चेएहिं छहिं जीवणिकाएहिं आया अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे, निच्चं पसढविउवातन्वित्तदंडे, तजहा-पाणाइवाए जाव परिग्गहे, कोहे जाव मिच्छादसणसल्ले ॥ ७०६ ॥ आयरिय आह तत्थ खलु भगवया वहए दिट्ठन्ते पण्णत्ते। से जहानामए-वहए सिया गाहावइस्स वा गाहावइपुत्तस्स वा रण्णो वा रायपुरिसस्स वा खणं निद्दाय पविसिस्सामि खण लद्धूण वहिस्सामि सपहारेमाणे से किं नु हु नाम से वहए तस्स गाहावइस्स वा गाहावइपुत्तस्स वा रण्णो वा रायपुरिसस्स वा खण निद्दाय पविसिस्सामि खण लद्धूण वहिस्सामि पहारेमाणे दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासठिए निच्च पसढविउवायन्वित्तदण्डे भवइ? एव वियागरेमाणे समियाए वियागरे चोयए-हंता भवइ। आयरिय आह-जहा से वहए तस्स गाहावइस्स वा तस्स गाहावइपुत्तस्स वा रण्णो वा रायपुरिसस्स वा खण निद्दाय पविसिस्सामि खण लद्धूण वहिस्सामि त्ति पहारेमाणे दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासठिए निच्च पसढविउवायन्वित्तदण्डे, एवमेव वाले वि सव्वेसिं पाणाण जाव सव्वेसिं सत्ताण दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासठिए निच्च पसढविउवायन्वित्तदण्डे। त जहा-पाणाइवाए जाव मिच्छादसणसल्ले। एव खलु भगवया अक्खाए असजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे सकिरिए असवुडे एगन्तदण्डे एगन्तवाले एगन्तसुत्ते यावि भवइ। से वाले अवियारमणवयणकायवक्के सुविणमवि न पस्सइ पावे य से कम्मे कज्जइ। जहा से वहए तस्स वा गाहावइस्स जाव तस्स वा रायपुरिसस्स पत्तेय पत्तेय चित्तसमादाए दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासठिए निच्च पसढविउवायन्वित्तदण्डे भवइ, एवमेव वाले सव्वेसिं पाणाग जाव सव्वेसिं सत्ताण पत्तेय पत्तेयं चित्तसमादाए दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासठिए निच्च पसढविउवायन्वित्तदण्डे भवइ ॥२॥७०७॥ नो इणट्ठे समट्ठे [चोयए]। इह खलु वहवे पाणा० जे इमेग सरीरसमुस्सएण नो दिट्ठा वा सुया वा नाभिमया वा विन्नाया वा जेसिं नो पत्तेय पत्तेय चित्तसमायाए दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्तभूए मिच्छासठिए निच्च पसढविउवायन्वित्तदण्डे। त जहा पाणाइवाए जाव मिच्छादसणसल्ले ॥३॥७०८॥ आयरिय आह-तत्थ खलु भगवया दुवे दिट्ठन्ता पण्णत्ता। त जहा-सन्निदिट्ठन्ते य असन्निदिट्ठन्ते य। से किं त सन्निदिट्ठन्ते? जे इमे सन्निपञ्चिन्दिया पज्जत्तगा एएसिं ण छजीवनिकाए पडुच्च, त जहा-पुढवी-

काय जाव तसकाय । से एगइओ पुढवीकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि । तस्स णं एवं भवइ-एवं खलु अहं पुढवीकाएणं किच्चं करेमि वि कारवेमि वि, नो चेव णं से एवं भवइ-इमेण वा इमेण वा से एएणं पुढवीकाएणं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि। से णं ताओ पुढवीकायाओ असंजयअविरयअप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे यावि भवइ । एवं जाव तसकाए त्ति भाणियव्वं । से एगइओ छहिं जीवनिकाएहिं किच्चं करेइ वि कारवेइ वि । तस्स णं एवं भवइ-एवं खलु छहिं जीवनिकाएहिं किच्चं करेमि वि कारवेमि वि। नो चेव णं से एवं भवइ-इमेहिं वा २, से य तेहिं छहिं जीवनिकाएहिं जाव कारवेइ वि । से य तेहिं छहिं जीवनिकाएहिं असंजयअविरयअप्पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, तं जहा-पाणाइवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले । एस खलु भगवया अक्खाए असंजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे सुविणमवि अपस्सओ । पावे य से कम्मे कज्जइ । से तं सन्निदिट्ठन्ते ॥ से किं तं असन्निदिट्ठन्ते ? जे इमे असन्निणो पाणा, तं जहा-पुढवीकाइया जाव वणस्सइकाइया छट्ठा वेगइया तसा पाणा, जेसिं नो तक्का इ वा सन्ना इ वा पन्ना इ वा मणा इ वा वई इ वा सयं वा करणाए अन्नेहिं वा कारवेत्तए करन्तं वा समणुजाणित्तए, ते वि णं बाले सव्वेसिं पाणाणं जाव सव्वेसिं सत्ताणं दिया वा राओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा अमित्त-भूया मिच्छासंठिया निच्चं पसढविउवायचित्तदंडा तं० पाणाइवाए जाव मिच्छा-दंसणसल्ले । इच्चेव जाव नो चेव मणो नो चेव वई पाणाणं जाव सत्ताणं दुक्खण-याए सोयणयाए जूरणयाए तिप्पणयाए पिट्टणयाए परितप्पणयाए । ते दुक्ख-णसोयण जाव परितप्पणवहबन्धणपरिकिलेसाओ अप्पडिविरया भवन्ति । इति खलु से असन्निणो वि सत्ता अहोनिसिं पाणाइवाए उवक्खाइज्जन्ति जाव अहोनिसिं परिग्गहे उवक्खाइज्जन्ति जाव मिच्छादंसणसल्ले उवक्खाइज्जन्ति [एवं भूयवाई] । सव्वजोणिया वि खलु सत्ता सन्निणो हुच्चा असन्निणो होन्ति असन्निणो हुच्चा सन्निणो होन्ति, होच्चा सन्नी अदुवा असन्नी, तत्थ से अविविचित्ता अविधूणित्ता असमुच्छित्ता अणणुतावित्ता असन्निकायाओ वा सन्निकाए संकमन्ति सन्निकायाओ वा असन्निकायं संकमन्ति, सन्निकायाओ वा सन्निकायं संकमन्ति असन्निकायाओ वा असन्निकायं संकमन्ति । जे एए सन्नि वा असन्नि वा सव्वे ते मिच्छायारा निच्चं पसढविउवाय-चित्तदण्डा । तं जहा-पाणाइवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले । एवं खलु भगवया अ-क्खाए असंजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे सकिरिए असंवुडे एगन्तदण्डे एगन्तबाले एगन्तसुत्ते से बाले अवियारमणवयणकायवक्के सुविणमवि न पासइ पावे य से कम्मे कज्जइ ॥ ४ ॥ ७०९ ॥ चोयए-से किं कुव्वं किं कारवं कहं संजयविर-

यप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे भवइ? आयरिय आह–तत्थ खलु भगवया छज्जीव-निकायहेऊ पन्नत्ता, तं जहा–पुढवीकाइया जाव तसकाइया। से जहानामए मम अस्सायं दण्डेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलूण वा कवालेण वा आतोडिज्जमाणस्स वा जाव उवद्दविज्जमाणस्स वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकार दुक्ख भय पडिसवेदेमि, इच्चेव जाण सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता दण्डेण वा जाव कवालेण वा आतोडिज्जमाणे वा हम्ममाणे वा तज्जिज्जमाणे वा तालिज्जमाणे जाव उवद्दविज्जमाणे वा जाव लोमुक्खणणमायमवि हिंसाकार दुक्ख भय पडिसवेदेन्ति। एव नच्चा सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता न हन्तव्वा जाव न उद्दवेयव्वा। एस धम्मे धुवे निइए सासए समिच्च लोगं खेयन्नेहिं पवेइए। एव से भिक्खू विरए पाणाइवायाओ जाव मिच्छा-दसणसल्लाओ। से भिक्खू नो दन्तपक्खालणेणं दन्ते पक्खालेज्जा, नो अञ्जण नो वमण नो धूवणित्त पि आइए। से भिक्खू अकिरिए अलूसए अकोहे जाव अलोभे उवसन्ते परिनिव्वुडे। एस खलु भगवया अक्खाए सजयविरयपडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे अकिरिए सवुडे एगन्तपण्डिए भवइ त्ति बेमि ॥ ५ ॥ ७१० ॥ **पच्च-क्खाणकिरियज्झयणं चउत्थं ॥**

आयारसुयज्झयणे पञ्चमे

आदाय बम्भचेर च आसुपन्ने इम वइ। अस्सिं धम्मे अणायार नायरेज्ज कयाइ वि ॥ १ ॥ ७११ ॥ अणाईय परिन्नाय अणवदग्गे त्ति वा पुणो। सासयमसासए वा इइ दिट्ठिं न धारए ॥ २ ॥ ७१२ ॥ एएहिं दोहि ठाणेहिं ववहारो न विज्जई। एएहिं दोहि ठाणेहिं अणायार तु जाणए ॥ ३ ॥ ७१३ ॥ समुच्छिहिन्ति सत्थारो सव्वे पाणा अणेलिसा। गण्ठिगा वा भविस्सन्ति सासय ति व नो वए ॥ ४ ॥ ॥ ७१४ ॥ एएहिं दोहि ठाणेहिं ववहारो न विज्जई। एएहिं दोहि ठाणेहिं अणायार तु जाणए ॥ ५ ॥ ७१५ ॥ जे केइ खुद्दगा पाणा अदुवा सन्ति महालया। सरिस तेहि वेर ति असरिस ति य नो वए ॥ ६ ॥ ७१६ ॥ एएहिं दोहि ठाणेहिं ववहारो न विज्जई। एएहिं दोहि ठाणेहिं अणायार तु जाणए ॥ ७ ॥ ७१७ ॥ अहाकम्माणि भुञ्जन्ति, अन्नमन्ने सकम्मुणा। उवलित्ते त्ति जाणिज्जा अणुवलित्ते त्ति वा पुणो ॥ ८ ॥ ७१८ ॥ एएहिं दोहि ठाणेहिं ववहारो न विज्जई। एएहिं दोहि ठाणेहिं अणायार तु जाणए ॥ ९ ॥ ७१९ ॥ जमिद ओरालमाहार कम्मग च तहेव य। सव्वत्थ वीरिय अत्थि नत्थि सव्वत्थ वीरिय ॥ १० ॥ ७२० ॥ एएहिं दोहि ठाणेहिं ववहारो न विज्जई। एएहिं दोहि ठाणेहिं अणायार तु जाणए ॥ ११ ॥ ७२१ ॥

अद्दइज्जज्झयणे छट्ठे

पुराकडं अद्द इमं सुणेह मेगन्तयारी समणे पुरासी । से भिक्खुणो उवणेत्ता अणेगे आइक्खएण्हिं पुढो वित्थरेण ॥ १ ॥ ७४४ ॥ साऽऽजीविया पट्ठवियाऽथिरेण सभागओ गणओ भिक्खुमज्झे । आइक्खमाणो बहुजन्नमत्थ न संधयाई अवरेण पुव्वं ॥ २ ॥ ७४५ ॥ एगन्तमेवं अदुवा वि एण्हिं दोऽवन्नमन्नं न समेइ जम्हा । पुव्विं च एण्हिं च अणागयं वा एगन्तमेव पडिसंधयाइ ॥ ३ ॥ ७४६ ॥ समिच्च लोगं तसथावराणं खेमंकरे समणे माहणे वा । आइक्खमाणो वि सहस्समज्झे एगन्तयं सारयई तहच्चे ॥ ४ ॥ ७४७ ॥ धम्मं कहन्तस्स उ नत्थि दोसो खन्तस्स दन्तस्स जिइन्दियस्स । भासाय दोसे य विवज्जगस्स गुणे य भासाय निसेवगस्स ॥ ५ ॥ ७४८ ॥ महव्वए पञ्च अणुव्वए य तहेव पञ्चासव संवरे य । विरइं इह स्सामणियम्मि पण्णे लवावसक्की समणे त्ति बेमि ॥ ६ ॥ ७४९ ॥ सीओदगं सेवउ बीयकायं आहायकम्मं तह इत्थियाओ । एगन्तचारिस्सिह अम्ह धम्मे तवस्सिणो नाभिसमेइ पावं ॥ ७ ॥ ७५० ॥ सीओदगं वा तह बीयकायं आहायकम्मं तह इत्थियाओ । एयाइ जाण पडिसेवमाणा अगारिणो अस्समणा भवन्ति ॥ ८ ॥ ॥ ७५१ ॥ सिया य बीयोदगइत्थियाओ पडिसेवमाणा समणा भवन्तु । अगारिणो वि समणा भवन्तु सेवन्ति ऊ ते पि तहप्पगारं ॥ ९ ॥ ७५२ ॥ जे यावि बीयोदगभोइ भिक्खू भिक्खं विहं जायइ जीवियट्ठी । ते नाइसंजोगमविप्पहाय कायोवगा नन्तकरा भवन्ति ॥ १० ॥ ७५३ ॥ इमं वयं तु तुम पाउकुव्वं पावाइणो गरिहसि सव्व एव । पावाइणो पुढो किट्टयन्ता सयं सयं दिट्ठि करेन्ति पाउ ॥ ११ ॥ ॥ ७५४ ॥ ते अन्नमन्नस्स उ गरहमाणा अक्खन्ति भो समणा माहणा य । सओ य अत्थी असओ य नत्थि गरहामु दिट्ठिं न गरहामु किंचि ॥ १२ ॥ ७५५ ॥ न किंचि रूवेगऽभिधारयामो सदिट्ठिमग्गं तु करेमु पाउं । मग्गे इमे किट्टिए आरिएहिं अणुत्तरे सप्पुरिसेहिं अञ्जू ॥ १३ ॥ ७५६ ॥ उड्ढं अहे य तिरियं दिसासु तसा य जे थावर जे य पाणा । भूयाहिसंकाभिदुगुन्छमाणा नो गरहइ वुसिमं किंचि लोए ॥ १४ ॥ ७५७ ॥ आगन्तगारे आरामगारे समणे उ भीए न उवेइ वासं । दक्खा हु सन्ती बहवे मणुस्सा ऊणाइरित्ता य लवालवा य ॥ १५ ॥ ७५८ ॥ मेहाविणो सिक्खिय बुद्धिमन्ता सुत्तेहि अत्थेहि य निच्छयन्ना । पुच्छिंसु मा णे अणगार अन्ने इइ संकमाणो न उवेइ तत्थ ॥ १६ ॥ ७५९ ॥ नो कामकिच्चा न य बालकिच्चा रायाभियोगेण कुओ भएणं । वियागरेज्ज पसिणं न वा वि सकामकिच्चेणिह आरियाणं ॥ १७ ॥ ७६० ॥ गन्ता च तत्था अदुवा अगन्ता वियागरेज्जा समियासुपन्ने ।

अणारिया दंसणओ परित्ता इइ सङ्कमाणो न उवेइ तत्थ ॥ १८ ॥ ७६१ ॥ पण्णं
जहा वणिए उदयट्ठी आयस्स हेउं पगरेइ सङ्गं । तओवमे समणे **नायपुत्ते** इच्चेव
मे होइ मई वियक्का ॥ १९ ॥ ७६२ ॥ नवं न कुज्जा विहुणे पुराणं चिच्चाऽमइं ताइ
य साह एवं । एयावया बम्भवइ त्ति वुत्ता तस्सोदयट्ठी समणे त्ति बेमि ॥ २० ॥
॥ ७६३ ॥ समारभन्ते वणिया भूयगामं परिग्गहं चेव ममायमाणा । ते नाइसं-
जोगमविप्पहाय आयस्स हेउ पगरेन्ति सङ्गं ॥ २१ ॥ ७६४ ॥ वित्तेसिणो मेहुण-
संपगाढा ते भोयणट्ठा वणिया वयन्ति । वयं तु कामेसु अज्झोववन्ना अणारिया
पेमरसेसु गिद्धा ॥ २२ ॥ ७६५ ॥ आरम्भगं चेव परिग्गहं च अविउस्सिया
निस्सिय आयदण्डा । तेसिं च से उदए जं वयासी चउरन्तणन्ताय दुहाय नेह
॥ २३ ॥ ७६६ ॥ नेगन्ति नच्चन्ति य ओदए सो वयन्ति ते दो वि गुणोदयम्मि ।
से उदए साइमणन्तपत्ते तमुदयं साहयइ ताइ नाई ॥ २४ ॥ ७६७ ॥ अहिंसयं
सव्वपयाणुकम्पी धम्मे ठियं कम्मविवेगहेउं । तमायदण्डेहिं समायरन्ता अबोहिए
ते पडिरूवमेयं ॥ २५ ॥ ७६८ ॥ पिण्णागपिण्डीमवि विद्ध सूले केई पएज्जा पुरिसे
इमे त्ति । अलाउयं वा वि कुमारए त्ति स लिप्पई पाणिवहेण अम्हं ॥२६॥ ७६९ ॥
अहवा वि विद्धूण मिलक्खु सूले पिण्णागबुद्धीइ नरं पएज्जा । कुमारगं वा वि अला-
बुयं ति न लिप्पई पाणिवहेण अम्हं ॥ २७ ॥ ७७० ॥ पुरिसं च विद्धूण कुमारगं
वा सूलम्मि केई पए जायतेए । पिण्णागपिण्डं सइमारुहेत्ता बुद्धाण तं कप्पइ पारणाए
॥ २८ ॥ ७७१ ॥ सिणायगाणं तु दुवे सहस्से जे भोयए नियए भिक्खुयाणं ।
ते पुण्णखन्धं सुमहं जिणित्ता भवन्ति आरोप्प महन्तसत्ता ॥ २९ ॥ ७७२ ॥
अजोगरूवं इह संजयाणं पावं तु पाणाण पसज्झ काउं । अबोहिए दोण्ह वि तं
असाहु वयन्ति जे यावि पडिस्सुणन्ति ॥ ३० ॥ ७७३ ॥ उड्ढं अहे य तिरियं
दिसासु विन्नाय लिङ्गं तसथावराणं । भूयाभिसङ्काइ दुगुञ्छमाणे वए करेज्जा व कुओ
विहऽत्थि ॥ ३१ ॥ ७७४ ॥ पुरिसे त्ति विन्नत्ति न एवमत्थि अणारिए से पुरिसे तहा
हु । को संभवो पिण्णगपिण्डियाए वाया वि एसा बुइया असच्चा ॥ ३२ ॥ ७७५ ॥
वायाभियोगेण जमावहेज्जा नो तारिसं वायमुदाहरेज्जा । अट्ठाणमेयं वयणं गुणाणं
नो दिक्खिए बूयमुरालमेयं ॥ ३३ ॥ ७७६ ॥ लद्धे अट्ठे अहो एव तुब्भे जीवा-
णुभागे सुविचिन्तिए व । पुव्वं समुद्दं अवरं च पुट्ठे ओलोइए पाणितले ठिए वा
॥ ३४ ॥ ७७७ ॥ जीवाणुभागं सुविचिन्तयन्ता आहारिया अन्नविहीएँ सोहिं ।
न वियागरे छन्नपओपजीवी एसोऽणुधम्मो इह संजयाणं ॥ ३५ ॥ ७७८ ॥ सिणा-
यगाणं तु दुवे सहस्से जे भोयए नियए भिक्खुयाणं । असंजए लोहियपाणि से ऊ

नियच्छई गरिहमिहेव लोए ॥ ३६ ॥ ७७९ ॥ थूलं उरब्भं इह मारियाण उद्दिट्ठ-भत्त च पगप्पएत्ता । त लोणतेल्लेण उवक्खडेत्ता सपिप्पलीय पगरन्ति मस ॥३७॥ ॥ ७८० ॥ त भुञ्जमाणा पिसिय पभूय नो ओवलिप्पामु वय रएण । इच्चेवमाहसु अणज्जधम्मा अणारिया बाल रसेसु गिद्धा ॥ ३८ ॥ ७८१ ॥ जे यावि भुञ्जन्ति तहप्पगार सेवन्ति ते पावमजाणमाणा । मण न एय कुसला करेन्ति वाया वि एसा वुइया उ मिच्छा ॥ ३९ ॥ ७८२ ॥ सव्वेसि जीवाण दयट्ठयाए सावज्जदोस परिवज्जयन्ता । तस्सङ्किणो इसिणो **नायपुत्ता** उद्दिट्ठभत्त परिवज्जयन्ति ॥ ४० ॥ ॥ ७८३ ॥ भूयाभिसङ्काए दुगुञ्छमाणा सव्वेसि पाणाण निहाय दण्ड । तम्हा न भुञ्जन्ति तहप्पगार एसोऽणुधम्मो इह सजयाण ॥ ४१ ॥ ७८४ ॥ निग्गन्थधम्मम्मि इम समाहि अस्सिं सुठिच्चा अणिहे चरेज्जा । बुद्धे मुणी सीलगुणोववेए अच्चत्थय पाउणई सिलोग ॥ ४२ ॥ ७८५ ॥ सिणायगाण तु दुवे सहस्से जे भोयए नियए माहणाण । ते पुण्णखन्धे सुमहऽज्जणित्ता भवन्ति देवा इइ वेयवाओ ॥४३॥७८६॥ सिणायगाण तु दुवे सहस्से जे भोयए नियए कुलालयाण । से गच्छई लोलुवसप-गाढे तिव्वाभितावी नरगाभिसेवी ॥ ४४ ॥ ७८७ ॥ दयावर धम्म दुगुञ्छमाणा वहावह धम्म पससमाणा । एग पि जे भोययई असील निवो निस जाइ कुओऽसु-रेहि ॥ ४५ ॥ ७८८ ॥ दुहओ वि धम्मम्मि समुट्ठियामो अस्सिं सुट्ठिच्चा तह एस-काल । आयारसीले वुइएह नाणी न सपरायम्मि विसेसमत्थि ॥ ४६ ॥ ७८९ ॥ अव्वत्तरूव पुरिस महन्त सणातण अक्खयमव्वय च । सव्वेसु भूएसु वि सव्वओ से चन्दो व ताराहि समत्तरूवे ॥ ४७ ॥ ७९० ॥ एव न मिज्जन्ति न ससरन्ति न माहणा खत्तिय वेस पेसा । कीडा य पक्खी य सरीसिवा य नरा य सव्वे तह देवलोगा ॥ ४८ ॥ ७९१ ॥ लोग अयाणित्तिह केवलेण कहन्ति जे धम्ममजाण-माणा । नासन्ति अप्पाण पर च नट्ठा ससार घोरम्मि अणोरपारे ॥ ४९ ॥ ७९२ ॥ लोगं विजाणन्तिह केवलेण पुण्णेण नाणेण समाहिजुत्ता । धम्म समत्त च कहन्ति जे उ तारन्ति अप्पाण पर च तिण्णा ॥ ५० ॥ ७९३ ॥ जे गरहिय ठाणमिहाव-सन्ति जे यावि लोए चरणोववेया । उदाहड त तु सम मईए अहाउसो विप्परिया-समेव ॥ ५१ ॥ ७९४ ॥ सवच्छरेणावि य एगमेग बाणेण मारेउ महागय तु । सेसाण जीवाण दयट्ठयाए वास वय वित्ति पकप्पयामो ॥ ५२ ॥ ७९५ ॥ सवच्छ-रेणावि य एगमेग पाण हणन्ता अणियत्तदोसा । सेसाण जीवाण वहेण लग्गा सिया य थोव गिहिणो वि तम्हा ॥ ५३ ॥ ७९६ ॥ सवच्छरेणावि य एगमेग पाण हणन्ता समणव्वएसु । आयाहिए से पुरिसे अणज्जे न तारिसे केवलिणो भवन्ति

॥ ८०२ ॥ आउसो गोयमा, अत्थि खलु कुमारपुत्तिया नाम समणा निग्गन्था तुम्हाण पवयण पवयमाणा गाहावइ समणोवासग उवसपन्न एव पच्चक्खावेन्ति । नन्नत्थ अभिओएण गाहावइचोरग्गहणविमोक्खणयाए तसेहिं पाणेहि निहाय दण्ड । एव ण्ह पच्चक्खन्ताण दुप्पच्चक्खाय भवइ । एव ण्हं पच्चक्खावेमाणाण दुपच्चक्खावियव्व भवइ । एव ते पर पच्चक्खावेमाणा अइयरन्ति सय पइण्ण । कस्स ण त हेउ ? ससारिया खलु पाणा, थावरा वि पाणा तसत्ताए पच्चायन्ति, तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायन्ति, थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा तसकायसि उववज्जन्ति, तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा थावरकायसि उववज्जन्ति । तेसिं च ण थावरकायसि उववण्णाण ठाणमेयं घत्त ॥५॥८०३॥ एव ण्ह पच्चक्खन्ताण सुपच्चक्खाय भवइ । एव ण्ह पच्चक्खावेमाणाण सुपच्चक्खाविय भवइ । एव ते पर पच्चक्खावेमाणा नाइयरन्ति सय पइण्ण नन्नत्थ अभियोगेण गाहावइचोरग्गहणविमोक्खणयाए तसभूएहिं पाणेहिं निहाय दण्ड । एवमेव सइ भासाए परक्कमे विज्जमाणे जे ते कोहा वा लोहा वा पर पच्चक्खावेन्ति अय पि नो उवएसे नो नेयाउए भवइ । अवियाइ आउसो गोयमा तुब्भ पि एव रोयइ ? ॥६॥८०४॥ सवाय भगव गोयमे उदय पेढालपुत्त एव वयासी–आउसन्तो उदगा, नो खलु अम्हे एव रोयइ । जे ते समणा वा माहणा वा एवमाइक्खन्ति जाव परूवेन्ति नो खलु ते समणा वा निग्गन्था भास भासन्ति, अणुताविय खलु ते भास भासन्ति, अब्भाइक्खन्ति खलु ते समणे समणोवासए वा जेहि पि अन्नेहिं जीवेहिं पाणेहिं भूएहिं सत्तेहि सजमयन्ति ताण वि ते अब्भाइक्खन्ति । कस्स ण त हेउ ? ससारिया खलु पाणा, तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायन्ति थावरा वि वा पाणा तसत्ताए पच्चायन्ति तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा थावरकायसि उववज्जन्ति, थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा तसकायसि उववज्जन्ति, तेसिं च ण तसकायसि उववन्नाण ठाणमेयं अघत्त ॥ ७ ॥ ८०५ ॥ सवायं उदए पेढालपुत्ते भगवं गोयम एव वयासी–कयरे खलु ते आउसन्तो गोयमा तुब्भे वयह तसा पाणा तसा आउ अन्नहा ? सवाय भगव गोयमे उदय पेढालपुत्त एव वयासी–आउसन्तो उदगा जे तुब्भे वयह तसभूया पाणा तसा ते वय वयामो तसा पाणा, जे वय वयामो तसा पाणा ते तुब्भे वयह तसभूया पाणा । एए सन्ति दुवे ठाणा तुल्ला एगट्ठा । किमाउसो इमे भे सुप्पणीयतराए भवइ तसभूया पाणा तसा, इमे भे दुप्पणीयतराए भवइ–तसा पाणा तसा । तओ एगमाउसो पडिक्कोसह एक्क अभिनन्दह । अय पि भेदो से नो नेयाउए भवइ । भगव च ण उदाहु–सन्तेगइया मणुस्सा भवन्ति, तेसिं च ण एव वुत्तपुव्व भवइ–नो खलु वय सचाएमो मुण्डा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ।

गावय ण्ह अणुपुव्वेण गुत्तस्स लिसिस्सामो। ते एव सववेन्ति, ते एव सव्वं ठवयन्ति ते एव सग ठावयन्ति नन्नत्थ अभिओएग गाहावइचोरगहणविमोक्खणयाए तसेहिं पाणेहिं निहाय दण्ड । त पि तेसिं कुसलमेव भवइ ॥८॥८०६॥ तसा वि वुच्चन्ति तसा तससभारकडेण कम्मुणा नाम च णं अब्भुवगय भवइ, तसाउय च णं पलिक्खीण भवइ, तसकायट्ठिइया ते तओ आउय विप्पजहन्ति । ते तओ आउय विप्पजहित्ता थावरत्ताए पच्चायन्ति । थावरा वि वुच्चन्ति थावरा थावरसभारकडेण कम्मुणा नाम च ण अब्भुवगय भवइ थावराउय च ण पलिक्खीण भवइ। थावरकायट्ठिइया ते तओ आउय विप्पजहन्ति तओ आउय विप्पजहित्ता भुज्जो परलोइयत्ताए पच्चायन्ति। ते पाणा वि वुच्चन्ति, ते तसा वि वुच्चन्ति, ते महाकाया ते चिरट्ठिइया ॥ ९ ॥ ८०७ ॥ सवाय उदए पेढालपुत्ते भयव गोयम एव वयासी–आउसन्तो गोयमा नत्थि ण से केइ परियाए ज ण समणोवासगस्स एगपाणाइवायविरए वि दण्डे निक्खित्ते । कस्स ण त हेउ ? ससारिया खलु पाणा, थावरा वि पाणा तसत्ताए पच्चायन्ति, तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायन्ति, थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे तसकायसि उववज्जन्ति, तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे थावरकायसि उववज्जन्ति, तेसिं च ण थावरकायसि उववन्नाण ठाणमेय घत्त । सवाय भगव गोयमे उदय पेढालपुत्त एवं वयासी–नो खलु आउसो अस्माक वत्तव्वएण तुब्भ चेव अणुप्पवाएण अत्थि ण से परियाए जे ण समणोवासगस्स सव्वपाणेहिं सव्वभूएहिं सव्वजीवेहिं सव्वसत्तेहिं दण्डे निक्खित्ते भवइ । कस्स ण त हेउ ? ससारिया खलु पाणा, तसा वि पाणा थावरत्ताए पच्चायन्ति, थावरा वि पाणा तसत्ताए पच्चायन्ति, तसकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे थावरकायसि उववज्जन्ति, थावरकायाओ विप्पमुच्चमाणा सव्वे तसकायसि उववज्जन्ति, तेसिं च ण तसकायसि उववन्नाण ठाणमेय अघत्त । ते पाणा वि वुच्चन्ति, ते तसा वि वुच्चन्ति, ते महाकाया ते चिरट्ठिइया । ते वहुयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय भवइ। ते अप्पयरगा पाणा जेहिं समणोवासगस्स अपच्चक्खाय भवइ । से महया तसकायाओ उवसन्तस्स उवट्ठियस्स पडिविरयस्स ज ण तुब्भे वा अन्नो वा एव वयह–नत्थि ण से केइ परियाए जसि समणोवासगस्स एगपाणाए वि दण्डे निक्खित्ते। अय पि भेदे से नो नेयाउए भवइ ॥ १० ॥ ८०८ ॥ भगव च ण उदाहु नियण्ठा खलु पुच्छियव्वा। आउसन्तो नियण्ठा इह खलु सन्तेगइया मणुस्सा भवन्ति। तेसिं च एव वुत्तपुव्व भवइ–जे इमे मुण्डे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइए एसिं च णं आमरणन्ताए दण्डे निक्खित्ते। जे इमे अगारमावसन्ति एएसिं

ण आमरणन्ताए दण्डे नो निक्खित्ते । केई च णं समणा जाव वासाइ चउपञ्चमाइं छट्ठद्दसमाइ अप्पयरो वा भुज्जयरो वा देस दूइज्जित्ता अगारमावसेज्जा ? हता-वसेज्जा । तस्स णं त गारत्थ वहमाणस्स से पच्चक्खाणे भङ्गे भवइ ? नो इणट्ठे समट्ठे । एवमेव समणोवासगस्स वि तसेहि पाणेहि दण्डे निक्खित्ते, थावरेहिं पाणेहि दण्डे नो निक्खित्ते । तस्स णं त थावरकाय वहमाणस्स से पच्चक्खाणे नो भङ्गे भवइ । से एवमायाणह ? नियण्ठा । एवमायाणियव्व ॥ भगवं च ण उदाहु नियण्ठा खलु पुच्छियव्वा-आउसन्तो नियण्ठा इह खलु गाहावई वा गाहावइपुत्तो वा तहप्पगारेहि कुलेहिं आगम्म धम्म सवणवत्तिय उवसकमेज्जा ? हन्ता उवसकमेज्जा । तेसिं च ण तहप्पगाराण धम्म आइक्खियव्वे ? हन्ता आइक्खियव्वे । कि ते तहप्पगार धम्मं सोच्चा निसम्म एव वएज्जा इणमेव निग्गन्थ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिय पडिपुण्ण ससुद्ध नेयाउय सल्लकत्तण सिद्धिमग्ग मुत्तिमग्ग निज्जाणमग्ग निव्वाणमग्ग अवितहमसदिद्ध सव्वदुक्खप्पहीणमग्ग । एत्थ ठिया जीवा सिज्झन्ति बुज्झन्ति मुचन्ति परिणिव्वायन्ति सव्वदुक्खाणमन्त करेन्ति । तमाणाए तहा गच्छामो तहा चिट्ठामो तहा निसीयामो तहा तुयट्टामो तहा भुञ्जामो तहा भासामो तहा अब्भुट्ठामो तहा उट्ठाए उट्ठेमो त्ति पाणाणं भूयाण जीवाण सत्ताण सजमेणं सजमामो त्ति वएज्जा ? हन्ता वएज्जा । कि ते तहप्पगारा कप्पन्ति पव्वावित्तए ? हन्ता कप्पन्ति । कि ते तहप्पगारा कप्पन्ति मुण्डावित्तए ? हन्ता कप्पन्ति । कि ते तहप्पगारा कप्पन्ति सिक्खावित्तए ? हन्ता कप्पन्ति । कि ते तहप्पगारा कप्पन्ति उवट्ठावित्तए ? हन्ता कप्पन्ति । तेसिं च ण तहप्पगाराण सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि दण्डे निक्खित्ते ? हता निक्खित्ते । से णं एयारूवेण विहारेण विहरमाणा जाव वासाइ चउपञ्चमाइं छट्ठद्दसमाइ वा अप्पयरो वा भुज्जयरो वा देस दूइज्जेत्ता अगार वएज्जा ? हन्ता वएज्जा । तस्स ण सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहि दण्डे नो निक्खित्ते ? नो इणट्ठे समट्ठे । से जे से जीवे जस्स परेण सव्वपाणेहि जाव सव्वसत्तेहि दण्डे नो निक्खित्ते । से जे से जीवे जस्स आरेण सव्वपाणेहि जाव सत्तेहिं दण्डे निक्खित्ते । से जे से जीवे जस्स इयाणिं सव्वपाणेहिं जाव सत्तेहि दण्डे नो निक्खित्ते भवइ, परेण असजए आरेण सजए, इयाणिं असजए, असज-यस्स ण सव्वपाणेहि जाव सत्तेहिं दण्डे नो निक्खित्ते भवइ । से एवमायाणह ? नियण्ठा से एवमायाणियव्व ॥ भगव च णं उदाहु नियण्ठा खलु पुच्छियव्वा-आउसन्तो नियण्ठा इह खलु परिव्वाइया वा परिव्वाइयाओ वा अन्नयरेहिंतो तित्थाययणेहिंतो आगम्म धम्म सवणवत्तिय उवसकमेज्जा ? हन्ता उवसकमेज्जा ।

आमरणं

दुग्गइगा ... ...नुचंति ते तसावि वुच्चंति ते महाकाया ते
ठिइया ते वहुयरगा आयाणसो इति से महयाओ ण जण्ण तुब्भे वदह त
अयपि भेदे से णो णेयाउए भवइ-भगव च ण उदाहु सन्तेगइया मणुस्सा भव
त जहा-अणारम्भा अपरिग्गहा धम्मिया धम्माणुया जाव सव्वाओ परिग्ग
पडिविरया जावज्जीवाए, जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणन्ताए
निक्खित्ते, ते तओ आउग विप्पजहन्ति, ते तओ भुज्जो सगमायाए सोग्गइगा
भवन्ति। ते पाणा वि वुच्चन्ति जाव नो नेयाउए भवइ। भगव च ण
सन्तेगइया मणुस्सा भवन्ति ' त जहा-अप्पिच्छा अप्पारम्भा अप्पपरि
धम्मिया धम्माणुया जाव एगच्चाओ परिग्गहाओ अप्पडिविरया, जेहिं समणो
गस्स आयाणसो आमरणन्ताए दण्डे निक्खित्ते। ते तओ आउग विप्पज
तओ भुज्जो सगमादाए सोग्गइगामिणो भवन्ति। ते पाणा वि वुच्चन्ति जा
नेयाउए भवइ। भगवं च ण उदाहु सन्तेगइया मणुस्सा भवन्ति। त
आरण्णिया आवसहिया गामणियन्तिया कण्हुईरहस्सिया, जेहिं समणोवास
आयाणसो आमरणन्ताए दण्डे निक्खित्ते भवइ। नो वहुसजया नो वहुपडि
पाणभूयजीवसत्तेहिं अप्पणा सच्चामोसाइ एवं विप्पडिवेदेन्ति-अह न हन
अन्ने हन्तव्वा जाव कालमासे काल किच्चा अन्नयराइ आसुरियाइ किब्बि
जाव उववत्तारो भवन्ति, तओ विप्पमुच्चमाणा भुज्जो एलमुयत्ताए तमोरू
पच्चायन्ति। ते पाणा वि वुच्चन्ति जाव नो नेयाउए भवइ। भगवं च ण
सन्तेगइया पाणा दीहाउया जेहिं समणोवासगस्स आयाणसो आमरणन्ताए
दण्डे निक्खित्ते भवइ। ते पुव्वामेव काल करेन्ति करित्ता पारलोइयत्ताए
यन्ति। ते पाणा वि वुच्चन्ति, ते तसा वि वुच्चन्ति। ते महाकाया ते चिरा
ते दीहाउया ते वहुयरगा, पाणा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय भवइ,
नो नेयाउए भवइ। भगव च ण उदाहु सन्तेगइया पाणा समाउया, जेहिं स
वासगस्स आयाणसो आमरणन्ताए जाव दण्डे निक्खित्ते भवइ। ते सयमेव
करेन्ति, करित्ता पारलोइयत्ताए पच्चायन्ति। ते पाणा वि वुच्चन्ति, तसा वि वुच
ते महाकाया ते समाउया ते वहुयरगा जेहिं समणोवासगस्स सुपच्चक्खाय
जाव नो नेयाउए भवइ। भगव च ण उदाहु सन्तेगइया पाणा अप्पाउया,
समणोवा... ...आयाणसो आमरणन्ताए जाव दण्डे निक्खित्ते भवइ। ते पुव्व
काल क